यह कब की बात है

चौ० मालसिंह



आलोक प्रकाशन
बीकानेर

प्रकाशक
आलोक प्रकाशन
बीकानेर-334001
प्रथम संस्करण 1000
1992
मूल्य
साठ रुपये मात्र
मुद्रक
शिवरतन डावाणी
मोहन प्रिन्टिंग प्रेस
कोटगेट जोशीवाडा
बीकानेर

YEH KAB KI BAT HAI
by
Ch Mal Singh
Price Rs 60 00

समर्पित

अमरत्व को प्राप्त

प्रिय पुत्र

सज्जन

चौ० मालसिंह

चन्द्र टले सूरज टले, टले सकल व्यवहार।
पर बेटे सज्जन की टले न यादगार॥

"यह कब की बात है"

यह नाम उस पुस्तक का है जिसके लेखक चौ मालसिंह हैं। चौ मालसिंह के नाम से हिन्दी जगत अपरिचित नहीं है। इस रचना से पहले उनकी निम्नलिखित रचनाएं प्रकाशित हो चुकी है— 1 राजस्थान में पचायत राज 2 राजस्थान के पेड़ पौधे, पशु पक्षी 3 राजस्थान का पशुधन एव गावो की अव्यवस्था 4 सैक्यूलर-वाद 5 जगलपुरी का हैडमास्टर 6 लादेवाला 7 राज काज की बातें 8 जगलपुरी का हैडमास्टर (शिक्षा प्रशासन)

इन रचनाओं के नामों से ही पता चलता है कि लेखक का अध्ययन एव अध्यापन बहु आयामी रहा है। इनके विषय मे और अधिक लिखना अप्रसगिक होगा।

"यह कब की बात है" के सम्बन्ध मे भी यही कहा जा सकता है। लेखक के अध्ययन का आधार यद्यपि इतिहास है किन्तु उन्हीं के शब्दो में एक अचभे की बात "कैसे, क्यों, किसने, कौन पर किताबें

बहुत है। पर "कब" पर एक भी किताब नही है। अन इतिहास के इस महत्वपूण अग को अपने अध्ययन का आधार बना कर उन्होने तिथिशास्त्र (Chronology) की जरूरत को महसूस करके प्रस्तुत पुस्तक की रचना की है। इस दृष्टि से उन्होंने अध्यापकों विद्यार्थियों एव सामान्य जनता के लिए एक महत्वपूण विश्व कोष प्रस्तुत करने का प्रयास किया है जो प्रशसनीय है।

इस पुस्तक के लेखक चौ० मालसिंह ने विश्व इतिहास की रूपरेखा प्रस्तुत कर दी है जिसे भविष्य की पीढी रग देकर एक रम णीय चित्र का निर्माण कर सकती है। इस प्रकार यह रचना भावी भवन निर्माण के लिए नीव का पत्थर बन सकती है। इस चित्र का चितेरा होगा भावी अध्यापक, उस भवन का निर्माता होगा भविष्य का होनहार विद्यार्थी, मधावी युवक और कर्मशील मानव।

इस पुस्तक का प्रथम अध्याय 'विद्यालय की खोज म' स्वय ही चौ० मालसिंह के व्यक्तित्व का प्रारम्भिक इतिवृत्त है। एक छोटे से गाव का 8 वष का बालक तब अली मोहम्मद जसे लोक हित-कारी एव समाज सेवी जकात क थानेदार से प्रारम्भिक अक्षर ज्ञान स लेकर बीस तक की गिनती सीखने के बाद स्वय ही अपनी योग्यता म सौ तक गिनती सीख गया और नाम लिखन तथा पत्र पढने लगा तो उसकी विद्या प्राप्ति की उत्कृष्ट इच्छा का प्रमाण तो सामने आ ही गया। इसके बाद विद्यालय की खोज म यह बालक कहा-कहा भटका, क्या-क्या कष्ट झले कितनी-कितनी गम ठण्डी झेली, क्या क्या काम किये, किस किस की झिडकिया फटकारे सहे यह सब इस अध्याय को पढन पर मालूम हो जाएगा।

भूतपूव बीकानर रियासत म एक कहावत मशहूर थी "जाट और मू ज तो कूट्या ही काम दव' इस कहावत के पीछ एक व्यव-

म्या था सकेत है। वह सामन्ती व्यवस्था थी। राजपूत सामन्त था और था शोषक। इसके विपरीत जाट कृषक था, पशु पालक था। सामन्त श्रम नही करता था, कृषक पशु पालक श्रम करता था। राजपूत राजा था, जागीरदार था, श्रम से वास्ता नहीं, दौलत और ऐश आराम की कमी नही गुलछर्रे उडान से फुर्सत नही, जाट कृषक था, श्रमिक था, पशुपालन करता था और सारा जीवन ऐडी से चोटी तक का पसीना बहा कर भूखे पेट रहता था, तन ढकने को कपडा नही, रहने को घर नही, अकाल पड जाय तो और भी तबाही एक तरफ था शोषक सामन्त दूसरी तरफ था शोषित सवहारा श्रमिक। दोनो का सघर्ष होता रहता था और इसी को प्रकट करती है उपयुक्त कहावत। इस कहावत के पीछे एक सत्य था और वह था सर्वहारा का, श्रमिक का शोषक द्वारा उत्पीडन।

चौ० मालसिंह का जन्म एक जाट परिवार मे हुआ। सामन्ती उत्पीडन मे, अत्याचार से यह परिवार भी अप्रभावित न था। सर्वहारा वर्ग म जन्मे इस बालक ने जिन मुसीबतो को झेला है, जिन कठिनाइयों को सहा है जिन अभावो और दुखो को भोगा है उसकी एक झलक हम प्रस्तुत पुस्तक के प्रथम अध्याय मे मिलती है। इस अध्याय को पढने पर ऐसा लगता है कि जीवट के धनी चौ मालसिंह का दरिद्रता एव अभाव के विरुद्ध सघर्ष करके जीवन मे सफलता प्राप्त करने म गे बढने के मार्ग मे कोई बाधा बाधक बन कर नही टिक सकी। सतत परिश्रम, ध्येय के प्रति आस्था, विद्या के हेतु अनवरत रुचि एव लगन उनके जीवन के प्रकाश स्तम रहे हैं और 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' को उन्होने अपने प्रखर, सक्रिय जीवन म मूर्तिमान कर दिखाया ह।

मैं उस कर्मनिष्ठ का आदर करता हू जो अपना सारा जीवन

एक तपस्वी की भांति व्यतीत करता है जो समाज के लिए जीता और समाज के लिए ही मरता है। उसने समाज से जो पाया उसे वह धरोहर की तरह सहेजता है और समाज को सुरक्षित लौटा देता है। मेरी दृष्टि में चौ मालसिंह एक कम्यूनिस्ट हैं, सच्चाई के प्रतीक हैं अपने व्यक्तित्व के लिए जिसे न ऐश चाहिए न आराम जीवन की इस सध्या में भी जो सजग है, जो सतर्क है, जो सावधान है, जो विद्यार्जन में तल्लीन है, जो लेखन एवं सृजन में गतिशील है जो जीवन के दुःखों को भी सुख की तरह भोग रहा है वह चौ मालसिंह सही अर्थों में कम्यूनिस्ट है। आज वह नींव का पत्थर चाहे दिखाई न दे पर भवन का निर्माण उसी पर होगा। मेरी कामना है कि चौ मालसिंह स्वस्थ एवं सक्रिय बने रहें और हम लोगों के प्रेरणा स्रोत बने रहें। सधन्यवाद !

गोविन्दलाल व्यास

सेवा निवृत
जिला शिक्षा अधिकारी

छब्बीली घाटी
बीकानेर
दि० 1 जनवरी 1992



अध्ययन का आधार तिथिवाद

हिस्टरी ज्योग्राफी बेवफा ।
रात का रटी, सवेरे सफा ॥

1901 से लेकर आज तक यह कहावत विद्वानो और विद्यार्थियो पर लागू है। आज भी भूगोल की किताब ऐसे पढी जाती है जैसे लोग उपन्यास और कहानिया पढते हैं। किताब नक्शा से और चित्रो से भरी है। पर उन्हें पढा नही जाता, उन्हे देखी नही जाती। किताब नक्शों से क्यो भरी गई। इस पर पाठक और अध्यापक नही सोचते। अध्यापक इतिहास ऐसे पढाता है जैसे हिन्दी साहित्य पढा रहा हो। भूगोल का मास्टर नक्शे जरूर टागता है। पर वह छात्रा को इस मार्ग पर नही लाता कि छात्र निरन्तर नक्शे देखें और नक्शे खीचें। एक बात अध्यापकों को याद रखनी चाहिए कि वह यह देख लें कि जो छात्र नवीं, दसवी क्लास मे भूगोल लेता है, वह नक्शा खीच सकता है कि नही। नक्शा खीचना एक कला है जो हर छात्र नही जानता है।

इतिहास

जग भूगोल नक्शों बिना नहीं सीखा जा सकता, वैसे ही इतिहास तारीखों, तिथियों बिना नहीं सीखा जा सकता। जो भी घटना सीखो, पढ़ो उसमें दिनांक साथ याद करो। जो काल माप पढ़ रहे हो, वह मन से मुक्त होता है। इसे आधार मान कर, माप क्रम बनालो। इतिहास दिनांक बिना याद नहीं होता और दिनांक क्रम बनाए बिना याद नहीं होता। दिनांकों की एक श्रृंखला होती है। उसी श्रृंखला में हुए दिनांकों का जमा दो।

मोटे रूप से हर देश का इतिहास तीन भागों में बांटा जाता है। प्राचीन युग, मध्य युग और वर्तमान युग। प्राचीन काल में शिकार कुछ इने गिने अनाजों की खेती जैसे बाजरा, जौ, मक्का आदि धंधे थे। अधिकांश लोग चलते फिरते थे। वर्षा जहां होती, वहीं चले जाते थे। अकाल पड़े स्थानों को छोड़ देते थे। लड़ाई में हारे लोग भाग कर कहीं दूसरी जगह पर बस जाते थे।

मध्य युग को सामंती युग भी कहते हैं। सामंती युग भूमि कब्जा काल से लेकर आज तक चलता है। सामंतीकरण तो सब जगह एक ही समय में हुआ, पर उद्योगीकरण यानी आधुनीकरण सब जगह एक साथ नहीं हुआ।

तो इतिहास की घटनाओं का और सामाजिक व्यवस्थाओं और परिस्थितियों को समय कालबद्ध और दिनांक बद्ध करना बहुत ही जरूरी है। नहीं वहीं पुरानी कहावत बेवफाई की लागू हो जाएगी जिसमें बेवफाई पाठ्य विषय की नहीं अध्ययनकर्ता की है)

एक अचम्भे की बात

"कैसे, क्यों, किसने, कौन" पर किताबें बहुत हैं। पर 'कब' पर एक भी किताब नहीं है। इससे मेरे अवलोकन और अध्ययन को बल मिलता है कि बेवफाई इतिहास की नहीं है पाठक और समाज की है। इसीलिए सीखने में मस्तिष्क पर अनावश्यक जोर पड़ता है। इतिहास जैसे सरस और आधारभूत विषय को निरस और बेवफा कहा जाता है।

दि० 1 जनवरी 1992

पोकर क्वार्टर्स
रानी बाजार, बीकानेर

चौ मालसिंह



अनुक्रमणिका

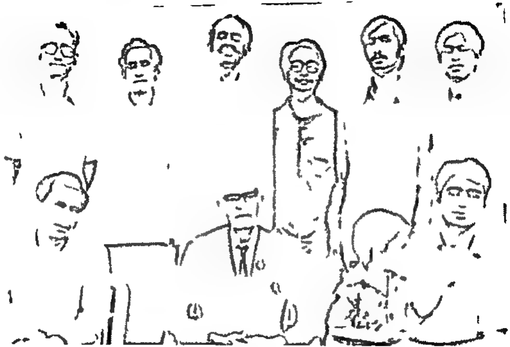
सज्जन स्मृति परिशिष्ट

मेरे जीवन की सध्या को गुलजार किये होते ।
सज्जन इस दुनिया मे कुछ और रहे होते ॥

माता श्रीमति नारायणी देवी

जब तक मेरी लिखाई चलेगी ।
सज्जन तेरी बडाई चलेगी ॥

पिता चौ. मानसिंह



कुर्सी पर बैठे हुए—श्री शिव किसन जोशी, डा० शान्त उस्मानी
बालक अजय चौधरी साथ में गज्जन चौधरी
पीछे खड़े हुए—१ कनर श्री मोहन सिंह २ श्री रणधीर सिंह यादव ३ (

जोशीला नौजवान

इतिहास साक्षी है कि व्यक्ति में विद्यमान गुण तथा उसमें छिपी प्रतिभा अल्पायु जीवन के बावजूद भी उसके जीव व्यक्तित्व को चिरस्थायी बना देती है। मैंने चौधरी सज्जन कुमार को सदा इसी रूप में देखा और पहिचाना। चौधरी सज्जन कुमार एक ऐसा ही जिन्दादिल नौजवान था। मानवतावादी कल्पना शक्ति के संकल्प के साथ वह किसान मजदूर और गरीब के चेहरों पर रोशनाई देखने के लिए लालायित रहता था। सुशील शारीरिक सौष्ठव का धनी होने पर भी उसने कभी अपनी आंखों को कमजोर के प्रति क्रोधित नहीं बनने दिया। बल्कि असहाय की सहायता में उसके कदम स्वतः चलकर आगे की ओर चल पड़ते थे। चौधरी सज्जन कुमार ने अपने विचारों के अनुकूल कर्तव्य को निभाने में समय का इन्तजार नहीं किया। छात्र जीवन को संघर्षों के साथ जोड़ दिया। वह स्टुडेन्ट फेडरेशन का उपाध्यक्ष बना–छात्र समस्याओं से जूझते हुए अनेक आन्दोलनों में गिरफ्तार हुआ लेकिन इन गिरफ्तारियों ने उसके

उत्साह को आगे बढ़ाया ।

साम्प्रदायिक विराम के विचारों से ओत प्रोत सज्जन कुमार जमादारों और जखीरेबाजों का घोर विरोधी बनकर उनके खिलाफ वह हमेशा आन्दोलित रहा—जेल जाना पड़ा तो बिना हिचक जेल गया । भा क पा के महगाई विरोधी आन्दोलन की अगुवाई में या जनहित के संघर्षों में उसे कई बार जेल के शिकन्जों में बन्द होना पड़ा तब भी उस नौजवान के मन में कभी घबराहट उत्पन्न नहीं हुई । दूसरी ओर कर्तव्य परायण में अग्रणीयता उसका विशेष गुण था । बिहार के बाढ़ पीड़ितों की सहायता करने का सवाल उठा तब साम्यवादी नेता रामानन्द अग्रवाल की मार्फत उसने पूरी मदद पहुंचाई । स्वयं की हिस्सेदारी के साथ—साथ अन्य लोगों को उसने प्रेरित किया ।

इसी तरह अकाल के समय वह सब कुछ छोड़ कर ग्रामीण क्षेत्रों में राहत पहुंचाने में मददगार बनने के निमित्त निकल पड़ता था । उसकी अल्पायु ने बहन श्रीमति नारायणी देवी एवं चौधरी मालसिंह के साथ-साथ मुझ भी दुखदायी बनाकर क्षति पहुंचाई है ।

महबूब अली

बीकानेर

पूर्व नगर विधायक एवं पूर्व
जन सम्पर्क मंत्री राजस्थान सरकार



वह क्रांति का साधक था

उद्दीयवान मनुष्य के लिए परिस्थितियां और वातावरण ही वह स्रोत साबित होता है जो उसे जीवन में कुछ कर गुजरने की प्रेरणा प्रदान करता है। समस्याओं का सामना और झंझावातों से जूझता हुआ जो व्यक्ति आगे बढ़ता है उसके समक्ष बाधाएं स्वयं रास्ता छोड़ देती है। संघर्ष उसे शक्ति प्रदान करता है। उसे निष्कंटक बना आगे का रास्ता दिखलाने वाला पथ प्रदर्शक बन जाता है। ऐसे पुरुष जब विजित होकर जीवट व्यक्तित्व के धनी बनकर सामूहिक नेतृत्व की कमान सम्भालने में समर्थ बने हैं। उन्हें क्रान्ति का साधक समझा जाता है।

छोटी उम्र का नौजवान चौ० सज्जन कुमार की गिनती ऐसे जीवट व्यक्ति के रूप में की जाने लगी जब अग्रणीय बन कर छात्र-जीवन के दौरान ही उसने किसानों और मजदूरों के उत्थान के आंदोलन में अपने मूल्यवान अध्ययन के समय के साथ-साथ अपना

समर्पित अगुआ सहयोग दिया। सज्जन कुमार केवल शांति का साधक बनकर नहीं रहा, बल्कि शिक्षा प्रसार की रचनात्मक कार्य-शैली को अपनाकर उसने अपने अवकाश के समय को गावों में प्रौढ़ शिक्षा प्रसार में भागीदार बनकर सैकड़ों प्रौढ़ स्त्री–पुरुषों को साक्षरता का ज्ञान करवाया।

साधना के प्रतीक चौ० सज्जन कुमार का अल्पायु में आक-स्मिक निधन से न सिर्फ उसके माता पिता को दुखित नहीं किया, अपितु मेरे सहित समाज के हर वर्ग के व्यक्ति को व्यथित बना दिया और एक होनहार नेतृत्व से वञ्चित कर दिया जिसकी पूर्ति कभी नहीं हो सकेगी।

गिरधारीलाल भोबिया

दि० 25–12–91

अध्यक्ष

हरमून डेयरी, बीकानेर

एक समर्पित अध्यापक

अध्यापन के क्षेत्र में मैं काफी वर्षों तक कार्यरत रहा। उस दौरान मुझे बहुत से साथी अध्यापकों का साथ मिला। आज मैं उन साथ रहे अध्यापकों की विशेषताओं का विश्लेषण करता हूं तब स्वतः ही दिमाग व आंखों के सामने चौधरी सज्जन कुमार का चेहरा उभर आता है। लम्बे समय तक अध्यापन कार्य का अनुभव बतलाता है कि आज के युग में सज्जन कुमार जैसे शिक्षा के लिए समर्पित अध्यापक का मिलना कितना कठिन है। जो सज्जन कुमार जब मेरी शाला में स्थानान्तरण होकर आए, तब ग्रामीण क्षेत्रों की शालाओं अध्यापन का मैं सही मूल्यांकन नहीं कर सका। परन्तु समय के साथ साथ सज्जन कुमार अपनी शिक्षा प्रसार के प्रति निष्ठा रहते अध्यापकों व छात्रों का इतना प्रिय बन गया, जिसे आज भी याद किया जाता है। कक्षा में नियमित समय पर पहुंचना पाठ्य पुस्तकों के पाठों को याद करवाने की उसकी एक विशेष शैली थी। वह स्कूल के समय कभी बेकार नहीं बैठता। जो कक्षा खाली

मिली वहा अतिरिक्त समय म पढाने को दौड पडता। इस ध्येय से कि उस कक्षा के विद्यार्थियो का समय फिजूल खच न हो। छात्र पूरा कोर्स पढने से वन्चित न रह जाय। यही कारण था कि शाला के सभी विद्यार्थी जितना आदर और सम्मान अध्यापक सज्जनकुमार का करते अन्य अध्यापकों का नही। विद्यार्थियो के साथ उसका व्यवहार केवल एक अध्यापक का ही नही था बल्कि वह विद्यार्थियों का मित्रवत साथी बनकर उनका मार्गदर्शन करता, ताकि प्रत्येक छात्र प्रगति करें। खेलकूद का आयोजन हो अथवा सास्कृतिक कार्यक्रम अध्यापक सज्जन कुमार की सभी म विशेष हिस्सेदारी रहती थी अनुशासनप्रियता को वह सदा अपने आस पास रखता और हर समय शैक्षणेत्तर विषयों पर उनसे चर्चा करता रहता था। उसकी कार्य शैली के अनेक सस्मरण गिनाये जा सकते है। लेकिन प्रकृति की क्रूरता ने सज्जन कुमार जसे समर्पित अध्यापक को समाज को प्रतिफल मिलने से पूर्व ही हमसे उसे अल्पायु मे ही छीन लिया लेकिन विशेषताओ स्मृतिया आज भी उसकी याद दिला जाती है और उसके प्रति नतमस्तक बना देती है।

मोहम्मद जफर
सेवा निवृत
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
बीकानेर

व्यास कालोनी
बीकानेर

चौ. सज्जन : एक दृष्टि

प्रकृति किसी प्रतिभा का पलायन समय पूर्व करा सकती है लेकिन उसके प्रभाव को अनंतकाल तक कायम रहने को नहीं रोक सकती। चौ० सज्जन कुमार का ऐसा ही एक व्यक्तित्व था। चौ० सज्जन कुमार का जन्म फरवरी 1953 में हुआ था। सज्जन कुमार का पालन पोषण अपनी माता श्रीमति नारायणी देवी की स्नेहपूर्ण हरी भरी गोद में हुआ, वही पिता श्री मालसिंहजी चौधरी चूंकि हायर सैकेण्डरी स्कूल के प्रधानाचार्य थे, अत: सज्जन कुमार को बाल्यकाल से विद्या अध्ययन का वातावरण मिला। यही कारण था कि अपनी कुशाग्र बुद्धि, लगनशील जिज्ञासा के रहते चौधरी सज्जन कुमार ने जब से विद्या अध्ययन के लिए स्कूल में प्रवेश लिया तब से आखिर तक वह पढ़ाई लिखाई में हमेशा अव्वल रहा।

बहु आयामी गुण उसमें मौजूद थे। पढ़ना—पढ़ाना और लिखना उसकी विशेष रुचि थी। छात्र जीवन से सज्जन कुमार ने

पाठ्यक्रम कार्यों के अतिरिक्त सामाजिक राजनैतिक और शारीरिक विकास में योगदान जैसे रचनात्मक उद्देश्यों से स्वयं को जोड़ लिया था। व्यायाम व खेलकूद उसकी दिनचर्या के अनिवार्य अंग थे। गरीब सहपाठी छात्रों के प्रति सज्जन कुमार की हमदर्दी थी। ऐसे कई अवसर आये जब वह स्वयं की पाठ्य पुस्तकों को अन्य गरीब छात्रों को दे देता, जो कि पुस्तकें खरीदने में समर्थ नहीं होते। एक बार उसकी कक्षा के सहपाठी को किताबें न होने की वजह से कक्षा अध्यापक ने बिना किताबें कक्षा में आने पर निकाल दिया था। अध्यापक ने उस छात्र को चेतावनी दी कि वह कल से स्कूल नहीं आये। सज्जन को अध्यापक की बात बुरी लगी। उसने अध्यापक से कहा सर यह मेरे पास की पुस्तकें इसी की हैं। और उसने अपनी पुस्तकें अपने सहपाठी को सौंप दी। कक्षा में अव्वल रहने व सहपाठियों का मददगार गुणों ने उसे हर अध्यापक का प्रिय बना दिया। सज्जन कुमार का बदन गठीला व कसरती था। खेलकूद की प्रतियोगिताओं में अव्वल आकर उसने अनेक पारितोषिक पाये। स्कूल से लेकर महाविद्यालयी शिक्षा तक एक होशियार विद्यार्थी बना रहा और खेलकूद का अग्रीम खिलाड़ी।

सज्जन कुमार के दो बड़े भाई थे, जो डाक्टर एम बी बी एस की डीग्री प्राप्त कर डाक्टर बन चुके थे। उसका झुकाव विज्ञान विषय में अधिक था। महाविद्यालय में रहकर विज्ञान विषय की उच्च शिक्षा पूर्ण करता उसी दौरान राज्यव्यापी छात्र आन्दोलन की कमान सभाल ली। बाद में वह स्टुडेन्ट फेडरेशन से जुड़ गया। कार्यनियत दम उस फेडरेशन का उपाध्यक्ष बना दिया गया।

शिक्षा के साथ-साथ उसकी अभिरूचि राजनैतिक और सामाजिक उत्थान में भागीदार बनने की ओर आकृष्ठ होनी गई। बाप-

अमरत्व को प्राप्त



चौधरी सज्जन कुमार

क्षेत्र का विस्तार हो गया और वह अपना समय छात्रो की भलाई और गरीबो की सहायता मे अधिक देने लगा था।

बिहार के बाढ पीडितो का प्रसग हो अथवा अकाल से मुकाबला वह प्रभावित लोगो का योगदान करने मे जुट जाया करता । भा क पा के साथ जुडकर चुनाव सचालन मे अगुवा रहता था। स्कूल व महाविद्यालय के अध्यापक की सख्या बढती रहती। कालेज शिक्षा पूर्ण करने पर भी उसे रोजगार नही मिला। बेरोजगारी का सामना करना पडा। लगन का सच्चा, इरादो का पक्का सज्जन कुमार बेकार बैठना पसन्द नही करता। उसने बी एड करना उचित समझा। प्रशिक्षण प्राप्त कर अध्यापन के क्षेत्र मे आ गया। अध्यापन क्षेत्र मे उसकी रुचि ग्रामीण क्षेत्रों मे रही। ग्रामीण क्षेत्रो मे अध्यापक बनने मे उसकी रुचि एक विशेष प्रयोजन से थी। वह यह कि ग्रामीणों म प्रौढ शिक्षा का प्रसार कर देश के साक्षरता अभियान म अपना अधिक योगदान प्रदान कर सके। आज भी बहुत से प्रौढ स्त्री-पुरुष गावो म मिल जाते हैं जो कहते कि वे सज्जन कुमार की प्रेरणा से साक्षर बन सके।

प्रकृति के क्रूर व्यवहार ने उसके मिशन का पूरा नही होने दिया और सज्जन कुमार को अल्पायु मे ही हमसे छीन लिया उसकी कर्मठता का कारवा अपनी पूरी मजिल तक नही पहुच सका।

चैनपुरा
जैसलमेर

मोहनलाल पुरोहित
वरिष्ठ अध्यापक

अमरत्व को प्राप्त बेटा सज्जन

यह छ फुटा जवान बेटा सज्जन नीरोग हृष्ट पुष्ट कैसे विदा हो गया। उछलता कूदता, कसरती जवान कैसे चला गया। सदाचारी सेक्स का सच्चा बस्ती द्वारा, पडोस द्वारा प्रशंसा प्राप्त आदर्श रहस्यमय ढंग से कैसे चला गया। अपनी मां की गोद में सिर टेक कर उसने क्यों आंसू बहाये थे। विदाई की पहली शाम को उसने स्नान क्यों किया था। उसने पन्द्रह दिन से स्नान करना, दाढी बनाना, कुल्ला दातन करना क्यों बंद कर दिया था। उसकी सब तरह की रुचियां सब तरह के इन्टेरेस्ट क्या खतम हो गए थे। उसकी बुखार दुलम्ब अपने आप क्यों मिट गए थे।

बस उसमें एक ही विचित्र अनोखी रहस्य मय बात थी, रहस्य मय फिनोमेनन PHENOMENON था। वह था उसके दिमाग की मस्तिष्क की, सिर की शून्यता बढते जाना। रोगी अपनी बीमारी के बारे में कोई शिकायत नहीं करता था। हम दोनों उसको

मा, आप रोज देखते रहते थे, सोचते थे या ही है। आप ठीक हो जाएगा। कोई गम नही है। आप ठीक हो जाएगा। और देखते ही देखते, सज्जन ने, अपनी मा की गोद मे सिर रख कर आखो का आसुओ मे डबाडब भर कर आसुओ की बड़ी-बड़ी बूदे बरसाता हुआ, नाक को सड़े से भरता हुआ, चल बसा।

आज दिसम्बर 1991 के महीने म, हम दिन म कई बार आखो को आसुओ से छलाछल भर लेते थे हैं।

बेटा सज्जन बहुमुखी प्रतिभाओ का धनी था वास्तव म वह प्रतिभाशाली नव जवान था।

जब तक मेरी लिखाई चलेगी।
सज्जन तेरी बड़ाई चलेगी॥

चौ० मानसिंह

चन्द्र टले, सूरज टले, चले जगत व्यवहार ।
पर बेटे सज्जन को टले न यादगार ॥

सज्जन ने अपने छात्र जीवन में सदा सामाजिक कामों में और छात्र संगठनों में सक्रिय भाग लिया । समाज में भ्रष्टाचार का आगे होकर विरोध किया जमाखोरी के विरुद्ध छापे मारने का नतृत्व किया । छात्र फेडरेशन का नेता रहा । उस समय उसके साथी थे मनोहर मिस्त्री, शेखर मेहता, वीरेन्द्र शर्मा आदि । उस समय की मैगजिन यूथ लाइफ में Youth life में सज्जन के सामाजिक और छात्र हित के कामों का वर्णन छपता था । सज्जन चौधरी छात्र फेडरेशन के उपाध्यक्ष थे ।

सज्जन का जन्म फरवरी 1953 में हुआ था । उसका देहान्सान 2 जून 1991 में हुआ था । उस दिन रविवार संडे था । अड़तीस वर्ष की भरी जवानी में बेटा सज्जन अपनी माँ को जोर से रोती छोड़कर चला गया ।

सेवा की बातों में सज्जन एक आदर्श नौजवान था । पार्स

पडोस को उसके सदाचार पर और सेवा भाव पर गौरव था।

सज्जन की मा, मेरी पत्नी नारायणी देवी ऊमर सत्तर वर्ष मामूली वस्त्र, मामूली खान पान, सादा, सरल, एक सा स्वभाव एक आदर्श पत्नी, आदर्श दादी, आदर्श पडोसिन बस्ती की माननीय महिला। सज्जन के लिए आंसु बहाती रहती है।

चौ० मालसिंह



सज्जन की स्मृति

यह कब की बात है ? सज्जन की स्मृति चालू रखने के लिये यह पुस्तक लिखी गई है । सज्जन हमारा सबसे छोटा बेटा था। इसलिये हमने उसे पौष्टिक भोजन दिया। कसरत के लिये, खेलने के लिये उत्साहित करते थे हमारा परिवार ऊंचाई मे कुछ छोटा है। पर सज्जन छ फुट का हो गया था। हमारे परिवार का पहरेदार था। बस्ती का सजग रखवाला था। सिर मे गाठ हो जाने से और समय पर ओपरेशन न होने से सज्जन का अकाल 2 जून, 1991 को होगया हम प्रयत्नशील है कि सज्जन की स्मृति स्थिर रहे ।

सुखद, सुन्दर सुडौल सुपात्र, सुयोग्य, सुपठित, सुपुत्र, सुशील समझदार, सदाचारी सत्यवादी बस्ती की पडौस की प्रशसा का पात्र बेटा सज्जन सदायाद रहेगा।

चन्द्र चले सूरज टले टले जगत व्यवहार ।
पर बेटे सज्जन की टले न यादगार ॥

जब तक मेरी लिखाई चलेगी ।
बेटे सज्जन की बडाई चलेगी ।।

सज्जन की मा कहती है कि बेटे सज्जन का गुण गाने के लिये, वह जीवित और स्वस्थ रहना चाहती है मैं भी यही कहता हू कि सज्जन की विशेषताओ को और परिवार के प्रति उसकी लगन को देखते हुए मै भी गुणगान करूगा ।

सर्व गुण सम्पन्न बेटा सज्जन

यह सच है समय घाव भरता है। मन के घाव भी भरता है। पर दो जून 1991 से आज सात महीने हो गय, हमारे घाव भरे नही ।

सेक्स के सम्बन्ध मे, मानी लडकियो के साथ अपने सबंध वह बडे भाई के समान रखता था। परिवार पोषिका सज्जन की मा श्रीमती नारायणी देवी परिवार के पहलवान को खोकर कितनी दुखी है आप कल्पना करें।

अडतीस वप की उमर तक वह लगभग अकेला रहा, पर वह सेक्स मे दूर रहा। वह साधन सम्पन्न था, फिर भी सेक्स से दूर रहा। ऐसे बेटे को खोकर हम कितने दुखी हैं।

मेरे परिवार के सदस्य

1 डा विजय कुमार–रीडर पैथोलोजी, मेडिकल कालेज बीकानेर (पुत्र)
2 डा संतोष कुमार–रीडर पैथोलोजी, मेडिकल कालेज जोधपुर (पुत्र)
3 प्रभात कुमार–टीचर, सरकारी नौकरी मे (पुत्र)
4 चौथे बेटे सज्जन का देहावसान हो गया।
5 डा शारदा–विजय की पत्नी।
6 डा कमला–संतोष की पत्नी।
7 अध्यापिका अमृत कौर–प्रभात की पत्नी।
8 नारायणी देवी–मेरी पत्नी।

मेरे दुख सुख मे शामिल होने वाले व्यक्ति

1 डा हनुमानसिंह कस्वा 2 परमानन्दजी चौधरी
3 चौ पेमारामजी डा कस्वा के पिताजी
4 चौ रिक्तारामजी मृत पूर्व प्रधान पचायत समिति नोखा

मेरे पौत्र एव पौत्रिया

अजय	पुत्र	डा विजय कुमार
श्वेता	पुत्री	डा विजय कुमार
आशीष	पुत्र	डा सताप कुमार
अकिता	पुत्री	डा मतोष कुमार
तरुण	पुत्र	प्रभात कुमार
विकास	पुत्र	प्रभात कुमार

मेरे सम्बन्धी चौ श्री बलदेवसिंह का परिवार

श्री बलदेवसिहजी	डा विजय के सुसुर
श्रीमती मोहनीदेवी	धर्मपत्नि बलदेवसिहजी
श्री राजेन्द्रसिंह	पुत्र ,,
श्री सुरेन्द्रसिंह	पुत्र ,,
गोपालसिंह	पुत्र ,,
डा शारदा	धर्मपत्नि डा विजयकुमार
सजीव	पुत्र राजेन्द्रसिंह
राजीव	पुत्र राजेन्द्रसिंह
मोहित	पुत्र गोपालसिंह
शिल्पा	पुत्री सुरेन्द्रसिंह

मेरे सम्बन्धी कर्नल श्री द्वारकाप्रसाद जी का परिवार

कर्नल श्री द्वारकाप्रसाद जी	
श्रीमती चन्द्रकला जी	*धर्मपत्नि श्री द्वारकाप्रसाद जी*
कैप्टन सुधीर	पुत्र द्वारकाप्रसाद जी
सुशील	पुत्र द्वारकाप्रसाद जी
सुमित	पुत्र द्वारकाप्रसाद जी
श्रीमती सुलोचना	पुत्री द्वारकाप्रसाद जी
श्रीमती सुनीता	पुत्री द्वारकाप्रसाद जी
श्रीमती कमला	धर्मपत्नि डा सतोषकुमार

मेरे सम्बन्धी श्री सेवासिंह जी का परिवार

श्री सेवासिंहजी	
श्रीमती तेजकंवर	धर्मपत्नि सेवासिंहजी
चरणजीतसिंह	पुत्र सेवासिंहजी
असमीतसिंह	पुत्र सेवासिंहजी
श्रीमती अमतकौर	धर्मपत्नि श्री प्रभात कुमार



मेरे साढू श्रीकालीरामजी का परिवार

श्री कालीरामजी	रिटायर गेलगार्ड
श्रीमती गौरीदेवी	धर्मपत्नि कालीरामजी

पुत्रिया

श्रीमती इन्दु	धर्मपत्नि रामचन्द्रजी
श्रीमती सरोज	,, नथमलजी
श्रीमती रानी	,, मलिक साहब
श्रीमती रजनी	,, डा भागीरथ

मेरे परिवार के डॉक्टर

डाक्टर प्रकाश ओझा हैं। इनके पिता का नाम है श्री हरिकिशनजी ओझा। श्री हरिकिशनजी ओझा प्रगतिशील विचारों के वामपक्षी विचारक हैं।

विद्यार्थी जीवन में जिनके घर पर मैं छुट्टियों में ठहरा करता था। जीवनराम पूनियां, पिता मोहरसिंह पूनिया, गाव जैतपुर जिला चूरू।

रामभूर्ति नय्यर, बहुत लोकप्रिय व्यक्ति है। पहले अध्यापक थे। उमर 68 वर्ष, पिता का नाम कर्मचन्दजी, बेटे का नाम चन्द्रप्रकाश।

मेरे पडौसी

सत्यदेवजी सूद	मुनशा सूद
वेद प्रकाशजी धीर	भीष्म देव खन्ना
बाई विमला व मदन मा और बेटा	वचनजी
मुरारी पूनिया बेटा गोपीचन्दजी पूनिया का	
हरिरामजी कश्यप	अमरनाथजी कश्यप
शिवलालजी व्यास	अरूण भसीन
राजरानी भसीन	सूरजमलजी शर्मा
मगतमलजी शर्मा	ललित धीर

श्री बंशीधर बजाज (एडवोकेट)— किसान राजनीति के करणधार, किसानो के हितो के लिये कानूनी लडाई के प्रमुख सनानायक सागरनाथ, रिक्ताराम गिरधारीलाल व चुनीलाल इन्दलिया आदि के प्रमुख सहयोगी। आपके तक अकाट्य, कानून के जानकार, जाट राजनति के प्रमुख स्तम्भ सेवाभावी स्वभाव, बात के धनी मित्रो को तन, मन व धन से मदद करने वाले सफल व्यवसायी है।

शिवरतन डावा— प्रकाशक एव मुद्रक सरल स्वभाव सेवा भावी लाभ का लालच गौण अच्छे और सच्चे मित्र, मित्रता निभाने वाले। दूसरों की पीडा को अपनी पीडा समझने वाले है।

श्री अन्नारामजी सुदामा— राजस्थानी साहित्यकार हैं कई पुस्तकों के लेखक व अच्छे अध्यापक रहे हैं इनके पुत्र श्री मेघराज प्रोफेसर है। दूसरे पुत्र का नाम द्वारकाप्रसाद तीसरा ओमप्रकाश है।

श्री नवल बीकानेरी—अच्छे कवि एव विचारक हैं उर्दू शायरी भी करते हैं। शेर अच्छे कहते हैं।

सज्जन कुमार के मित्र

विक्रम पुरी	अश्विनीकुमार
करर्णसिह	सिरोलिया
विजयकुमार	सीतराम
मोहनजी	सुरेशचन्द भसीन

डा श्री आनन्दप्रकाश दधीच सुयोग एव सुशील स्वभाव के धनी।

डा श्री ब्रह्माराम चौधरी, पशुचिकित्सा एव पशु विज्ञान विशेपज्ञ।

पडौसी— मदन की बहन शारदा

उदरी चौधरी दूधवाला

अशोककुमार पुत्र चुन्नीलालजी माली

श्रीमोतीलालजी दम्माणी— सरलभावे एव श्रमजीवी इसान अपनी मेहनत एव लगन के बलबूते पर मजिल प्राप्त करके अपने लडके विनोद दम्माणी का सी ए तक पढाकर समाज के शिखर तक पहुचकर भी घमण्ड से दूर हैं।

श्री महबूबअली— पूर्व नगर विधायक, राजस्थान मन्त्रिमण्डल मे रहकर बीकानेर का प्रतिनिधित्व किया। समाजवादी विचारक, प्रगतिशील युवक नेता जो सही अर्थो म सवयुरवादी है। सरल इतने कि हरेक मे मित्रवत व्यवहार। ईमानदार और सच्चे समाजवादी इसान। घमण्ड मे दूर।

श्री लक्ष्मीनारायण नागर--प्रगतिशील विचारों के मेहनत क
ईमान मजदूरी के हितैषी, पक्के कांग्रेसी इन्दरा गांधी के प्रशंस
राजनैतिक रुचि रखते हुए व्यवसाय मे लगे हैं।

श्री दीपाराम चौधरी-- जसरासर गांव से पढना शुरू किया
आज जलदायक विभाग म जूनियर इन्जीनियर हैं भले स्वभाव के
साथ साथ किसानों के हितैषी है। अभावो को देखा और सहा है।
दूसरो की भलाई म तत्पर रहने वाले।

जनार्दन कल्ला--शीर्ष स्थान प्राप्त युवा नेता है। प्रच
प्रचार से दूर रहते हुए राजनतिक व सामाजिक अभियान के
सचालन की सद्भूति शैली का धनी है। बेदाग व बेबाक होकर अपने
पास आने वाले हर छोटे बडे व्यक्ति के काम म मददगार बनने का
शौक रखता है। उदारमना जर्नादन कल्ला ने छात्र जीवन के बा
मजबूतीपूर्वक बन राजनीति मे प्रवेश किया। परन्तु आगे चल स्वय
को किसी पद प्राप्त करने से दूर रह कर राजनतिक व सामाजिक
व्यक्तित्व को उभारने मे सहयोगी (किंग मेकर) बनने तक स्वय को
सीमित रखा।

मजदूरों व्यापारियों व अन्य सभी वग के लोगों के साथ
मित्रवत मेल मिलाप रखने में अधिक विश्वास रखते हैं। वतमान क
युवा नेताओं मे सर्वाधिक लोकप्रिय हैं।

श्री भवरलाल व्यास--सामाजिक, राजनैतिक कार्यो मे रुचि।
सहयोग की भावना से ओत प्रोत, सरकारी सेवा में रहते हुए सहयोग
की प्रबल इच्छा रखते हैं। सच्चे अर्थों मे कर्मशील मानव।

यह कब की बात है

(भाग पहला)

डॉ संतोष कुमार की प्रेरणा से यह
पुस्तक तैयार की गई

परिवार पोषिका
श्रीमती नारायणीदेवी धर्मपत्नी चौ० मालसिंह
किताब मालकिन

यह कब की बात है

इतिहास के क्षेत्र मे

कब से क्रम बनता है।
क्रम से क्रम बद्धता बनती है।
क्रम बद्धता से स्मरण सुधरता है।
स्मरण सुधार से जीवन सुगम बनता है।
जीवन सुमता ही सभ्यता और सस्कृति है।

राजनीति क्षेत्र मे

प्राचीनकाल के अशोक महान
मध्यकाल के अकबर महान
वर्तमान काल के नेहरू महान

धार्मिक क्षेत्र मे

प्राचीन काल के बुद्ध महान
मध्यकाल के तुलसी महान
वतमान् काल के गाधी महान

विद्यालय की खोज मे

चूरु जिले की चूरु तहसील म दुधवा खारा रलवे स्टेशन है। इस स्टेशन से सात किलोमीटर दूर दक्षिण म लोसणा गाव है। यहा मैं 1910 म जन्मा था। 1918 म अली मोहम्मद जी जकात विभाग के थानदार होकर आये। लोक हितकारी स माजिक आदमी थ। गांव क बच्चों को पढ़ाते थ। उनमें से एक मैं भी था। वर्णमाला सीखली। बारहखड़ी सीखली। एक बही और पहाड़े सीख लिये। एकावनी बीस तक मास्टरजी न सिखाई। मैं स्वय ही सौ तक सीख गया। बारहखड़ी क और स भी मास्टर जी न सिखाई। आगे की सारी मैं सीख गया। ऐसा दूसरे लड़के नहीं कर पाते थे। नाम लिखना, किसी का पत्र लिख देना पत्र पढ़ देना सब करन लगा गाव म मेरी बड़ाई होन लगी। ठाकुरा के ब्राह्मणा क लड़क थे। जाटा का लड़का मैं एक ही था। सब जगह मेरी बड़ाई होन लगी। ठाकुर बारह गाव का मालिक था। उनका घर गढ़ कहलाता था। सभी बच्चे जिस भाग म रहते थ, उस रावला कहते थे। पढ़ाई

म मेरी होशियारी की बातें खबरा म पहुची । ठाकुर के पोतों पर मेरा अच्छा प्रभ व था । कभी-कभी मुझे जीमने क लिये बुलाया जाता था ।

परिस्थिति ऐसी बदली कि मुझे हल पर हाथ रखना पडा । फिर घास खोदना फिर बाजरे की मिटिया खाडना फिर कच्चा खोदना फिर चारी कुतर करना । मेरी उमर का बच्चा, खेती क इस भारी काम नही करता था । भोजन का जहा तक सवाल है । पौष्टिक आहार तो दूर रहा पेट भी नहीं भरता था । भूखे पेट इतनी मेहनत म कोई भी नही करता । मुझे करना पडता था ।

मेरे दुख का इससे भी बडा कारण था । पढाई म होशियारी के कारण मेरी जो बड़ाई होती थी साथियों म, बडा म ठाकुर के गढ और रावले म वह भी बन्द हो गई । एक बात और थी। मास्टर जी जबानी सवाल पूछते थे । म सबका उत्तर देता था । दूसरे लडके चूक जाते थे । मास्टरजी कहते इनकी पीठ पर थप्पड मारो । मैं थप्पड मारता था । थप्पड खाने वालो म ठाकुर के पोते भी होते थे। पढाई म होशियार होना ठाकुर के बच्चो के थप्पड मारना ब्राह्मण बनियो के बच्चो के थप्पड मारना ऐसी बात थी जो गाव म प्रचलित थी ।

खेती का भार और पढाई और बडाई दोनो का चला जाना, मेरे लिए असहनीय हो गये थे । घी दूध तो दूर की बात थी, छाछ भी नहीं मिलता थी । मैं भाग कर चुरू चला गया । एक बहुत बडे सेठ के यहा रहने लगा । आनन्द हो गया भर पेट भोजन मिलने लगा, आम और अमरस भी मिलने लगे, काम बहुत आसान था ।

घर की सफाई, झाड़ू निकालना, बाजार से सामान लाना आदि आनन्द दायक काम थे। सेठानी शरीर से भारी थी वह पीठ और पर टांगे आदि दबवाती थी। मैं पीठ और पैरों पर चढ़ जाता था और हिलता चलता था सेठानी खुश थी।

यह देशावरी सेठ था। कुछ दिन बाद पूरा परिवार कलकत्ता चला गया। मुझे कहा था कि मैं उनके साथ चला जाऊं। पर मुझे फिर वहीं पढ़ाई की बात याद आने लगी। पढ़ने से समय प्रशंसा और बड़ाई होगी। पढ़ाई के बाद नौकरी मिलेगी, नौकरी और अफसरी हम लोग एक ही बात मानते थे। जानकार लोग मेरा हाथ देखते थे और कहते थे कि यह लड़का विद्वान बनेगा और अफसर बनेगा। जिन-जिन परिवारों में मैं रहा, उन्हें कहता था कि मैं अफसर बनकर आपसे मिलूंगा। अली मोहम्मद जी की बातें, ठाकर के रावले की बातें, मेरी हथेली देखने वालों की बातें मेरी अपनी कल्पनाएं मुझे बहुत प्रेरित करती थी। मेरी आशाएं आकांक्षाएं बहुत ऊंची हो गई थी।

मैं निकला विद्यालय की खोज में। रुपया नहीं साधन नहीं, रोटी नहीं पैरों में पगरखी नहीं, बस फटी सी धोती, फटा सा कमीज, रोटी के दो सहारे थे हलवाई की दुकान पर कमठी (?) साफ करना, शाम को गाय बच्छी का काम करना आदि। स्टेशन पर मुसाफिरों का सामान ढोना।

रोटी कपड़ा और मकान,
संग में हो विद्या का दान।

मैं निकला विद्यालय की खोज में। रतनगढ़ में विद्यालय थे,

गुरुकुल म थे गुलावठी और भरतपुर म भी थे, पर विद्यालय ब्राह्मण व बनियों के लिए थे । मुझे जवाब मिलता जाट तो कहीं पढ़ा हो नहीं है उन पढ़ाई की जरूरत भी नहीं है खेती के काम म पढ़ाई की कहीं जरूरत नहीं पड़ती, जाट के लिए नौकरी करने का रिवाज हो रहा है बीकानेर राज्य म कहीं भी जाट नहीं है । पास म पुलिस म सिविल म एक भी जाट नहीं है 1941 म हिन्द युद्ध के समय पहला जाट फौज म भरती हुआ था वह था महाराम 1922 म मात्र सिपाही म पहला जाट भरती हुआ था वह था सुगनराम जी डी रडकन के समय के प्रयास से सुगनरामजी को भरती किया ।

सात वर्ष तक विद्यालय की खोज म रहे 1926 म सगरिया पहुंचा । स्कूल की नींव पर लिखा था जाट एंग्लो संस्कृत वर्नाक्यूलर मिडिल स्कूल । बातचीत से मालूम हुआ कि बीकानेर के रेवेन्यू मिनिस्टर जी डी रडकन की सहानुभूति स्कूल के साथ है । उसने सरकारी सहायता भी अभी मंजूर की है । वजीफा पाने के लिए मैं भी रडकन साहब से मिला उन्होंने आठ रुपया मासिक मेरा वजीफा कर दिया । परन्तु 1928 म मैंने जाट स्कूल सगरिया छोड़ दिया । छोड़ने का कोई कारण नहीं था । अचम्भे की बात थी कि सगाई छोटे, रात्रि छात्र और छोटा छात्रावास जिसमें मेरे बहुत से मित्र हो गए । बस इतना सा कारण था कि कमेटी ने घी देना बंद कर दिया था मूंग की दाल, रूखा सूखा फुलका तक था संयोग की बात थी कि कुछ महीने बाद 1928 म रडकन साहब भी बीकानेर छोड़कर चले गए थे ।

मैं फिर निकला विद्या और छात्रावास की तलाश मे । हिसार और रोहतक बुलन्दशहर लखावटी आदि म काम बना नहीं मैं

राजगढ-सादुलपुर पहुचा सादुलपुर मे छोटा सा सरकारी स्कूल था वहा पता चला कि सादुलपुर के छात्र दसवी पास करने के लिए पिलानी जाते है। बस, पिलानी ही मेरा अगला और लम्बा ठिकाना बना यहा लोयलका नाम का एक बहुत ही सुखद यह छात्रावास था नाम तो लोयलका छात्रावास था पर यहा के छात्र सब जाट थे। जन भाषा म इसे जाट बोर्डिंग कहते थे,उस समय पिलानी म 12वीं कक्षा तक का स्कूल था। यहा से मैंने 1936 म बारह कक्षा पास करली।

फिर बीकानेर पहुचा बीकानेर के छात्र सरकारी सहायता पर छात्रवृति पर, बनारस हिन्दु विश्व विद्यालय मे पढने जाते थे। म भी वजीफे के लिए सरकार म पहुचा वजीफा नहीं हुआ।

उस समय रामचन्द्र जी चौधरी मुसंिफ बन गये थे। जाट स्कूल संगरिया के पहले छात्र थे जो सरकारी नौकरी म आए। म रामचन्द्र जी के घर बीकानेर म रहने लगा। पर अक्टूबर 1936 म फिर धुन सवार हुई बी ए पास करनेकी पढाई की डिग्री नाम के साथ लिखी और बोली जाएगी। मैं पढा लिखा आदमी कहलाऊगा मालसिह बी ए ऐसा बोला जाएगा। जब मुझ स्कूल मिल गया तो मैं कहने लगा

रोटी कपडा और मकान,
सग मे हो विद्या का दान,
देख डाला देश तमाम,
बना न कहीं मेरा-काम,

बहादुरसिंह का करं गुणगान, सचमुच था वह मनुष्य महान

वीर बहादुर भालिया न सन 1917 म सगरिया में जाट स्कूल की स्थापना की। भारत में यह पहला जाट विद्यालय था। जून सन 1924 को उनकी मृत्यु हो गई।

ग्रेजुएट बनने की धुन सवार

मानसिंह बी ए ऐसा नाम चाहता हू । नाम सुनते ही म म पढने ही जानकारी मिल जाय कि आदमी पद वाला स्टटस वाला है। स्टटम देन वाली विद्या ही थी। अक्टूबर के महीने म धुन सवार हुई। राजस्थान आदि सब जगह विद्यालय भर्ती का काम जुलाई म बन्द हो जाता था। अब कहने लग भर्ती असम्भव है। बी ए बनने क लिए निकल भारत भ्रमण क लिए। दिल्ली का रामजस कालज भरती करने के लिए राजी हो गया। प्रारम्भिक फीसें वहा स आयें। फिर मासिक फीस कहा स आये। छात्रावास की म सिक फीस रसोई का भोजन खच असम्भव लग रहा था। पर सब कठन ईया पार करली।

रामजस कॉलिज से बी ए बन गया। मज स मानन्द हो गया। बीकानेर क छात्र एल एल बी करने के लिए सरकारी सहायता से बनारस जाया करते थ। म भी सरकार म वजीफे क लिए पहुचा जबाब मिला जाट क लिए एल एल बी बेकार है। मैन कहा चौधरी रामचन्द्रजी एल एल बी की है। जवाब मिला नियम का अपवाद है। राजनीतिक दबाव बहुत पड़ा था सब जट नेता, जाट एम एल ए आदि सबन कोशिश की थी।

शिक्षा निदेशक एक अंग्रेज थे

बी ए इंग्लिश नाम के एक अग्रेज शिक्षा निदेशक थे। अंग्रेज साधारणतया उदार मानव होते हैं। कठिनाईया सुनते हैं और सहायता करते हैं उस समय में अंग्रेजी ने ही हमेशा साथ दिया था बी ए इंग्लिश मेरी अंग्रेजी बोली से और व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित हुए। बीकानेर के वाल्टर नोबल्स स्कूल WALTER NOBLES SCHOOL में मुझे टीचर बना दिया। 'मालसिंह' नाम सुनकर सब ठाकुर लोग और ठाकुर छात्र मान कर चले कि यह व्यक्ति राजपूत है। यह बात 12 अगस्त 1938 की है।

अक्टूबर में दशहरे पर बीकानेर राज्य के सब ठाकुर बैठे हुए महाराजा गंगासिंह हमेशा और हर साल यह समान उनके बीच में आये और बोला सरदारो कोई कठिनाई है। एक सर्वं म गूंजती आवाज आई "अन्नदाता, घोड़ों में गधा मिल गया घोडों के लात मारता है।" नोबल स्कूल गधा स्कूल बन गई। जाट मास्टर है सरदारों के सपूतों के थप्पड़ मारता है, लात मारता है। महाराजा गंगासिंह सब सरदारों में सामने घोषणा की कि इंग्लिश सहाब आज ही बीकानेर से चले जायेंगे।

अनोखी घटना अभूतपूर्व घटना। एक माना जाना विद्वान अंग्रेज राजकुमार करणीसिंह का ट्यूटर, सीधा ब्रिटेन से बुलाया हुआ एक विशेषज्ञ। राजपूताना के बीस रजवाडा पर एक ऐजेंट था अबू में रहता था उस समय की व्यवस्था थी प्रत्येक देशी राज्य में प्रधान मंत्री अंग्रेज था। जहां प्रधान मंत्री भारतीय था, वहां एक अंग्रेज रेजिडेंट रहता था।

मेरे लिए भी हुक्म हो गया कि बीकानेर राज छोड़ दूं।

समझाया गया । महाराजा को गवाह दी कि यह घटना जाटों में फैल जायगी कि मार राज में एक या दो जाट ही तो पढ़ लिख हैं वह भी महाराज निकालता है । मुझे तो रख लिया । ग्लिन साहब को गवाह को समझ दिया, कि मेहनि व द इ ग्लिन साहब लज्जित होकर विलायत प्रयाण कर चल गये ।

पर कठिनाई यह आई कि ऐसा स्कूल देखा जाये जहां ठकुरों के लड़के भी हों रगढ़ ऐसा स्कूल था पर कुछ समय बाद ठाकुरों के लड़के आ गये । फिर सोच विचार के बाद पाया बीकानेर राज की सीमाओं पर जाट ही जमीन के मालिक है सीमाओं पर ठाकुर नहीं है । मुझे बहादरा भेज दिया गया जहा मैं आनन्द से आठ बरस रहा । रडक्ल साहब का खोला जाट होस्टल भी वहां था । उस समय मिडिल स्कूलों में ग्रेजुएट नहीं थे कहीं-कहीं थे, वे हैडमास्टर थे । पर मैं हैडमास्टर नहीं था । दसवी, बारह पास हैडमास्टर थे । मैं हैडमास्टर बनता तो ओफिस में कुर्सी पर बैठता ठाकुर कोई आता तो वह खड़ा रहता । उस समय मुखरामजी नाम के एक जाट तहसीलदार थे जी डी रडक्ल ने उन्हें तहसीलदार बनाया था । उन्हें हमेशा ब्रिटिश भारत के बोर्डर पर रखा ।

ताराचन्द जी पुलिस अफसर बने, उन्हें बाडर पर डाकुओं से भिड़ाया । मारे गये अनादि काल से लेकर 15 वीं शताब्दी तक शाकाम्बर और हिसार तक के क्षेत्र पर किसी बादशाह ने राज नहीं किया । यहां जाट लोग ग्राम्य गणतन्त्रों में रहते थे किसी का किसी पर राज नहीं था । 1465 के आस पास राव बीका ने इस प्रदेश पर राजपूती शासन कायम किया ।

18 फरवरी 1952

जो खेत किसान ने 1452 में खोया वह खेत किसान को 18

फरवरी 1952 का उस वापिस मिला। इस दिन जागीर उन्मूलन कानून लागू हुआ। जाटों की जो स्थिति बीकानेर में थी वही स्थिति जोधपुर और जयपुर में थी। 18 फरवरी 1952 को जाट ने माचे पर बठना शुरू किया। राजपूत के सामने जाट जमीन पर बठता था। 1926 में मेरा नाम मालसिंह हुआ पर राजपूत के सामने मैं मेरा नाम माला या मालाराम या मानिया बताया करता था 'इया' लगाने से या ला लगाने से नाम नपुंसक वाचक बन जाते हैं। जो स्थिति जाटों की वही अन्य परिश्रमियों की थी। हां ब्राह्मणों पर कृपा थी। उनके नाम आगे राम लगाया जाता था। यह भी पूरे ब्राह्मणों की बात थी।

राजपूती राज्यों में जाटों ने सुख की सांस ली 18 फरवरी 1952 में आशा बधी 1949 में जब सरदार पटेल ने जागीर उन्मूलन की घोषणा की। जवाहर लाल नेहरू की प्रेरणा और पटेल द्वारा की कारवाई ने राजस्थानी किसान को नारकीय जीवन से अपमानित और गरीबी के जीवन से निकाला।

सन 1500 तक जिस प्रदेश में जाटों के ग्राम-गणराज्य थे, उस प्रदेश में 1952 तक यह स्थिति थी। बीकानेर राज्य में 1940 तक कोई जाट सेना में नहीं था। द्वितीय महायुद्ध के 1940 पहला जाट सेना में भरती किया गया 1935 से पहले कोई जाट पुलिस में नहीं था, 1927 तक कोई जाट रेवेन्यू विभाग में नहीं था। 1934 तक कोई जाट जुडिशल विभाग में नहीं था फरवरी 18, 1952 से शुरू हुआ जाट जीवन, जो स्थिति बीकानेर के जाटों की थी, वैसी ही जयपुर स्टेट और जोधपुर स्टेट के जाटों की थी। जोधपुर स्टेट में अंग्रेज प्राइम मिनिस्टर था इसलिए उसने फौज पुलिस में जाटों को पहले विश्व युद्ध में भरती किया। मातहती और अफसरी के

प्रश्न को गुजरात से निपटे अंग्रेज़ परम्परा रजवाड़ों की फौजें कर्नल प्रपन्न करा दी। जनता का स्वाभिमान जोधपुर व उदयपुर का कारा से कायम रहा। जयपुर राज्य में अंग्रेज़ अफसर सब अन्य रंग न पुलिस में जाता था। बहुत भरती किया। महाराजा मानसिंह को बाहिर पढ़ने के लिए अंग्रेजों ने इंग्लैंड भेज दिया। जयपुर भी यह अंग्रेजों की तरह उदारवादी बना रहा। पर, बीकानेर का महाराजा गंगासिंह दोहरी नीति पर चलता था। राज्य स्तर पर उदारवादी स्थानीय स्तर पर पूरा, पक्का सामन्तवादी जातिवादी, पर तानाशाही प्रवृत्ति का होने के कारण, राजपूत भी महाराजा से त्रस्त रहते थे।

यहां जातियों की बात आई है। एक समय मैं सोचता था बुद्धि के विकास के साथ ज्ञान के प्रसार, प्रचार, रेडियो टेलिविजन के साथ, जातियों और स्थानीयता क्षेत्रीयता के बंधन ढीले पड़कर समाप्त हो जाएंगे। पर ऐसा हुआ नहीं, हो भी नहीं रहा है। शताब्दियों तक होगा भी नहीं, समाजवाद की स्थापना पर सोचा गया था कि सोवियत संघ से जातियां मिट जाएंगी, पर ऐसा हुआ नहीं। स्टेलिन काल के अनुशासन और प्रशासन के कारण सोवियत संघ में जातियां दबी रहीं। गोर्बाचोव की उदारता के और लोकतंत्र के कारण वहां जातीयता और क्षेत्रीयता उठ खड़ी हुई हैं। सोवियत संघ में एक सौ से ऊपर जातियां हैं। दोनों देशों में जातियों के बनने के कारण भिन्न-भिन्न हैं। सोवियत संघ में जातियां स्थानीयता और क्षेत्रीयता के कारण बनी हैं। भारत में जातियां विजयी और विजित के आधार पर बनी, प्रारम्भिक कार्यों के आधार पर बनी हैं संस्कार वंशगत होते हैं। संस्कार और स्वभाव अब इतने गहरे हो गए हैं कि, छुटकारा पाना कई दशाब्दियों की बात बन गई है।

जातिया और काम धधे

काम धधे भी जातियो से बध गए। बनिया सेठ तो व्यापार ही करेगा। सेठ शब्द बना है श्रेष्ठ से। राजपूत न राज किया है और अब भी पुरानी बातें आंशिक रूप से चालू हैं। राजपूत को शास्त्रीय भाषा में क्षत्रिय कहते हैं। क्षेत्र का मालिक। ब्राह्मण तो ब्रह्मा की सतान। भगवान की स्वयम्‌ का स्थान। ब्राह्मण का पडित और महाराज भी कहते हैं। शेष सारे शुद्र हैं अर्थात क्षुद्र हैं। अर्थात छोटे हैं, मामूली हैं। महत्वहीन हैं। एक पाचवा वर्ण भी है। वह है जाट। यह पाचवा वर्ण है पुराने चार वर्णो म जट फिट नहीं बठता इससे पाच वण है। ब्रिटिश शासन के कारण और आधुनिकता के कारण धधा का बधन तो ढीला पड गया है पर कारीगर जातिया अब भी धधों स बधी हुई है। कही–कही अ तर्जातीय विवाह होते हैं पर वह उस जाति की हो जाती है जिस जाति का पति है बच्चे भी उसी जाति के जिसका पिता है।

सो जातिया हैं और रहेगी।

यह है मेरी कहानी और मेरा चितन।



विश्व इतिहास की रूप रेखा

ई पूव 6000 वप सिंध नदी की घाटी म मनुष्य बसने लगे। कच्ची ईंटे बनने लगी थी। भेड बकरी का पालन शुरु हुआ। गेहूं और जौ की खेती शुरु हुई ताबे को पिघला कर बतन बनाने का काम शुरु हुआ।

ई पूर्व 5000 वर्ष फल के पेड उगा। लगे। कई उगाने लगे। मिट्टी के बर्तन, पशुपालन, कहीं–कहीं खेती करने लगे। मिश्र म बस्तियां बसने लगी।

ई पूव 4000 वर्ष कुम्हार के चाक का आविष्कार हुआ सिंधु की घाटी में मनुष्य बाण का आविष्कार हुआ। मिट्टी के बर्तन बनाने की भट्टी बनी ताबे को पिघलाने का काम शुरू हुआ। खेती का काम आगे बढ़ा।

3500 ई वर्ष पूव लिखाई शुरु हुई। कुम्हार का चाक और सुधरा।

3000 ई वर्ष पूव वाशा बनने लगा। पहियें की गाडी बनन लगी।

2850 ई वप पूव चीन म सम्य जीवन शुरू हुआ।

2650 ई वर्ष पूर्व मिश्र में पिरेमिड बन।

2500 ई वप पूर्व मिश्र में गिनती शुरू हुई। चाद से हिसाब रखने का कैलेण्डर बना। गोल चक्कर में 300 डिग्री हाती है, यह जानकारी मिली। 60 मिनट का घटा बनाया गया। एक मिनट में 60 सेकड बनाए गए। एक वप में 365 दिन बन मिश्र में कागज का प्रयाग होने लगा। चीन में यह निश्चित किया गया कि दिन रात कब बराबर होत हैं।

2000 ई वर्ष पूव ग्रीस में सभ्यता का विकास हुआ। भारत में आय लोग बसने लगे वदिक सभ्यता का प्रचार शुरू हुआ ऋग्वेद बना।

1580 ई वर्ष पूव क्रीट की सभ्यता शिखर पर पहुची।
1500 ,, ग्रीस की सभ्यता फली फूली।
1400 , क्रीट की सभ्यता का पतन हुआ।
1362 ,, मिश्र में विद्रोह हुआ।
1345 ,, मिश्र ने अपनी खोई सत्ता फिर प्राप्त की
1027 , चाऊ वश चायना में शुरू हुआ।
1013 ,, फिलिस्तीन में इजरायल का उदय।
1000 , भारत में रामायण महाभारत का समय।
753 , रोम की स्थापना
490 ,, मराथोन का युद्ध यूनान ने फारिस को हराया यह ससार का पहला युद्ध था

483 ई वप पूव बुद्ध महाराज की मृत्यु

425 ई० वर्ष पूर्व इतिहासकार हीरो डोटस की मृत्यु
399 „ सुकरात को मृत्यु दंड दिया गया
347 „ प्लेटो की मृत्यु
336 „ अलेक्जंडर ग्रीस का बादशाह बना
334 , अलेक्जंडर ने फारिस को जीता
332 „ अलेक्जंडर ने फारिस को फिर हराया
326 „ अलेक्जंडर ने भारत के पुरुष को हराया
323 , अलेक्जंडर की मृत्यु
321 „ भारत में मौर्य साम्राज्य की स्थापना
321 „ विद्वान और इतिहासकार अरिस्टोटल की मृत्यु

274 ई० वर्ष पूर्व अशोक भारत का सम्राट बना

214 „ विश्व प्रसिद्ध चीन की दिवार बनी
213 , चीन के प्राचीन ग्रंथ जल गये
196 , रोम ने ग्रीस को जीता
124 „ नागरिक सेवा की प्रशिक्षण के लिए चीन में कालिज खुला

55 ई० वर्ष पूर्व सीजर ने ब्रिटेन को जीता

46 ई० वर्ष पूर्व सीजर ने रोम के बादशाह ने, कैलण्डर में अन्तिम सुधार किये इस कैलेण्डर का नाम जूलियन कैलेण्डर है। इस सुधार को पसंद नहीं किया गया।

44 ई० वर्ष पूर्व में सीजर को कतल कर दिया।

4 ई० वर्ष पूर्व में जीजस क्राइस्ट का जन्म हुआ।

जानने की बात है कि ईस्वी सन का इससे संबंध नहीं है। ईस्वी पूर्व 4 का दिनांक विवादास्पद है।

ईस्वी सन जनवरी 1 से प्रारम्भ हुआ माना जाता है। उस

दिन रोम नगर की स्थापना हुई थी। राम नगर 1991 वर्ष पुराना है। औद्योगिक क्रांति इगलैंड म शुरू हुई जब पहला मशीन से चलने वाला कारखाना खुला। यह कारखाना 1760 म खुला।

अमरीका न यानि यू एस ए न अग्रेजो से मुक्ति की घोषणा 1776 म की।

जुलाई 14 1789 म फ्रास म क्राति हुई।

10 अगस्त 1792 मे फ्रास म बादशाहत हटा दी गई। और दो वर्ष तक अधिनायकवाद रहा।

फ्रास के लियोन नगर मे 1831 म मजदूरो न हडताल की। ससार के इतिहास मे पहली कम्यूनिस्ट लीग 1847 से 1852 तक रही।

कम्यूनिस्ट पार्टी का मनीफेस्टो ओफदी कम्यूनिस्ट पार्टी 1848 म प्रकाशित हुआ।

1848 मे फ्रास म फिर क्राति हुई। परिस मे मजदूरो ने क्रान्ति की। आस्ट्रिया की राजधानी विएना म और जर्मनी की राज धानी बर्लिन म क्रातिया हुई।

1859 मे डार्विन की पुस्तक आरिजिन ओफ स्पीसीज' प्रका शित हुई।

1867 म कॅपीटल नामक पुस्तक प्रकाशित हुई। यह पुस्तक मार्क्स द्वारा लिखी गई। इसी पुस्तक मे साम्यवाद नामक विचार धारा का वर्णन है।

धर्मो की सख्या 1986 मे

1	इसाई	—	एक अरब
2	इसलाम	—	साठ करोड
3	हिन्दु धर्म	—	पचास करोड
4	बौद्ध	—	छब्बीस करोड

ईस्वी 1 से

6 ई समार में पहली वार चीन ने सिविल सर्विस की परीक्षा शुरू की।

29 ई क्राइस्ट को ईसामसी को मृत्यु दड दिया गया।

64 ई रोम नगर पूरा जल गया।

70 ई रोम के सम्राट ने यहूदी बस्ती जरूसलम का नष्ट कर डाला। इतिहास मे यह पहली घटना है जब धर्म के कारण इतने बड़े नगर को नष्ट किया गया।

97 ई चीनी सेना ने फारिस की खाड़ी के देश को लूटा यह इतनी लम्बी दूरी का पहला हमला है। चीन और फारिस के बीच सैकड़ा किलोमीटर की दूरी है।

220 ई चीन मे ग्रह युद्ध छिड़ गया।

320 ई भारत मे गुप्तवश का प्रारम्भ। यह दिनाक याद रखना चाहिए। हिदुओं का अपने देश में केवल यही गुप्तकाल ही हिंदुओं का राज हुआ है, अशोक महान बौद्ध था। 712 से मुसल-मानों हमले शुरु हो गए।

570 ई मुहम्मद स हब का जन्म, मुहम्मद साहब ने 622 से इस्लाम का प्रचार शुरू हुआ।

बौद्ध धर्म ईस्वी पूर्व में चौथी सदी से शुरु हुआ ईसाई

4 ई पूर्व से क्राइस्ट का जन्म हुआ।

622 ईस्वी से मुसलमानो सन शुरू हुआ। अब चौदहवी सदी चल रही है।

632 ई मोहम्मद साहब की मृत्यु। उनके बाद अबुबकर पहला खलीफा हुआ। मोहम्मद साहब का पहला उत्तराधिकारी हुआ

636 ई मुसलमानों ने इसाई बस्ती जरूसलम ले लिया इति-

नाम से धर्म के कारण होने वाला यह पहला हमला था धर्म के नाम से हमले मुसलमानों ने ही शुरू किए।

641 ई मुसलमानों ने फारिस ले लिया।

643 ई मुसलमानों ने सिकन्दरिया ले लिया।

718 ई मुसलमानों का योरप के किसी देश पर पहला हमला यह हमला कोस्टटी नापल पर था, हमला असफल हुआ।

732 ई मुसलमानों ने योरप के देश स्पेन पर हमला किया। इतिहास के अनोखे हमलों में यह हमला है। सैंकड़ों किलोमीटर का समुद्र रूमसागर को पार करके स्पेन पर हमला बहुत ही अनोखी बात है। स्पेन एक सैनिक ताकत थी और हमलावर ताकत थी, स्पेन ने दक्षिणी पर कब्जा किया, स्पेनी साम्राज्य कायम किया।

800 ई इतिहास प्रसिद्ध सम्राट चार्ल्स मेन रोम का सम्राट बना यह सम्राट होली रोमन सम्राट कहलाता था। पवित्र रोमन सम्राट।

814 ई चार्ल्स मेन की मृत्यु।

827 ई मुसलमानों ने इटली के एक राज्य सिसिली पर हमला कर दिया।

840 ई मुसलमानों ने दक्षिणी इटली पर कब्जा कर लिया।

868 ई विश्व की पहली छपी हुई किताब यह चीन में छपी।

982 ई ग्रीनलैंड नामक नये देश का पता लगा।

1066 ई फ्रांस के बादशाह का इंगलैंड पर कब्जा यह पहली और अंतिम घटना जब इंगलैंड पर विदेशी शासन कायम हुआ। हमलों की उलट फेर से इंगलैंड हमेशा मुक्त रहा है।

1161 ई चीन में पहली बार बारूद का प्रयोग हुआ।

1206 ई चंगेज खां मंगोल लोगों का बादशाह बना, पहली बार मध्य एशिया को रौंदा, भारत में आया था।

1215 ई. इ गलैंड की जनता न बादशाह से अधिकार लेलिय पर बादशाह कायम रहा। लोकतन्त्र 1215 से ही चालू माना जाता है। सारे वैधानिक अधिकार एक सत्ता के प स हो, पर उनका प्रयाग समय-समय पर चुनी गई सरक र द्वारा किया जाय। एसी प्रणाली हमारे यहाँ भी है।

1260 चीन मे कुबलेखा का राज कायम हुआ।

1291 स्वीजरलण्ड मे सघात्मक शासन कायम हुआ शासन की सघ त्मक प्रणाली यही से च लू हुई भारत म सघात्मक प्रणाली है।

1338 इ गलड और फ्रास के बीच म सौ वर्षी युद्ध आरम्भ।

1348 यारप म काली बिमारी अर्थात बिमारिया म काली बामारी पहली है जो दूर दूर क देशा म फैली थी।

1362 अग्रेजी भाषा पहली बार सारे इ गलड की भाषा मानी गई। आज यह विश्व भाषा है।

1363 तैमूर न एशिया को जीतन क हमले शुरु किये।

1381 इ गलड म किसानो का विद्रोह। इतिहास म किसाना द्वारा किया गया यह पहला विद्रोह है। मजदूर वर्ग तो अस्तित्व म 1760 म आने लगा। तो कहना चाहिए किसाना का यह विद्राह समाज का पहला विद्रोह है जा किसी सत्ता विशेष के विरुद्ध किया गया हा।

1398 तमूर ने भारत पर हमला किया। मुसलमाना द्वारा किया जान वाला यह दूसरा हमला था।

1431 जोन ओफआर्क नामक महिला को जादूगरनी मानकर समाज के गण्य मान्य व्यक्तियों के आदेश स मार डाली गयी।

1453 तुर्क लोगो ने पहली बार यारप के नगर कोस्टेटीनोपल पर हमला रोम साम्राज्य के पूर्वी भाग पर तुर्की का कब्जा हुआ।

1453 योरप का सौ वर्षीय युद्ध समाप्त हुआ।

1455 इंगलैंड में गुलाबों फूलों का युद्ध समाप्त हुआ।

1468 आधुनिक स्पेन की स्थापना हुई।

1485 इंगलैंड में ट्यूडर काल की स्थापना।

1492 कोलम्बस ने अमेरीका ढूंढा छुपी हुई आधी दुनिया को खोजा।

1497 न्यू फाउंड लैंड नाम के देश का पता लगा।

1498 वास्को डी गामा नामक पहला योरप निवासी भारत आया।

1517 मार्टिन लूथर ने इसाई धर्म को सुधारने का आंदोलन शुरू किया। इसाईयों की दो शाखायें हुई। रोमन कैथोलिक और सुधारक लोग रिफार्मेशन।

1521 तुर्क लोग मध्य योरप में भी पहुंचे। उन्होंने मध्य योरप में बेलग्रेड नामक प्रसिद्ध नगर पर कब्जा किया।

1526 भारत की प्रसिद्ध एतिहासिक लड़ाई पानीपत की लड़ाई जो बाबर ने जीती और भारत में मुसलिम राज की नींव डाली

1542 पुर्तगाली लोग जापान पहुंचे आधी पृथ्वी को पार किया। 13 हजार किलोमीटर का समुद्री मार्ग पार किया।

1556 अकबर मुगल सम्राट बना। भारत का दूसरा स्वर्ण युग शुरू हुआ।

1558 एलिजाबेथ प्रथम इंगलैंड की महारानी बनी।

1577 इतिहास में पहली बार बिना पीछे मुड़े सीधा चल कर अपने स्थान पर आने वाला पहला व्यक्ति था ड्रेक। तीन वर्ष लगे। 1577 से 1580 तक तीन वर्ष लगे। अज्ञात समुद्र से

तीन सप्ताह नगत है हवाई जहाज म ठहर-ठहर उडने में तीन दिन लगते है। लगातार उडो से कुछ घट लगते है। यह चार सौ वर्ष की कमाई है।

1552 वतमान कलेण्डर बना। कैलण्डर का पूरा होने मे एक सौ वर्ष लग।

1558 स्पेन का समुद्री जहाजो द्वारा किया गया स्पेनी आक्रमण को इगलैण्ड ने हराया। इगलैण्ड ऐसा देश है जो विदेशी राज से हमेशा बचा रहा।

1600 ईस्ट इडिया कम्पनी बनी जिसने भारत पर राज कायम किया और भारत पर स्वर्ण युग होने की नीव पडी। भारत एक हुआ और शाति के युग म आगे बढा।

1602 ईस्ट इडिया कम्पनी की सफलता को देख कर डच लोगों ने भी एक कम्पनी बनाई।

1603 इगलैड और स्काटलैंड दोनो मिलकर एक देश बन गये।

1628 अग्रेज लोगो न अपने बादशाह को एक निवेदन पत्र दिया जिसम उन्होने अपन राजनीतिक अधिकारो का उल्लेख किया ये अधिकार बादशाह न स्वीकार कर लिए। ब्रिटिश लोकतन्त्र की दशा म यह बडा कदम था।

1642 इगलैड म गृह युद्ध शुरू हुआ जो सात वर्ष चला।

1649 म बादशाह को फासी दी गई और बादशाही हटा दी गई। क्रोमवल नाम का व्यक्ति पहली बार बादशाह की जगह काम करने लगा। वैधानिक सम्राट बना। असली राज पार्लामेंट का था।

1660 ब्रिटन म ग्यारह वर्ष के बाद बादशाही फिर बनी।

1665 लंदन में महा प्लेग फैली

1666 लंदन का अग्निकांड

1688 इंगलैंड में महाक्रांति गलोरियस रिवा ल्युशन जिसमें लम्बे संघर्ष के बाद जनता की जीत हुई। अन्तिम ढंग से संसदीय प्रशासन कायम हुआ।

1696 पीटर दी ग्रेट रूस का जार बना

1721 रोबर्ट वालपोल इंगलैंड का प्रथम प्रधानमंत्री हुआ

1739 फारिस के नादिरशाह ने दिल्ली को रौंद डाला

1740 फ्रेडरिक दी ग्रेट प्रशा का बादशाह बना

1751 भारत में क्लाइव ने अर्काट नामक जिले को ले लिया

1756 योरप का सप्त वर्षीय युद्ध शुरू हुआ

1757 भारत में अंग्रेजी राज की स्थापना की नींव पड़ी। क्लाइव ने बंगाल के नवाब को हराया और कम्पनी का प्रशासन कायम किया। रेवेन्यू लेने लगा

1760 भारत में अंग्रेजी कम्पनी ने फ्रांसीसी कम्पनी को हरा दिया।

1776 यू एस ए यानि अमरीका ने अंग्रेजों से मुक्त होने की घोषणा की।

1789 संसार में पहली बार फ्रांस में शांतिपूर्ण क्रांति हुई बादशाह हटा, संसदीय सरकार बनी।

1792 फ्रांस एक गणतंत्र बना। पहली बार एक बड़ा देश गणतंत्र बना, ब्रिटेन और फ्रांस दोनों ही लोकतंत्र हैं। लेकिन ब्रिटेन राजतंत्रीय लोकतंत्र है और फ्रांस गणतंत्रीय लोकतंत्र है राजा बिना का राज रिपब्लिक गणतंत्र कहलाता है ब्रिटेन गणतंत्र रिपब्लिक नहीं है फ्रांस रिपब्लिक है।

1807 नेपोलियन सारे यारप का शासक बना

1812 नपोलियन पहली बार हारा, मास्को मे।

1815 वाटरलू की लडाई म नेपोलियन हारा, पकड लिया गया और यारप स बहुत दूर एक हजार किलोमीटर दूर भेज दिया गया। नेपोलियन वाटरल की हार एक कहावत बन गई है, म पको वाटरलू का म मना करना पड सकता है। उसका वाटरलू हो गया।

1833 मजदूरा के हित म पहला कानून बना। यह ब्रिटन मे बना। नाम है फक्टरी एक्ट 1833

1837 महारानी विक्टोरिया ब्रिटेन की महारानी बनी, बहुत लम्बा राज किया।

1848 मार्क्स और एंजल्स ने कम्युनिस्ट मनीफेस्टो नामक डाकूमेंट प्रकाशित किया। यह फस्टो ही साम्यवादी दर्शन का आधार अध्ययन बना।

1851 आस्ट्रेलिया म सोन भडार मिले।

1862 बिसमार्क जर्मनी का चांसलर बना।

1865 म दासप्रथा बद हुई।

1869 पूर्व म आन के लिए यारप निवासियो को सैकडो किलोमीटर की कमी हुई, इसस पहले अफ्रीका के दक्षिणी किनारे के पास से आना पडता था।

1870 ईसाइया न मिलकर यह निणय लिया कि पोप कभी गलती नही करता।

1871 दुनिया म पहली बार तय हुआ कि मजदूरो का यह हक है कि वे ट्रेड यूनियन बनाए, कानून भी बन गया।

1886 अफ्रीका के ट्रासवाल म सोना मिला।

1906 रूस म ससद स्थापित हुआ।

1911 चीन में क्रांति हुई बादशाह हटा, गणतंत्र बना।

1914 दुनिया के इतिहास में पहली बार विश्व युद्ध हुआ।

1917 रूस में साम्यवाद की स्थापना हुई कार्ल मार्क्स का दर्शन शास्त्र लागू हुआ।

1919 फासिस्ट दल की इटली में स्थापना।

1920 विश्व में पहली बार विश्व संस्था बनी, नाम था लीग ऑफ नेशन्स।

1922 इटली में फासिस्टवाद की सरकार बनी।

1923 टर्की में बादशाह हटा, गणतंत्र बना, किसी मुस्लिम देश में यह पहला गणतंत्र था, कमाल पाशा गणतंत्र का नेता थे।

1924 दुनिया में पहली बार मजदूर सरकार बनी, यह थी ब्रिटेन में। इसीलिए ब्रिटेन लोकतंत्र का आदर्श माना जाता है। भारतीय नेताओं ने ब्रिटेन से प्रेरणा ली और लोकतंत्र के लिये संघर्ष छेड़ा। भारतीय छात्र ब्रिटेन पढ़ने जाते थे। भारतीय स्कूलों में ब्रिटेन का इतिहास पढ़ाया जाता था। ब्रिटेन से हमने आधुनिकता सीखी और लोकतंत्र सीखा।

1924 जनवरी 21, 1924 को लेनिन की मृत्यु।

1927 दुनिया में पहली बार योरप से अमरीका तक हवाई जहाज की उड़ान हुई।

1933 हिटलर जर्मनी का प्रधानमंत्री बना। दूसरे विश्व युद्ध की नींव पड़ी। दूसरा विश्व युद्ध सितम्बर 1939 से 1945 तक होता रहा।

1938 दूसरे विश्व युद्ध की तैयारी में और सोवियत संघ के साम्यवाद को जड़ से उखाड़ने के लिए म्यूनिख समझौता किया गया।

इगलैंड फास, जर्मनी और इटली, ये चार देश मिले। ध्यान देने की बात है रूस को नष्ट करने के लिए ब्रिटेन और फ्रास का लोकतन्त्र मिला इटली और जर्मनी के फैसिस्टवाद से। फिर भी साम्यवाद कायम है।

1939 सितम्बर 3, विश्व युद्ध छिड़ा दूसरा विश्व युद्ध ध्यान देने की बात हैं, तीसरा विश्व युद्ध नही होगा।

1941 हिटलर ने समझौता तोड़कर स्टलिन पर हमला किया

1945 अप्रैल 12 को राष्ट्रपति रूज वेल्ट मरा। रूज वेल्ट चार बार राष्ट्रपति बना।

1945 मुसोलिनी और उसकी मिसटरस को जनता ने मार डाला। यह 28 अप्रैल की बात हैं।

1945 अप्रैल 30, को हिटलर ने अपनी मिसटरस के साथ रसोई घर में छुपकर आत्म हत्या की।

1945 मई 8 को जर्मन सेना ने हथियार डाल दिए।

1945 जून 26 को राष्ट्र संघ के चार्टर पर हस्ताक्षर हुये।

1946 राष्ट्र संघ की जनरल असेम्बली की मिटिंग न्यूयार्क में अक्टूबर 23 को हुई। ध्यान देने की बात हैं कि इस पहली मिटिंग का दिनाक कई जगह 24 अक्टूबर भी है। पूर्वी देशों में जैसे चीन जापान में 24 अक्टूबर है और पश्चिमी योरप और अमरीका में 23 अक्टूबर है, पूर्वी देशों मे सूरज पहले निकलता है। भारत में आसाम में सूरज बीकानेर की तुलना में एक घंटा पहले निकलता है।

1947 अगस्त 15 को भारत को आजादी मिली।

1949 चीन आजाद हुआ।

1953 74 वर्ष की उमर में स्टलिन मरा। मरने का दिनाक 5 मार्च हैं।

1953 माच 29 को एवरेस्ट पहाड़ पर चढ़ने म सफल।
1955 अप्रैल 18, आइन्सटीन की मृत्यु।
1956 पाकिस्तान न इस्लामिक स्टेट होने की घोषणा की।
1956 कनल नासर मिस्र का राष्ट्रपति बना।
1956 नासर न स्वेज का राष्ट्रीयकरण किया।
1957 घोलड म कम्युनिस्ट सरकार बनी।
1957 भू उपग्रह सोवियत सघ न छोड़ा।
1958 अमरीका न भू उपग्रह छोड़ा।
1959 फिडल क टरो क्यूबा का राष्ट्रपति बना।
1961 भारत न गोआ, दामन और दीव पूर्तगाल स छुड़ाए।
1963 प्रेजीडेंट कैनेडी की हत्या।
1964 प्रधानमन्त्री नेहरू की मृत्यु मई 27
1964 ख्रुश्चेव हटा।
1964 जनवरी 24, चर्चिल की मृत्यु।
1968 म च 5 मार्टिन लूथर किंग की हत्या, प्रति क्रिय वादियों ने हत्या की।
1969 जुलाई 21 अमरीकी निव सियों ने चांद पर पर रखे
1969 सितम्बर 4 राष्ट्रपति हो ची मिन की मृत्यु, 79 वर्ष की आयु म।
1970 बरटरड रसल 97 वर्ष के होकर मरे फरवरी 3
1970 प्रेजीडेंट नासर 52 वर्ष की आयु म सितम्बर 29 को मरे।
1970 फ्रांस का राष्ट्रपति चारलस डिगोल 79 वर्ष की आयु मे मरे।
1971 26 माच को शेख मुजीबर रहमान ने बंगलादेश की आजादी की घोषणा की।

1971 चीन राष्ट्रसंघ का सदस्य बना।

1971 पाकिस्तान ने पश्चिम से भारत पर हमला किया।

1971 भारत ने बंगला देश को मान्यता दी।

1973 अफगानिस्तान में बादशाही खतम हुई। वह गणतंत्र बना।

1973 इजराइल और मिश्र में युद्ध छिड़ा।

1975 आठ वर्ष के बाद सुएज नहर फिर खुली।

1976 भारत और सोवियत संघ ने मित्रता दोहराई इरान में भूकम्प में 1000 आदमी मरे भाओ की मृत्यु हुई।

1979 इरान को इस्लामिक गणतंत्र घोषित किया गया।

1980 मई 4 को मार्शल टीटो की मृत्यु-युगोस्लाविया राष्ट्रपति।

भास्कर-1 नवीं सदी का भारतीय खगोल शास्त्री

भास्कर-2 बारहवीं सदी का गणितज्ञ और खगोल शास्त्री

कोलम्बस-1446-1506 अमरीका ढूंढी 1492 में कन-फ्यूसस-551-449 ई॰ पूर्व-चीनी संत और दार्शनिक कनफ्यूसवाद का संस्थापक दाते-1265-1321 इटली का महान कवि डारविन चारलस 1802-1882 प्राकृतिक छटाई का खोजकर्त्ता 'दी ओरिजिन ओफ स्पीसीज' नामक पुस्तक का लेखक।

फाहीयान-चीन का पहला भारत आने वाली चीनी यात्री। चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के समय में आया था।

फ्लोरेंस नाइटेंगिल उपनाम "हाथ में लैंप रखने वाली महिला अंग्रेज नर्स जिसने क्रिमिटान युद्ध मे 1857 में रात दिन सेवा की।

गैलिलियो 1564-1642, टेलिस्कोप का आविष्कारक

ह्वान साग चीनी तीर्थ यात्री जा सातवी सदी म भारत आया
राजा र म मोहन राय 1828 से 1835 तक और बाद म भी सती प्रथा के विरुद्ध आंदोलन किया। ब्रह्म समाज का संस्थापक
मुग्गुत–तीसरी सदी का भारतीय सर्जन।
जोन आफ आर्क–1442-1431, फ्रांसीसी वीरांगना जिसने सेना को प्रेरित किया और फ्रांस से अंग्रेजों को निकाला उसे दुश्मनों समझा गया और जीती को जला दिया गया।
कबीर–हिन्दु और मुसलमानों को एक समझने वाला और मेल कराने वाला कवि।
कल्हन–ग्यारवी सदी का इतिहासकार और कवि। 'राजतरंगिनी' नामक पुस्तक का एक लेखक।
कौटिल्य–कूटनीतिज्ञ और राजनीतिज्ञ था, और चन्द्रगुप्त मौर्य का सलाहकार था।
कुमारिल भट–आठवी सदी का हिन्दु धर्म का प्रचारक।
कृष्णदेव राय– 1509–1529, दक्षिण भारत में विजय नगर का राजा। दक्षिण भारत का यह अंतिम बड़ा हिन्दू राजा था।
कमाल अटातर्क 1923–1928 आधुनिक तुर्की का निर्माता, 1912 में उसने अंग्रेजो को निकाल दिया। 1922 में ग्रीक लोगों को तुर्की से निकाल दिया 1923 से 1928 तक टर्की का प्रेजीडेंट रहा।
लक लड जाहन–1167–1216 मगना कार्टा नामक संवधानिक दस्तावेज उसी के हाथों मजूर हुआ था। कमजोर राजा था संसद के दबाव में आ गया।
मकीयावेली–इटली का सोलहवी सदी के आरम्भ का कुटनीतिज्ञ 'प्रिंस' नामक पुस्तक का लेखक 'प्रिंस नामक पुस्तक संसार में पहली पुस्तक है जो कूटनीति पर लिखी गई।

मगेलन–उस पहली टोली का नेता था जिसने 1519 में पृथ्वी का पहली बार चक्र लगाया। अटलांटिक महासागर से पैसिफिक महासागर में जाने का रास्ता ढूंढा।

मनु–मनु स्मृति का लेखक मनुस्मृति ना थी सदी में लिखी गई

मार्टिन लूथर–1483-1546, ईसाई धर्म की कुरीतियों को हटाने के प्रयत्न में रिफार्मेशन यानी प्राटेस्टेंट धर्म चलाया।

कार्ल मार्क्स–1818-1883, साम्यवाद का संस्थापक

मैक्समूलर–संस्कृत भाषा की खोज की।

महात्मा गांधी–1869 1948, बुद्ध महाराज के बाद महात्मा गांधी नैतिक क्षेत्र में अद्वितीय हुए है 30 जनवरी 1948 में उनकी हत्या कर दी गई। किसी कट्टर हिन्दुओं ने की, पाकिस्तान को कुछ रुपया देने की बात थी। गांधीजी ने कहा रुपया देना चाहिए अपने धर्म का शत प्रतिशत पालन कर्ता, अन्य धर्मों का शत प्रतिशत आदर कर्ता होने का यह एक और उदाहरण है।

गुरुनानक–1469-1538 सिख धर्म के संस्थापक।

पाणिनी–प्राचीन का. संस्कृत का व्याकरणाचार्य।

पुलकेसिन द्वितीय–1608-1642, दक्षिण में चालुक्य वंश सब से शक्तिशाली सम्राट।

रूसो–1512-1678 दो किताबें लिखी जिनकी प्रेरणा से फ्रांस में 1789 की क्रांति और पहले दूसरी क्रांतियां हुई।

शेक्सपियर–1564-1616, इंगलैंड का सबसे बड़ा कवि और नाटककार।

शिवाजी–1627 में जन्मे, औरंगजेब बादशाह से लड़ते रहे।

सनयत सेन–1911-12 में चीनी गणराज्य के संस्थापक।

टोडरमल—अकबर का मानमंत्री और नवरत्नों में से एक नव रत्न।

तुलसीदास—अकबर के समकालीन।

वराहमिहिर—505 587 बडा खगोल शास्त्री विक्रमादित्य के नवरत्नों में से एक।

राकेश शर्मा—अंतरिक्ष में जाने वाला पहला भारतीय अप्रेल 3 1984।

1923 जर्मनी में मजदूरों की पहली हडताल।

1923 ग्रीस में मजदूरों की पहली हडताल।

1923 बलगेरिया में फासिस्ट विरोधी विद्रोह।

1923 टर्की को गणतंत्र घोषित किया गया।

1923 नोर्वे में कम्यूनिस्ट पार्टी बनी।

1924 कानपुर में कम्यूनिस्टो पर केस चला यह पहली बार का केस है।

1924 अखिल भारतीय टरेड यूनियन की स्थापना।

1920 21, कम्यूनिस्ट अध्ययन मंडल भारत में पहली बार बना।

1919 प्रगतिशील बादशाह अमीर अमानुल्ला अफगानिस्तान का बादशाह बना।

1928 सूती कपडो के कारखानों में बम्बई में हडताल।

1928 सोवियत यमन संधि व्यापार और मित्रता की।

1928 मजदूरों और किसानों की भारत में पहली कानफरेंस

1939 सितम्बर 3, जर्मनी ने पोलैंड पर हमला विश्व युद्ध छिडा।

अगस्त 14 1941, अटलांटिक चार्टर पर हस्ताक्षर हुऐ।

सितम्बर 24, 1941, सोवियत संघ अटलांटिक चार्टर में शामिल।

अप्रैल 20, 1942, मास्को युद्ध।

दिसम्बर 7, 1941, जापान ने USA पर हमला किया।

जनवरी 1, 1942, Signcing of United Natious declaration

स्टलिन ग्राड का युद्ध जुलाई 17, 1942, फरवरी 1943

जून 6, 1944, मित्र सेना फ्रांस में उतरी।

दूरदर्शन भारत में सितम्बर 1959 में आया।

रेडियो भारत में 1927 में आया। 1957 में रेडियो नाम बदल कर आकाशवाणी कर दिया गया।

सभ्यता और संचार की प्रगति-बड़े बड़े स्टेशन।

35,000 ई पूर्व में मनुष्य आपस में बोलने लगे।

22,000 ,, गुफाओं में चित्रकारी शुरू हुई।

4 000 ,, मिट्टी की तख्तियों पर लिखाई शुरु हुई।

3,000 ,, मिश्र देश में पूर्वजों के नाम कायम रखने की प्रथा शुरु।

2,000 ,, भारत में सिंध नदी की घाटी में लिखाई और मोहर।

18,000 ,, मिश्र में वर्णमाला शुरू हुई।

1000 ,, ग्रीस में लिखाई शुरू।

450 ई पूर्व ग्रीस के लोग कबूतर से सदेश भेजने लगे।

130 ई पूर्व मिश्र के अलेक्जडरिया में संसार का पहला पुस्तकालय बना।

ईस्वी सन्

350 ई. तस्वीरों की जगह किताबों में लिखाई शुरू।

600 सबसे पहले चीन में किताब छपाई शुरू हुई। नाट हाथ की छपाई शुरू हुई। मशीन का प्रश्न ही नहीं है।

676 अरब लोगों ने और फारसी लोगों ने कागज और स्याही का प्रयोग शुरू किया।

1200 कागज और स्याही योरप पहुँचे।

1562 इटली में पहला समाचार पत्र शुरू।

1594 जर्मनी में पहला मैगजिन पत्रिका छपा।

1639 यू एस ए अमरीका में छपने की मशीन बनी।

1642 जोड़ने की मशीन बनी।

1835 टेलीग्राफ-तार शुरू हुआ।

1866 समुद्र पार तार जाने लगा।

1876 टेलीफोन का आविष्कार।

1947 ट्रांजीस्टर का आविष्कार।

1957 अक्टूबर 3, पृथ्वी के चारों ओर घूमने वाला उपग्रह बना और घूमने लगा। उन्हीं नियमों के अनुसार जिन नियमों से अंतरिक्ष में अन्य ग्रह उपग्रह सूरज, चाँद, तारे घूमते हैं।



सतयुगी लेखक

क्लासीकल लेखक

1 ईसप– कथाकार 620–560 ई पूव । इसकी उपदेशात्मक कथायें प्रसिद्ध हैं।

2 अरिस्टोटल– 384–322, यूनानी दार्शनिक

3 अश्व घोष-प्रथम सदी ईस्वी, बुद्ध चरित का लेखक सस्कृत का कवि

4 बाण-सातवी सदी ईस्वी सस्कृत का लेखक हर्ष चरित, कादम्बरी आदि का लेखक।

5 भद्र बाहु–ईस्वी पूव चौथी शताब्दी, कल्प सूत्र का लेखक रीति रिवाजों पर एक पुस्तक लिखी।

6 भैरवी–छठी सदी ईस्वी, स स्कृत कवि।

7 भट्टी-सातवी सदी, स स्कृत कवि रामकथा लेखक।

8 भर्तरी हरी–स तवी सदी, सस्कृत कवि भक्ति शतक।

9 भास–पाचवी सदी, संस्कृत उपन्यासकार।

10 भवभूति–आठवीं सदी, संस्कृत नाटककार।
11 बिल्हण–बारहवीं सदी संस्कृत कवि।
12 एपी क्यूरस–342–270 ई पूर्व, ग्रीक दार्शनिक।
13 हेरोडोटस–485–425 ईस्वी पूर्व, ग्रीक इतिहासकार विश्व का पहला इतिहासकार जिसने इतिहास को एक विषय मानकर घटनायें लिखी।
14 होमर–700 ई पू यूनानी कवि और इतिहासकार।
15 जयदेव–12वी सदी "गीत गोविन्द का" लेखक।
16 कल्हण–12वी सदी काश्मीर के राजाओं की कथा लिखी।
17 कालीदास–पांचवी सदी संस्कृत का कवि उपन्यासकार रघुवंश मेघदूत का लेखक।
18 कौटिल्य–चौथी सदी ई पू चन्द्रगुप्त मौर्य का मुख्यमंत्री, राजनीति के दाव पेचो का पहला विद्वान।
19 कुमारदास–छठी सदी जानकी हरण का लेखक।
20 माघ–सातवी सदी संस्कृत कवि।
21 मनु–2000 दो हजार ई पू मनुस्मृति का लेखक न्याय शास्त्री।
22 नारायण–12वी सदी संस्कृत म कथा वाचक, हितोपदेश और पंचतन्त्र का लेखक।
23 न्यायचन्द्र–14वी सदी संस्कृत कवि, हमीर महाकाव्य का रचियता।
24 पाणिनी–चौथी सदी ई पू संस्कृत व्याकरण का विद्वान।
25 पातंजल–ई पू दूसरी सदी संस्कृत व्याकरण का विद्वान।
26 प्लेटो–427–347 ई पू ग्रीक दार्शनिक।
27 सोक्रेटीज–ग्रीक न्याय शास्त्री।
28 राजशेखर–दसवी सदी ई पू संस्कृत मजरी का लेखक।
29 सध्याकर–12वी सदी रामचरित का लेखक।
30 सोमदेव–11वी सदी संस्कृत कवि।

31 सुबन्धु–सातवीं सदी संस्कृत कवि।
32 वाक्‌पति–आठवीं सदी संस्कृत कवि।
33 वाल्मीकि–छठी सदी ई पू रामायण के लेखक।
34 वात्स्यायन–पांचवीं सदी काम सूत्र का लेखक।
35 विद्यापति–1350–1460 एक बड़ा कवि।
36 विज्ञानेश्वर–11वीं सदी संस्कृत लेखक।
37 विशाखदत्त–छठी सदी संस्कृत नाटककार
38 विष्णु शर्मा–संस्कृत लेखक।
37 व्यास– छठी सदी ई पू महाभारत के लेखक।
प्रेमचन्द–1880–1937 उपन्यासकार, कहानीकार।
पुष्यमित्र– एक मौर्य राजा का ब्राह्मण सेनापति उसने अपने सम्राट को मार दिया और अपनी शुंग जाति का राज कायम किया।
पाइथागोरस–582–500 ई पू यूनानी दार्शनिक।
रामानुज आचार्य–हिन्दू धर्म का उद्धार किया रामभक्ति का प्रचार किया।
रामानुजन–1887–1920 बहुत बड़ा गणिज्ञ।
रजिया बेगम–दिल्ली की एक रानी।
रूजवेल्ट चार बार अमरीका का राष्ट्रपति बना समय था 1932–1945
रूसो–1712–1778 फ्रांस का राजनीतिक दार्शनिक सामाजिक कंटरेक्ट सिद्धान्त चलाया जिसकी प्रेरणा से 1789 की क्रांति हुई। संसार के देश गणतन्त्र बनने लगे।
राजा राममोहन राय–का विशेष विचार यह था कि अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली से भारत का सब तरह का लाभ होगा देश एक होगा। आधुनिक विद्याओं का प्रचार होगा।
समुद्रगुप्त–330–380 इतिहास में पहली बार उत्तरी और मध्य भारत एक शासन के नीचे रहा।

शेक्सपियर–1564–1616 कवि और नाटककार।
शंकराचार्य–जन्म 788 ईस्वी संसार के बड़े विद्वानों और दार्शनिकों में। इनकी विशेष बात यह थी कि इन्होंने हिन्दु धर्म प्रचार के लिए बौद्ध धर्म और जैन धर्म का विरोध किया।
शिवाजी–1627–1680 मरहट्टा नेता जो औरंगजेब के शासन से लड़ता रहा। उसने दक्षिणी भारत में हिन्दु राज्य कायम किया।
गुरु गोबिंदसिंह–सिखों का दसवां और अन्तिम गुरु जो मुगलों से लड़ता रहा।
सुकरात–469–399 ई पू कुरीतियों और अंधविश्वासों के विरुद्ध प्रचार किया। उसे जहर देकर मार दिया गया कि वह झूठ सिखाता है।
स्टालिन–1879–1953 स्टेलिन की मृत्यु 5 मार्च 1953 में हुई।
स्टीफेनसन–उसने स्टीम से, भाप से चलने वाला इंजन बनाया। ब्रिटेन मे पहली गाड़ी 1825 में चली।
सनयत सेन–1911 मे राजा को हटाकर गणतन्त्र बनाया।
तानसेन–1506-1589 अकबर के दरबार का गायक एवं नवरतन
शेरशाह–ग्रांड ट्रंक सड़क बनायी पहला बादशाह जिसने भारत में सड़क बनाई।
तैमूर–एक कट्टर मुसलमान जो मध्य एशिया से आकर उत्तर भारत के बहुत से नगरो को नष्ट किया दिल्ली को नष्ट किया।
टीटो–युगोस्लाविया का कम्यूनिस्ट शासक। मई 4, 1970 में 87 वर्ष की उमर मे मरा।
टोलस्टोय–1828–1910 रूस का बड़ा नाटककार।
टोडर मल अकबर का एक नवरतन पहला प्रशासक जिसने भूमि नपवाकर भूमि कर लगाया।

भारतीय इतिहास की वर्षावली

ईस्वी पूर्व

3000–1500, सिंधु घाटी की सभ्यता। यह सभ्यता डेढ़ हजार वर्ष चली।

567 बुद्ध महाराज का जन्म

483 बुद्ध महाराज का मरण

599 जैन धर्म के संस्थापक महावीर का जन्म

483 जैन धर्म के संस्थापक महावीर का मरण

327–326 यूनान के बादशाह अलेक्जंडर का भारत पर हमला। यूरोप निवासी का भारत में जमीन से आने का यह पहला मौका था।

273–239 अशोक का राज्यकाल

261 अशोक ने युद्ध किया। रक्तपात हुआ। अशोक को दया

भाई हृदय पिघला, पश्चाताप किया। अहिंसा परमो धर्म के परम नियम को स्वीकार किया और निभाया इतिहास में यह पहला अवसर था जब किसी बादशाह ने ऐसा प्रण किया हो।

58 ईस्वी पूर्व में विक्रमी संवत चालू हुआ और भारत ने इसे स्वीकार किया।

ईस्वी सन्

78 कनिष्क राजा बना

320 गुप्त वंश का राज चालू हुआ भारत का स्वर्णयुग चालू हुआ।

405–411 चीनी यात्री फाहीएन भारत में आया। किसी व्यक्ति की इतनी लम्बी यात्रा का यह पहला मौका था।

भारतीय इतिहास की निर्णायक दिनांक

606–647 हर्षवर्धन का राज

629–645 हुवेन सांग चीनी यात्री की भारत यात्रा

712 किसी मुसलमान का भारत पर पहिला हमला।

1001–1026, महमूद गजनी का गुजरात में सोमनाथ के मंदिर पर हमला। मंदिर तोड़ डाला किसी मुसलमान द्वारा मंदिर तोड़ने का यह पहला मौका था।

1191 तराई का युद्ध। दिल्ली का सम्राट पृथ्वीराज ने मुहम्मद गौरी को हराया।

1191 में दिल्ली पहली बार भारत की राजधानी बनी।

1192 मुहम्मद गौरी अधिक सेना लेकर फिर आया। इस बार पृथ्वीराज हार गया।

1336 इतिहास में पहली बार दक्षिणी भारत में एक साम्राज्य कायम हुआ जिसका नाम था विजय नगर का साम्राज्य

1347 दक्षिणी भारत में फिर इस्लामी राज कायम हो गया

1398 तमूर लग ने दिल्ली को तोड फोड दिया

1469 गुरु नानक का जन्म हुआ

1498 वास्को डी गामा समुद्री मार्ग से भारत आया अफ्रीका का चक्कर लिया । सुएज नहर उस समय थी नही ।

1526 बाबर दिल्ली का बादशाह बना

1576 हल्दी घाटी की प्रसिद्ध लडाई

1600 ईस्ट इंडिया कम्पनी बनी । भारत के आधुनिक स्वर्ण युग की ओर भारत के आधुनीकरण की नीव पडी ।

1605 अकबर बादशाह की मृत्यु । अकबर 1556 में बादशाह बन था 49 वर्ष तक अकबर ने राज किया । अशोक महान के बाद अकबर महान हुआ ।

1627 शिवाजी का जन्म

1680 शिवाजी की मृत्यु

1707 औरंगजेब की मृत्यु बडा भारत फिर छोटा हुआ ।

1739 नादिरशाह का हमला, मुगलो की मयूर गद्दी ईरान चली गई ।

1757 बंगाल में पलासी का युद्ध स्वर्ण युग की नीव पडी

1764 बकसर की लडाई, नीव और पक्की हुई ।

1793 बंगाल में किसानो को भूमि स्थाई रूप से दी गई । भूमिकर स्थायी कर दिया गया । हर वर्ष जो भूमिकर बदलता था, वह स्थायी हो गया । यह बहुत अच्छा हुआ किसान की देनदारी सुनिश्चित हुई ।

1799 टीपू सुल्तान की मृत्यु

1799 रणजीतसिंह पंजाब का महाराजा बना, लाहोर पहली बार पंजाब की राजधानी बनी ।

1818 चौथी लड़ाई में मरहटा लोग आखिरी बार हारे।

1833 राजा राम मोहन राय की मृत्यु

1835 भारत की एकता पक्की और स्थायी हुई। अंग्रेजी शिक्षा का माध्यम बना दिया गया। अंग्रेजी पढ़ना अनिवार्य हो गया दूसरे विषयों की पुस्तकें भी अंग्रेजी में हो गईं।

1757 और 1835 स्मरणी है।

1853 भारत में रेल शुरू हुई। भारत का एकीकरण भी पक्का हो गया, तार देने का काम भी शुरू हुआ।

1858 कम्पनी राज खतम हुआ। लन्दन की ब्रिटिश सरकार ही भारत सरकार बनी। महारानी विक्टोरिया ने रानी बनते ही यह घोषणा की। विक्टोरिया ने 1858 से 1904 तक राज किया

1869 2 अक्टूबर को महात्मा गांधी का जन्म। जनवरी 30 1948 में उन्हें गोली से मारा।

1885 कांग्रेस की स्थापना हुई

1889 नवम्बर 14 नेहरूजी का जन्म

1906 मुसलिम लीग बनी

1911 दिल्ली राजधानी बनी।

1914–18 पहला संसार युद्ध।

1929 लाहौर के अधिवेशन में, कांग्रेस ने पूरी स्वतन्त्रता की घोषणा की। नेहरूजी अध्यक्ष थे।

1942 भारत छोड़ो आंदोलन 9 अगस्त को चालू हुआ।

1947 भारत आजाद हुआ, 15 अगस्त

1948 जनवरी 30, गांधीजी की हत्या हुई।

1950 जनवरी 26, भारत गणतन्त्र हुआ।

भारत आजाद हुआ 15 अगस्त, 1947 में।

भारत गणतन्त्र हुआ 26 जनवरी, 1950 में।

नोट –पाठक लोग दोनों में फ़र्क सोचें।

1961 गोआ आजाद हुआ।

नोट – पाठक बतायें किससे आजाद हुआ।

1962 चीन ने साम्यवादी चीन नेहरूजी के भारत पर हमला किया। अक्टूबर 20 को

1965 पाकिस्तान ने भारत पर हमला किया। पंजाब की तरफ से।

1966 में ताशकंद सोवियत संघ में मेल जोल हुआ।

1971 भारत सोवियत संधि अगस्त 9,

1971 भारत-पाक की दूसरी लड़ाई दिसम्बर 3 से 17 तक पाकिस्तान हारा।

1971 बंगला देश आजाद हुआ। ध्यान रखने की बात है कि यह दूसरी लड़ाई बंगला देश को पाकिस्तान से आजाद कराने के लिए ही थी। 1971 तक बंगला देश पाकिस्तान का भाग था और पूर्वी पाकिस्तान कहलाता था।

1974 भारत ने परमाणु परीक्षण किया। भारत एक न्यूक्लीयर राज्य बन गया।

1975 भारत ने आर्यभट नामक भू-उपग्रह छोड़ा और इस प्रकार भारत अंतरिक्ष युग में प्रविष्ट हुआ।

1977 श्रीमती गांधी चुनाव हारी। मुरारजी देसाई प्रधान मंत्री बने मार्च 24 को शपथ ली। नीलम संजीव रेड्डी राष्ट्रपति बने। जुलाई 25 को

नोट – श्रीमती गांधी चुनाव हार गई। जो कांग्रेसी चुनाव जीते उन्होंने मुरारजी देसाई को नेता चुना। मुरारजी देसाई इस प्रकार प्रधान मंत्री बने। इन्दिरा गांधी बहुत उदास हुई। इस उदासी और हार को देखकर बहुत से कांग्रेसी और भारतीय जनता इन्दिरा गांधी

को सहानुभूति दिखाने लगे। आखिर वह नेहरूजी की लड़की था। और स्त्री थी, लोगो की जनता की हमदर्दी से इंदिरा गांधी को हिम्मत बधी। उसन नई कांग्रेस बना डाली। तो इस प्रकार दो कांग्रेस हो गई। इंदिरा गांधी न अपनी कांग्रेस का नाम इन्दिरा कांग्रेस रख दिया। नाम हुआ कांग्रेस इंदिरा, कांग्रेस आई। इस प्रकार कांग्रेस बनी।

1984 31, अक्टूबर को श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या। राजीव गांधी प्रधान मंत्री बने, 31 अक्टूबर 1984

1986 श्रीमती इंदिरा गांधी के कातिल को मृत्यु दण्ड मिला

1986 नवम्बर 25 से 28 तक चार दिन सोवियत राष्ट्रपति गार्वाचोव भारत आये।

1987 नवम्बर 20 से 25 तक सोवियत प्रधान मंत्री दिल्ली म ठहरे।

1965 भारत पाक का पहला युद्ध

1969 कांग्रेस दो भागो म बटी

1971 अगस्त 9 को भारत सोवियत संघ के बीच पहली संधि

1971 भारत–पाक दूसरा युद्ध पाकिस्तान हारा

1971 बंगला देश पाकिस्तान से अलग हुआ

1974 भारत ने परमाणु परीक्षण किया

1975 आर्यभट नाम का अंतरिक्ष यान पहली बार भारत ने आकाश मे छोड़ा

1977 इंदिरा गांधी पहली बार चुनाव हारी

1977 मुरारजी देसाई प्रधानमंत्री

1978 इंदिरा कांग्रेस–कांग्रेस आई बनी

1980 इंदिरा गांधी फिर सत्ता मे आई

1986 नवम्बर 20 से 25 तक सोवियत प्रधानमंत्री भारत में आये।

4 ई बी पूव मे जीजस क्राइस्ट का जन्म हुआ

570 मुहम्मद साहब का जन्म

601 से इस्लाम का उदय शुरू हुआ

622 से मुसलमानी सन शुरू हुआ

1215 म ससार मे लोकतन्त्र यानी ससदीय प्रणाली शुरू हुई मगना कार्टा नामक कागज पर, दस्तावेज पर अग्रेज बादशाह न हस्ताक्षर किये।

1348 योरप म काली मृत्यु नामक बीमारी फली

1492 कोलम्बस ने अमरीका ढूढी

1498 भारत म आन के लिए यारप के लोगा ने समुद्री मार्ग ढूढा।

1649 अग्रेजो न पहली और आखिरी बार अवैधानिक कार्य किया। अपने सम्राट को कत्ल किया।

1649 1660 पहली और आखिरी बार ब्रिटन एक गणतत्र राज्य रहा। राजा की जगह राष्ट्रपति रहा।

1688-1689 रक्तहीन क्राति से ब्रिटेन म सवैधानिक बादशाहत कायम हुई + जा आज तक उसी रूप मे कायम है।

1776 आज का अमरीका यानि यू एस ए अस्तित्व म आया जुलाई 4 की बात है जुलाई 4 आज भी अमरीका म आजादी का दिवस के नाम से मनाया जाता है।

1789 अगस्त 27, फ्रासीसी क्राति हुई, गणतत्र कायम हुआ अर्थात बादशाह की जगह राष्ट्रपति होगा। समय–समय पर चुनाव से होगा।

1815 वाटरलू का युद्ध नपोलियन अतिम रूप से हारा और योरप के बाहर भेज दिया गया।

1950 जनवरी 26 को बहुत ही धूमधाम से गणतंत्र दिवस मनाया जाता है। कहना चाहिये भारतीय जनता 26 जनवरी पर सम्मान करती है। खुशियां मनाती है, देश में छुट्टी रखी जाती है 80 करोड़ जनता काम काज बंद कर देती है। सरकारी छुट्टी व्यापारी दुकानो में छुट्टी।

वस्तु स्थिति यह है कि जनता यह नहीं जानती कि गणतंत्र क्या होता है। गणतन्त्र क्या लाभ पहुंचाता है। 14 अगस्त 1947 को क्या हानियां हुई जो 15 अगस्त को दूर हुई।

यह मात्र औपचारिकता का दिवस है जिससे अरबों रुपयों की हानि होती है। 80 करोड़ आदमी उस दिन बेकार हो जाते हैं। काम ठप रहता है इतना ही नहीं, उत्सव मनाए जाते हैं। उत्सवों पर करोड़ो रुपये खर्च होते है।

15 अगस्त मनाओ

26 जनवरी का मनाया जाना बंद करो। अगर मनाया जाता है तो पूछना गणतंत्र होता क्या है।

उस दिन कोई प्रतिबंध हटे थे क्या।

14 अगस्त 1947 को भारतीय के कार्य कलापों पर कोई प्रतिबंध थे क्या ?

1947 15 अगस्त को भारत आजाद हुआ दिल्ली में भारतीय सरकार बनी।

15 अगस्त का दिन हम आजादी के रूप में हर साल मनाते है।

1948 जनवरी 30 के दिन महात्माजी की हत्या की गई। भारत विभाजन के समय किसी हिसाब से निर्णय हुआ था कि पाकिस्तान को रुपया दिया जायेगा। कुछ भारतीय कहने लगे कि रुपया न दिया जाय। महात्माजी का कहना था कि जो निर्णय हुआ उतना

 यह कब की बात है

पालन हो। बस इसी बात पर महात्माजी को कत्ल कर दिया गया इतने बड़े महापुरुष को इस प्रकार और इस गुमनामी से मारा गया जैसा कि वह देश द्रोही हो। महात्माजी ने देश को स्वतन्त्र कराया और महात्माजी को देश द्रोही मान कर मार डाला। यह तर्क उन लोगों का जिनकी बुद्धि साम्प्रदायिकता से दब जाती है।

साम्प्रदायिकता से मुक्ति का एक ही मार्ग है, वह है समूल-रवाद धर्म निरपेक्षता।

धर्म को अन्धविश्वास मानो। मंदिर जाना छोडो। मस्जिद जाना छोडो। धर्म मानना ही बंद करो।

धर्म मानना और धर्म निरपेक्ष होना सम्भव नहीं है। मानव महात्मा नहीं हो सकता। मानव महात्मा गांधी कभी नहीं बन पाएगा। जहां धर्म होगा वहां कट्टरता होगी। धर्म अन्धविश्वास है और अन्धविश्वास कट्टरता से मुक्त नहीं हो सकता। यह जीवन की वास्तविकता है। यह उपदेश काम नहीं करेगा।

1526 म मुगल राज कायम हुआ

1556 म अकबर महान बादशाह बना

1600 अंग्रेज कम्पनी बनी जिसने 1757 मे भारत म राज स्थापित किया। स्वर्ण युग शुरु हुआ, भारत एक हुआ।

1627 शिवाजी का जन्म

1707 औरंगजेब की मृत्यु

1757 पलासी का युद्ध अंग्रेजो ने जीता और अंग्रेज राज शुरू हुआ, भारत एकता का आरम्भ हुआ।

1835 मे अंग्रेजी भाषा अनिवार्य हुई भारत एकता का मसला बड़ा कदम रखा गया।

1853 पहली रेल भारत में चली

1869 अक्टूबर 2, महात्माजी जन्मे

1885 कांग्रेस बनी

1889 नेहरूजी जन्मे 14 नवम्बर को

1929 जवाहरलालजी की अध्यक्षता मे कांग्रेस का अधिवेशन लाहोर म हुआ। इस अधिवेशन में यह तय किया गया भारत अंग्रेजों से पूर्ण रूप से अलग होगा। अर्थात ब्रिटिश सम्राट से कोई संबंध नही रखेगा। अर्थात वह गणतन्त्र बनेगा।

गणतन्त्र ऐसी राज्य प्रणाली होती है जहा राजा नही होता राजा की जगह अध्यक्ष होता है।

भारतीय इतिहास की महत्वपूर्ण तिथिया

भारत मे सभ्यता सिंधु नदी की घाटी म शुरू हुई। उत्तरी भारत या दक्षिणी भारत म नही हुई। यह सभ्यता रही 3000 ई पूर्व से 1500 ई पूर्व तक।

बुद्ध महाराज का जन्म	567 ई पूर्व
बुद्ध की मृत्यु	483 ई पूर्व
महावीर का जन्म	599 ई पूर्व
महावीर की मृत्यु	487 ई पूर्व

किसी विदेशी का भारत पर हमला 327 ई पूर्व म हुआ था यह हमला एक ग्रीस निवासी ने किया था। ग्रीस योरप म है। उस प्राचीन काल मे भारत की बातें और भारत की चर्चा योरप म चलती थी। जसी कि कहावत है कि भारत एक सोने की चिड़िया है। धन बहुत है सोना बहुत है आक्रमणकारी का नाम था अलेक्जडर महान वह भारत मे बसने नही आया था। सोना देखने आया था। उत्सुकता वश आया था।

इसके बाद सन 1600 में अंग्रेजी व्यापारी कंपनी भारत आई परन्तु इस बीच मध्य पूर्व में यानी पश्चिमी एशिया में छठी सदी में इस्लाम का उदय हुआ। इस्लामी लोगों में धर्म प्रचार था जारी था। मुसलमानों का पहला हमला 712 में हुआ। दूसरा 1099 में तमूर ने किया और गुजरात में सोमनाथ का मंदिर तोड़ा और सोना ले गया। इसके समय के बाद 1526 में बाबर ने मुगल साम्राज्य की नींव डाली जिसमें अकबर महान हुआ। 712 के बाद 1026 में सोमनाथ का मंदिर तोड़ा।

1347 में बहमनी राज्य बना।
1398 में दिल्ली को नष्ट किया गया।

दवाई कब शुरू हुई

आज हम जो कुछ भी देखते है वह सदा से नही है। मनुष्य सदा से नही है, जीव सदा से नही हैं। हरा सादा से नही हैं। पानी सदा से नही हैं। यहा तक कि धरती माता भी सदा से नही हैं। ता दवा तो बहुत ही नई हैं।

तीन हजार वर्ष हुये, दवायें मिश्र देश म बनन लगी।

सबसे पुराना ग्रंथ

दुनिया म सबस पुराना ग्रंथ रिगवेद है। दूसरा पुराना ग्रंथ अथवेद हैं। इन दोना ग्रथो म दवाइयो का जिक्र आता है। य बातें दो हजार वर्ष ईस्वी पूर्व की हैं।

दूसरा नबर चीन का हैं। 450 ई पूर्व म चीन म दवाइयां बनने लग गई थी। 450 वर्ष ई पूर्व मे मिश्र म प्याज का बहुत महत्व था। लोग खाते थे और दवा के लिए काम म लेते थे।

हिपो क्रेटस

दवाइयो का ज म दाता हिपा क्रेटस भी इसी समय म था।

पदार्थ और दिमाग और जीव

पदाथ सदा से है। पदार्थ बनाया नही गया। जीव सदा स नहीं है। पदाथ मे से जीव निकला। जीवा का विकास हुआ।

द्वन्द्वात्मकता

दो घटनाओ का आपस मे सघर्ष हाता है। इस सघर्ष से गति उत्पन्न होती हैं। गति से विकास होता है।

द्वद्वात्मक भौतिकवाद और इतिहासिक भौतिकवाद इनका अतर

द्वद्वात्मकता–प्रकृति, समाज और विचार, ये तीनो विकास करत हैं। आगे बढ़ते हैं। प्रकृति विकास करती है। पेड–पौधा म एकता है और सघर्ष है, प्रतियागिता है। धूप म सूरज क सामन आन के लिए पेड की डालिया आपस म प्रतियागिता करती है मनुष्य भी आगे प्रगति के लिए होड़ रखत हैं। द्वद्वात्मक भौतिकवाद आम है। समाज प्रकृति दोनो पर लागू है।

परतु इतिहासिक भौतिकवाद केवल समाज पर लागू है। इति हास का यह अथ है समाज का इतिहास।

इन दोनो का अध्ययन और उनका अतर, मार्क्स और एगल्स न किया। विज्ञान और विवेक एक तरफ और आदर्श और अध–विश्वास दूसरी तरफ, सघर्ष आज भी है।

समान वेतन, सोवियत सघ लेनिन और स्टेलिन के समय म 1917 से 1953 तक कार्य की मात्रा और गुण पर ध्यान न देकर

मजदूरा को लगभग समान यानि मजदूरी दी जाती थी। समाज का प्रारम्भिक जोग था प्रागमनिक अनुपात मा था। पर इन म धीरे-धीरे दिक्कतें आने लगी।

1 याद रखना चाहिए हमारा वैज्ञानिक ज्ञान, क्रम बद्ध शुरू हुआ। 1859 म चारर्लस डार्विन न पुस्तक 'दी ओरिजिन आफ स्पीशीज' प्रकाशित हुई।

2 घोड़े की सवारी शुरू हुइ रूस म 4350 ई पूर्व म

3 भेड पालन शुरू हुआ 7200 ई पूर्व म

4 सुअर पालन शुरू हुआ 7000 ई पूर्व म

5 कुत्ता पालन शुरू हुआ 7700 ई पूर्व म

6 भेड पालन शुरू हुआ 8050 ई पू ि म

7 खेती चालू हुई 11000 ग्यारह हजार वर्ष पहले

8 चीन म समाजवाद कायम हुआ एक अक्टूबर 1949 म 1958 म माओ न समाजवाद की स्थापना शुरू की। माओ न 1966 म सांस्कृतिक क्रांति शुरू की। भूमि बराबर बांट कर कहीं कहीं भूमि का समाजीकरण करके, गावो म समाजवाद स्थापित करने की कोशिश की। माओ का समाजवाद और सांस्कृतिक क्रांति 1978 तक चली। कहना चाहिए आदेशों द्वारा, और जबरदस्ती द्वारा चलाई गई।

याद रखने की बात है कि निजी सम्पत्ति, निजी व्यापार निजी घर निजी परिवार हमेशा रहेंगे। मनुष्य का पशु का सामूहीकरण कभी नहीं होगा।

जन संख्या का वृद्धिकरण हमेशा चलता रहेगा रोकथाम की कोशिश चलती रहेगी। पुत्र-पुत्रियो की लालसा बनी रहेगी।

श्रम चिंतन को बढाता है। चिंतन भी चिंतन को बढाता है।
6000 छ हजार वर्ष पहले यग बने।

विश्व असीम है सदव है। जीवन बाद का है। "मनुष्य दस हजार वर्षो का है"

पहली पुस्तक छपाई शुरू हुई 1471 म
सबसे पहले कपड़ा बना 4500 वर्ष पहले
सिलाई की मशीन बनी 1882 म
पहले औजार और हथियार बन हड्डिया से और पत्थरो से
दिसम्बर 17, 1903 म पहली उड़ान हुई
ऊन और रेशम से कपडे बनने लग
भौतिकवाद का विचार फ्रास म अठारवी सदी म चला

1 अटम बम्ब अमरीका न 1945 म बनाया

2 स्टेलिन ने आदेश दिया कि सोवियत सघ का दूसरा स्थान जरूर मिले। हुक्म का पालन हुआ। अग त 29, 1949 म रूस न परीक्षण किया।

3 ब्रिटेन न अक्टूबर 2, 1952 म परीक्षण किया

4 फ्रास ने अक्टूबर 13, 1960 म परीक्षण किया

5 चीन ने अक्टूबर 16, 1964 को परीक्षण किया

अमरीका मे राष्ट्रपति को मारने के प्रयत्न किए जाते हैं जिनमे सफलता मिली वे हैं।

1 अब्राहम लिकन 1865 मे मारा गया, राष्ट्रपति का पद वही से शुरू हुआ।

2 जेम्स गारफील्ड 1881 में

3 विलियम किनली 1901

4 मार्च 1963

5 प्रतियोगिता और सहयोग इनमें द्वन्द्व रहना जरूरी है।

6 युद्ध जीते नहीं जा सकते, युद्ध नहीं होने चाहिए जेनेवा में, नवम्बर 21, 1985 में तय हुआ।

7 पिछड़ी जातियों के लिए नौकरियों में संरक्षण का आदेश जारी अगस्त 16, 1990 में पिछड़ी जातियों में महीर हैं। यादव न कहलाते हैं यादव अहीर ही जोर लगाते हैं।

आधुनिकरण जरूरी

1 मध्यकालीन जीवन शैली छोड़ना

2 सिर पर चोटी की जगह छोटी सी गोली सी टोपी मत रखो

3 बुर्का पहनना बन्द करो

4 दाढ़ा मूछ की कटाई होठों पर के बालों की कटाई

5 कुल जातियां 3743

6 Classical Freuch Materialist of 18th Centur) Theidlolagical source of Hornas

7 रिगवेद सबसे पुराना ग्रन्थ है दुनिया में

8 Forced labour m less productar than

1 Full labour

2 Prece of the article to the detimmed of leg

पश्चिमी एशिया की तरफ देखने वाले मुसलमानों की निशानी है।

(क) उनके सिर पर पतली सी टोपी होगी जो सिर के बीच में उस जगह को घेरगी जहां चोटी होती है। हिन्दु लोग चोटी रखते हैं। टोपी सफेद होती है।

(ख) अधिकांश मुसलमान बाना को लाल रंग लेते हैं।

(ग) दाढी रखने अपनी दाढी को होठा के नीचे कटा लेते ह। चेहर पर पतली मी रेखा म काट लेते है।

दुनिया के मत्रिमडल का नाम है सुरक्षा परिषद। इसमे 15 सदस्य हैं। इनमे पाच देश स्थायी सदस्य है और 10 सदस्य हर दूसर वष चुने जाते है, स्थायी सदस्य है, चीन, फ्रास, सोवियत सघ ब्रिटन और अमरीका यानी सयुक्त राज्य अमरीका।

Social progress is predelermwed Spoulaut on

समाज की प्रगति स्वाभाविक है

रानीबाजार का पहला जनरल स्टोर, रानी बाजार 1968 म खुला था 23 वष हुए।

मार्च, १९९१ मे भारत की जन सख्या

टोटल 8 4 3 9 3 0 8 6 1
पुरुष 4 3 7 5 9 7 9 2 9
स्त्रिया 4 0 6 3 3 2 9 3 2

प्रतिशत वृद्धि 24

स्त्री–पुरुष कितने कितन एक हजार पुरुषा क लिए 929 स्त्रिया हैं। एक हजार लोगो मे 71 इकेहतर पुरुष कुआरे रहत ह। 71 पुरुष के खाली रहन से ही सेक्स अपराध होते हैं विभिन्न प्रकार की बिमारिया फैलती हैं जिनम एक है एडस Aids स्त्री पुरुष की सख्याओ का यह अतर मे हमेशा से हैं 1981 मे एक हजार स्त्रिया के लिए 934 पुरुष थे। ससार की कुल जनसख्या 5 अरब है।

भारत जनसख्या 85 करोड़ है पाचवें हिस्से के लोग भारत मे रहते हैं।

दवाई

तीन हजार वर्ष पहले दवाई मिश्र म बननी शुरू हुई।

ऋग्वेद

दुनिया मे सबसे पुराना ग्रथ ऋग्वेद है।

दूसरा पुराना ग्रथ अथर्ववेद है। इन दोनों ग्रथ म भी दवा का जिक्र आता है इसवी सन् से दो हजार वर्ष पहले के है।

दवाई बनने मे दूसरा नम्बर चीन का है 450 ई पूव चीन म दवाइया बनने लगी थी।

प्याज

प्यास का प्रयोग मिश्र म 450 ई पूव म शुरू हुआ। प्याज को खाते थे और दवा की तरह काम मे लेते थ।

हिपोक्रेटस

दवाइया का जन्मदाता हिपोक्रेटस था जो इसी समय हुआ 450 ई पू म।

पदार्थ सदा से हैं। पदाथ बनाया नही गया पदाथ से जीव निकला। जीवो का विकास हुआ और हो रहा है। मनुष्य विकास कर रहा है और करता रहेगा।

पश्चिम एशिया और मुसलमान

भारत का मुसलमान हर प्रकार की प्रेरणा और आदर्श क

लिए पश्चिम की तरफ ही देखता रहेगा। मक्का, मदीना आदि इनके तीर्थ स्थान हैं। ये अरब देश में हैं।

पश्चिम की तरफ देखने वाले मुसलमानों की पहचान है

1 उनके सिर पर छोटी सी, पतली सी टोपी होगी। यह टोपी सारे सिर को नहीं ढकेगी। सिर के ऊपरी और बीच के हिस्से को ढकेगी।

2 अधिकांश दाढ़ी रखेंगे और यह दाढ़ी होंठों के पास से और चेहरे के दोनों तरफ एक पतली सी थोड़ी सी चौड़ाई वाली रेखा के बाल कटे हुये होंगे।

विश्व का मंत्री मण्डल

दुनिया के मंत्रीमण्डल को सुरक्षा–परिषद कहते हैं। उसमें 15 सदस्य हैं इनमें पांच सदस्य स्थाई हैं। ये सदस्य ही वास्तविक्ता धर्ता हैं ये पांच हैं। सोवियत संघ, अमेरीका यानी संयुक्त राज्य अमरीका, चीन, ब्रिटेन, फ्रांस। इन पांच में दो महा शक्तियां कह-लाती हैं। अंग्रेजी में सुपर पावर्स। सोवियत संघ और अमेरीका हैं महा शक्तियां।

भारत–सोवियत मैत्री संधि

नेहरू ने मित्रता शुरू की और गहरी की। आजादी के बहुत पहले 1927 में नेहरू जी ने पहला दौरा किया। प्रधान मंत्री बनने के बाद जून 7 से 23 तक का 16 दिन का लम्बा दौरा किया जो एक प्रधान मंत्री के लिये निराली चीज थी और है 1971 में 20 वर्ष

गी मनी गधि हुए। 1991 म न्मरा ररीकरण हुआ है। ए
गाहना ग्नि का गौरा 1955 म हुआ था।

ससार की ५ अरब की जन सख्या मे बडे-बड धर्मों का प्रतिशत है–

1	इसाई	33	प्रतिशत
2	मुसलमान	18	'
3	सेक्यूलर वादी	17	'
4	हिन्दु	14	'
5	बौद्ध	7	"
6	अनीश्वरवादी	5	"
7	यहूदी जू	0 4	"
8	सिख	0 3	"
9	जैन	0 1	'

विश्व समाज की सुख-समृद्धि अनीश्वर वाद पर निर्भर करती है। मटिरियलिजम पर भौतिकवाद पर ही ससार की सुख समृद्धि शान्ति निर्भर करती है।

असनियत पदाथ ह वा तविकता पदाथ है। सच्चा दर्शन पदार्थवाद है।

पदार्थ की पहचान है — पदाथ म वाझ भार होता ह। पदार्थ जगह घेरता ह। ये दो गुण दो प्रापर्टी ज्हा नही पाई जाय उसे समझो वह ह ही नही। ईश्वर में देवताओ में ये गुण नही पाये जाते ह। उनमें बोझ भार नही ह। व जगह नही घरने ह।

क्यूबा न अभी कम्यूनिजम नही छोडा ह। क्यूबा का नेता क्यूवा कम्यूनिष्ट बना 1962 में फिडलकास्त्रो।

व्यक्तियों के नाम

मुरारजी देसाई 1991 में पचानवे 95 वर्ष के हुए स्वस्थ है, चलन फिरत हैं। कभी बिमार नहीं हुए 1979 में वे प्रधान मंत्रीत्व से हटे थे।

पहला मार्क्सवादी पनीनानाथ था। उसने पहली कम्यूनिस्ट पार्टी स्थापित की, 25 सितम्बर 1883 में, उसने दो किताब लिखी। यह पहला मार्क्सवादी लेखक था संसार में 3000 तीन हजार भाषायें हैं 300 वर्ष से आए हैं।

कुम्हार का चाक बना 4000 ई. पूर्व में

1962 में किश्चियन सन्ट न एटनाटन बनी

सात बड़े—1 USA, 2 इंगलैंड 3 जर्मनी, 4 फ्रांस, 5 ब्रिटेन, 6 इटली, 7 कनाडा

नेहरू ने राज किया 15 अगस्त, 1947 1964 तक

सोवियत संघ का मध्य एशिया सोवियत संघ के 15 गणतन्त्रों में एक गणतन्त्र मध्य एशिया है। इसकी अधिकांश आबादी मुस्लिम है सोवियत संघ ने बहुत कोशिश की कि इन मुसलमानों को मजहब से हटा कर कम्यूनिस्ट बनाया जाय। परन्तु आज तक केवल 20 प्रतिशत अनीश्वर वादी बने हैं। 80 प्रतिशत मक्का मदीना जाने लग गए हैं। जानने की बात यह है कि कम्यूनिज्म के विरोध में शिया सुन्नी एक हो गए हैं। यहाँ तक कि सीमा के झगड़े बंद कर रखे हैं।

यह है इस्लाम की कट्टरता और एकता। चांद और तारे का झंडा लहराता है जगह-जगह।

हथियारों और सेनाओं की भरमार होते हुए भी विश्व शांति

टिकाऊ बनी हुई हैं। वही धाराप्रा का वातावरण नहीं है। इसका कारण क्या है? इसका रहस्य क्या है? इसका कारण है शीतयुद्ध का समाप्त होना। युद्ध समाप्त हुआ 1944 में। शीत युद्ध शुरू 4 मार्च 1946 में। उस दिन ब्रिटेन के नेता चर्चिल ने अमरीका के फुल्टोन नामक नगर में भाषण दिया कि युद्ध तो समाप्त हो गया पर कम्यूनिजम को अभी योरुप में पूर्व को धकेलना है। यानी पश्चिम योरुप में उसका प्रभाव समाप्त करना है। युद्ध यह शीत युद्ध जोर पकड़ता गया। युद्ध की तैयारी में दोनों महाशक्तियों ने शक्ति का बढ़ाना शुरू किया। अमरीका और पश्चिम योरुप समझते थे कि उनके पास अटम बम्ब हैं और वे सोवियत संघ पर प्रयत्न किया था। इधर स्टेलिन ने अपने वैज्ञानिकों को हुक्म दिया कि एक महीने के भीतर अटम बम्ब बन जाना चाहिए। और अटम बम्ब बन गया। 1950 से 1958 तक बहुत हथियार बने। पर अमरीका समझता था कि उसके हथियार ज्यादा हैं और गुण में, मार करने में ज्यादा विनाशक हैं।

संसार के सौभाग्य से अप्रैल 1985 में गोर्बाचेव सोवियत संघ का राष्ट्रपति बन गया। तभी से शांति प्रयत्न चालू हुए।

1962 में हाट लाइन बनी, विश्व युद्ध टालने में HOT LINE हाट लाइन से बहुत मदद मिली है।

पश्चिम एशिया से प्रेरणा लेने वाले

मुसलमानों की पहचान

1 इनके सिर पर पतली सी हल्की सी, छोटी सी टोपी होगी। यह टोपी सिर के ऊपरी भाग को ढकती है। कान से बहुत ऊपर होती है। सफेद रंग की होती है। कोई कोई दूसरे रंग की होती है।

अधिकांश दाढ़ी रखते हैं। होठों के पास से, कनपट्टी के पतले से भाग पर यह दाढ़ी कटी हुई होगी।

राजस्थान में जागीर उन्मूलन कानून लागू हुआ 18 फरवरी 1952 में। भूमिहीन और अधिकार च्युत जातियों को उस दिन नाम जिक्र अधिकार मिले।

संसार के इतिहास में पहली बार संवैधानिक अधिकार प्राप्त हुए 15 जून 1215 में। देश था ब्रिटेन।

योरप में जन जागृति पश्चिम एशिया से 1453 में गई। जिस नगर से गई उसका नाम था कान्स्टेंटी नोपल। मुसलमानों ने उस पर अधिकार कर लिया। ईसाई वहां से भाग कर इटली, यूनान आदि देशों में चले गए।

आज का अमरीका यानी संयुक्त राज्य अमरीका अस्तित्व में आया 1783 में।

भारत ने ब्रिटिश सम्राट से संबंध तोड़े 26, जनवरी 1950 में
भारत गणतंत्र बना 26 जनवरी 1950 में
भारत स्वतंत्र हुआ 15 अगस्त, 1947 में

नोट—भारत आजाद होने में और ब्रिटिश सम्राट से संबंध तोड़ने में क्या फर्क है। दोनों घटनाओं में तीन वर्ष का अंतर है।

भारत ने आजाद होने की घोषणा की 1885 में। भारत ने गणतंत्र होने की घोषणा की 1929 में जब नेहरू कांग्रेस के अध्यक्ष बने।

स्टैलिन की मृत्यु हुई 5, मार्च 1953 में

पहला भू-उपग्रह पृथ्वी के चक्कर लगाने लगा 4, अक्टूबर 1957 में।

नहरूजी का अंतकाल हुआ 27 मई 1964 में

शांति मरे 1965 में। वे युद्ध विजेता थे।

अफगानिस्तान गणतन्त्र बना 1973 में

अमरीका ने नागर युद्ध की तयारी शुरू की 1981 में

चीन ने भाषा के सिद्धांत तोड़े 1982 में

आतंकवादी स्वर्ण मन्दिर में घुसे 1984 में

दो देशों के बीच की विश्व की पहली लड़ाई 490 ई० पू० फारिस और ग्रीस के बीच में हुई।

सबसे पुराना झण्डा डेनमार्क का है जो 1219 में बना। दूसरा झंडा स्वीजरलैंड का है जो 1339 में बना। मास्टरों द्वारा बच्चों की पढ़ाई शुरू हुई 250 ईस्वी में यूनान में। भाषायें सीखाई जाती थी। भाषा सिखाने के नियम भी बनने लगे। पुस्तकालय भी बनने लगे।

बूट जूते बनने शुरू हुए 1629 अमरीका में

धूम्रपान, बीड़ी, सिगरेट शुरू 1556 में फ्रांस में। 1558 में पुर्तगाल के लोग धूम्रपान करने लगे। 1559 में स्पेन में आया। 1565 इंगलैंड में आया। तम्बाकू का पौधा कुदरती तौर से अमरीका में उगता था। 1492 में जब अमरीका ढूंढा गया तब अमरीकी तम्बाकू खाते थे। पीने का, धूम्र के रूप में रिवाज शुरू 1550 अमरीका में।

इतिहास में पहला किसान संघर्ष जर्मनी में 1526 में शुरू हुआ।

मजदूरों द्वारा पहला आंदोलन 1831 से हुआ यह फ्रांस में हुआ। मजदूर संगठन नहीं बना था मजदूरों का पहला संगठन स्थापित 18 मार्च 1871 में फ्रांस में। इसका नाम था परिस कम्यून।

कम्यून से कम्युनिस्ट शब्द बना पेरिस कम्यून ने फ्रांस में 72 दिन बहत्तर दिन राज किया।

ससार का पहला युद्ध 490 ई पूर्व में हुआ। यह युद्ध फारिस और यूनान के बीच हुआ। पत्थर की कुल्हाडी मनुष्य का पहला मानव निर्मित हथियार था आज से छ हजार वर्ष पहले मिट्टी के बरतन बने।

पिछड़ी जातिया

कुल पिछडी जातियां 1051 हैं। नाई, धोबी, तेली आदि दस्तकारी करने वाली जातिया पिछडी जातिया कहलाती हैं। अहीर यानी यादव पिछडी जातियो म है। यह दूध का धधा करने वाली पशुपालक जाति हैं। यादव लाभ ही इन जातियों के नेता है, नौकरिया में स्थान सुरक्षित हैं।

अनुसूचित जातिया 443 हैं।

अनुसूचित जन जातियां 426 हैं।

पिछडी जातिया 1051 हैं।

ये आंकडे 1988 के हैं।

पहली छपी हुई पुस्तक चीन में सन् 1445 में प्रकाशित हुई।

सोवियत सघ के विघटन से अमरीका को भय दोना महाशक्तियां में 1946 के मार्च से 1985 के अप्रेल तक ईर्ष्या देता रहा। हथियारो की होड बनी रही। रोकथाम सधिया होने पर भी द्वेष बना रहा। सोवियत सघ में पन्द्रह गणराज्यो मे से किसी को भी अलग होने की छूट हो गई। बाल्टिक सागर के तीन रिपब्लिक टूट गए और राष्ट्र सघ के सदस्य हो गए। अब सोवियत सघ के मध्य

एशिया के 5 मुस्लिम गणतन्त्र टलन की यह रहे हैं। इसकी सफलता या चिंता है, क्या ? अध्ययन करें।

गोर्बाचेव की विजय का रहस्य

उसकी नीति —

गोपनीयता भ्रम को बढ़ाती है,

स्पष्टता भ्रम को मिटाती है।

1985 के नवम्बर से 1990 के नवम्बर तक वह हर बार अमरीकी राष्ट्रपति से मिला। किसी वर्ष दो बार भी मिला। स्वागत किया और स्वागत कराया। सार्वजनिक भाषण दिए। जनता को प्रभावित किया।

जैसे समाज का विकास हुआ है, और हो रहा है, वैसे ही प्रकृति का विकास हुआ है और हो रहा है।

दुनिया की 5 अरब की आबादी में 1936 में इसाई थे एक अरब और 62 करोड़।

मनुष्य तो क्या छोटे से छोटा जीव भी सगा से बड़ा है। सांप का प्रारम्भ 6 करोड़ 90 लाख वर्ष पहले हुआ।



सम्पर्क सूत्रों का विकास

ईस्वी पूर्व

35000 भाषा टूटी—फूटी अवस्था में चालू हुई थी।

22000 रंग करने की प्रथा शुरू हुई।

2000 सिंधु नदी की घाटी में लाग लिखाई करना, मोहर छाप लगाने का काम जान गए थे। क्षेत्र का नाम है मोहनजोदड़ो और हड़प्पा।

1600 फारिस में पहली वर्णमाला चालू हुई।

1000 यूनान में वर्णमाला चालू हुई।

600 लैटिन वर्णमाला चालू हुई।

450 ग्रीस के लोग सन्देश वाहक के रूप में कबूतर का प्रयोग करने लगे।

130 संसार की पहली लायब्रेरी बनी। मिश्र देश व अलेक्ज़ेंडरिया नगर में यह पुस्तकालय बना था।

ईस्वी

350 किताबें चालू हुईं, प्लेटों पर निगरा बंद हुआ।

600 चीन में किताबों की छपाई शुरु हुई।

676 अरब और फारिस के लोग कागज, यह ही बनने लगे।

1200 कागज और स्याही यूरोप पहुंचे।

1562 इटली में पहला मासिक पत्र छपा।

1594 जर्मनी में पहला पत्रिका छपी।

1639 यू एस ए में यानी अमरीका में छपाई की पहली मशीन बनी।

1835 टेली ग्राफ चालू हुआ।

1866 अमरीका को तार जाने लगे।

1876 टेलीफोन का आविष्कार हुआ।

1947 टरांजिस्टर का आविष्कार हुआ।

1951 रंगीन फिल्म बनी।

1957 4 अक्टूबर पहला भू उपग्रह सोवियत संघ ने छोड़ा।

1927 भारत ने रेडियो चालू किया।

1219 पहला झंडा डेनमार्क ने चालू किया।

1219 स्वीजरलैंड ने भी झंडा बनाया।

1339 प्रतिरक्षा के लिए चीन ने पहली दिवार बनाई यह दिवार आज भी कायम है।

1789 विश्व की पहली राज्य क्रांति फ्रांस में हुई।

1471 छपाई शुरु हुई, विलियम कैक्सटन पहला छापागार र ज

नवम्बर 19–21, 1985 शीत युद्ध समाप्त हुआ।

शीत युद्ध समाप्त

नवम्बर 19–21 1985, जेनेवा में पहली शिखर वार्ता

Wars control he wou, Wars must not be fought

गोपनीयता संदेह बढ़ाती है,
स्पष्टता संदेह मिटाती है।

गोपनीयता मन मैला बनाती है,
स्पष्टता मन को स्वच्छ बनाती है।

मल दहन का रिवाज 4500 ई पूर्व में चला।

सिकन्दर बख्त और आरिफ बग भारती जनता पार्टी की कार्यकारिणी के सदस्य है।

पेरिस चार्टर 19 नवम्बर 1990 दोनों महाशक्तियों ने शीत युद्ध की समाप्ति की घोषणा की।

प्रयत्न शुरु हुए 21 नवम्बर, 1985 जनेवा में सफलता मिली 19 नवम्बर, 1990 को।

तुलसीदास की रामायण, तुलसीदास द्वारा 1557 लिखी गई। अकबर बादशाह के समय में

पदार्थ—मैटर

जो पदार्थ नहीं है वह मिथ्या है। भ्रम है अविश्वास है

पदार्थ की पहचान है—

1 पदार्थ जगह घेरता है।

2 उसमें वजन होता है।

3 पदार्थ की फोटो ली जा सकती है।

4 पदार्थ की नकल उतारी जा सकती है।

5 पदार्थ से भावना पैदा होती है।

6 भावना से पदार्थ पैदा नहीं होता पदार्थ को प्रमुख स्थान देना पदार्थवाद कहलाता है। पदार्थवाद को अंग्रेजी में मटीरियलिज्म कहते हैं।

सीखो —मार्क्सवाद के दो भाग हैं सामाजिक व्यवस्था—जिसकी अंतिम व्यवस्था है साम्यवाद—राज्यविहीन समाज यह भाग तो सच नहीं निकला। दूसरा भाग है भौतिकवाद यह सही निकला अनीश्वर सही है।

प्राचीन इतिहास की तिथियां

6000 ई० पूर्व में सिंध की घाटी में और बलूचिस्तान में नव पाषाण युग की बस्तियां बसने लगीं। कच्ची ईंटों के मकान बनने लगे। भेड़, बकरी पालने शुरू हुए। गेहूं और जौ की खेती होती थी।

अन्य चीजों का प्रयोग

1 तांबा खनिजों में सबसे पहले तांबा मिला—इतिहास पूर्व
2 सोना इतिहास पूर्व
3 लोहा "
4 लेड "
5 हाइड्रोजन 1766
6 नाइट्रोजन 1772
7 ऑक्सीजन 1774
8 सल्फर इतिहास पूर्व
9 टीन

10 रिश "

11 भाप का इंजन बना गई 1765

12 डिजल इंजन 1892

13 जेट इंजन 1937

14 टेलीग्राफ 1835

15 टेलीफोन 1876

16 ग्रामोफोन 1877

17 सिनेमा 1895

18 रेडियो 1952

19 टेपरिकार्डर 1899

20 टेलीविजन 1926

21 टेलीविजन रंगीन 1954

22 पहली उड़ान 1903

23 पहली रेलगाड़ी इंगलैंड में चली 1825

24 स्टीम इंजन 1812

25 पेट्रोल की पहली मोटर 1885

26 कैमरा 1826

27 थाईं-गज 1878

28 मार्क्स की मृत्यु 14 मार्च, 1883 बिमार रहने लगे। 65 वर्ष की उमर में ही चले गये।

29 एंगल्स जन्मे 28 नवम्बर, 1820 में। वे मरे 5 अगस्त, 189: में। 1884 में उन्होंने एक पुस्तक प्रकाशित की जिसका नाम है-Drigin of the family the private property and the State

कम्युनिस्ट मनीफस्टो नाम की पुस्तक मार्क्स और एंगल्स ने दोनों ने मिलकर लिखी।

धरती माता की हवा यदि अन्तरिक्ष मे चली जाय तो हम मर जाए, पर धरती माता इसे थामें रखती है।

पिछले 5500, साढे पाच हजार वर्षों मे कुल युद्ध हुए 14500 जिनमे कुल आदमी मरे 36 अरब 50 करोड पिछले दस वर्ष के इतिहास मे 292 वर्ष शाति के निकले।

नोट–सबसे पहला हथियार माला था जो लकडी का बना था यह माला दो लाख और दो हजार वर्ष पुराना हैं।

प्राचीन इतिहास मे पाषाण युग और प्राचीन युग अभिव्यक्तिया आती हैं जिनकी परिभाषायें हैं–

पाषाण युग–आज से दस लाख वर्ष पहले था।

प्राचीन युग–46 ईस्वी से लेकर 453 ई तक का था।

रेडियो प्रसारण भारत मे 1927 मे शुरू हुआ। 1957 से इस रेडियो का नाम है आकाशवाणी।

युद्ध न करने की प्रतिज्ञा–1975 मे। योरप के 20 देश फिनलैंड की राजधानी हेलसिंकी मे मिले। उन्होंने युद्ध न करने की प्रतिज्ञा की। यह प्रतिज्ञा फाइनल एक्ट कहलाता हैं FINAL ACT शाति स्थापना के प्रयत्न 1975 मे शुरू हुए। दस वर्ष तक ढीले रहे। 1985 मे गोर्बाचेव के आगमन के बाद प्रयत्न तेज हुए। नवम्बर 1990 मे सफलता मिली। उस वर्ष यह वैदिक मन्त्र सफल हुआ जो ओम शाति से शुरू होता है।

हिन्दु लोग हवन करते हैं जिसे वे ओम शाति के मन्त्रोच्चारण से समाप्त करते हैं।

इतिहास कब से और कहां से

इतिहास की जन्म स्थली पश्चिम एशिया और चीन हैं।

दूसरी बात यह है कि ये स्थान नदियों के मदान हैं। पानी के स्थान पर बस्ती नही बस सकती। नील नदी का मदान यानी मिश्र देश इतिहास की दृष्टि से पश्चिम एशिया में माना जाता है। दजला फरात और नील ये तीन नदियां इतिहास की जन्म स्थलियां हैं। चीन की ह्वागहो नदी है जिसका मदान इतिहास की जन्म स्थली है।

सभ्यता की तीसरी जन्म स्थली यूनान है। यूनान पश्चिम एशिया का पड़ौसी है। अंग्रेजी में यूनान को ग्रीस कहते हैं। प्लटो और सुकरात यूनान निवासी थे। ये दोनों व्यक्ति विद्याओं के जन्मदाता माने जाते हैं। खेल का प्रारम्भ यूनान में हुआ। ओलिम्पिया नामक नगर में 776 ई पूर्व से थोड़ा रेकार्ड मिलता है। परन्तु इनका प्रारम्भ 1370 ई पूर्व का है। 393 ईस्वी के बाद का रेकार्ड नहीं मिलता है। योग्य व्यवस्था के न होने के कारण खेल बंद हो गये। प्राचीन काल में सभ्यताओं का पतन होता रहता था।

ये खेल ग्रीस की राजधानी एथेंस में 1896 में फिर शुरू हुए।

पोलो–घुड़ सवारों का खेल है। घोड़ा प्रशिक्षित और सवार प्रशिक्षित होने पर ही ये खेल होता है। 525 ईस्वी के खेलो का रिकार्ड मिलता है।

इतिहास की पहली लड़ाई 490 ई पूर्व में लड़ी गई। ग्रीस फारिस नामक दो देशों के बीच लड़ी गई।

राजस्थान बना 17 मई 1949 में। उन्नीस राज्यों को मिला सरदार पटेल ने राजस्थान बनाया। सामंतवाद से जनता को उस दिन मुक्ति मिली।

शीत युद्ध शुरू हुआ 4 मार्च 1946 में। इसी दिन मुहावरेण आयरन कर्टन नामक शब्दावली का प्रारम्भ हुआ सबसे प्राचीन पुस्तक 704 ईस्वी पूर्व की है। दक्षिण कोरिया के एक मंदिर में ये पुस्तकें

मिली। गोरिया चीन म है। पूर्वी चीन म महासागर के किनारे परहै

बुद्ध पूर्णिमा–एक बहुत ही महत्वपूर्ण पव हैं। यह पव इति–हासिक और सास्कृतिक दानो महत्व रखता हैं। बुद्ध महाराज इतिहास का व्यक्ति है जा 400 ई पूव के आस-पास था।

रामनवमी–यह पर्व केवल सांस्कृतिक हैं। राम का ज म उस दिन का माना जाता है। पर यह वप कौनसा था पता नही। साथ ही राम का ज म–मरण का कौनसा काल पता नही। कोई इतिहासिक आधार नही है।

आर्यो का आगमन 1500 ई पूर्व म हुआ। वे पजाब म बस रिगवेद की रचना 1500 ई पूर्व के बाद किसी समय हुई। पजाब म हुई। 1000 ई पूर्व तक आय लोग गगा की घाटी म पहुच गए थे। ब्राह्मण ग्रथा की रचना गगा की घाटी म हुई। 900 ई पूव म महाभारत युद्ध हुआ 800 ई पूव म आय लोग बगाल पहुचे। महाभारत ग्रथ की रचना 800 ई पूर्व के आस पास हुई। रामायण काल भी यानी वाल्मिकी काल भी यही शुरू हैं। 350 ई पूव म उपनिषद ग्रथ बने।

544 ई, पूर्व म बुद्ध मह राज की मृत्यु हुई।

सेक्यूलरवाद एक मुस्लिम देश मे शुरू हुआ। टकी के प्रशासक कमालपाशा ने 1923 मे शुरू किया। इसके बाद मिश्र देश क प्रशासक नासिर ने सेक्युलरवादी की घोषणा की 1984 म।

केवल सात किलोमीटर की ऊचाई तक हवा हैं। तो हवा सीमित है। सात किलोमीटर से अधिक ऊचाई तक हवा चली गई तो जीवन समाप्त हो जाएगा। पर ऐसा होगा नही, क्या नही होगा इसी किताब मे कही दूसरे पृष्ठ पर उत्तर ढूढो।

शांति के प्रयत्न शुरू हुए जेनेवा मे 19–21 नवम्बर 1985

मे । तन ढकने का रिवाज शुरू हुआ 4500 ई पूर्व म ।

प्रकृति और समाज को समझने की विद्या ढूंढी गई 1859 म । डारविन न यह खोज की । प्रकृति का विकास होन स जीव बन । जीवों का विकास होन स मनुष्य बना । मनुष्य का विकास होन से विद्याओं का विकास हुआ । विद्याओं के विकास से आवागमन के विकास से मनुष्य एक मानव समाज बना रह हैं ।

विश्व विजयी होने की अभिलाषा रखने वाले हिटलर ने अपने रसोई घर म अपनी प्रेमिका के साथ आत्महत्या की 9 मई 1945 म । यह इसलिए हुआ कि उसने स्टेलिन को धोखा देकर, सोवियत सघ पर हमला कर दिया ।

दुनिया म 165 देश हैं । राष्ट्र सघ के सदस्य 160 देश हैं ।

दुनिया के सात बडे देश हैं

1 संयुक्त राज्य अमरीका 2 जापान 3 जर्मनी 4 फ्रांस
5 इटली 6 कैनाडा 7 ब्रिटेन

इन धनी देशों का क्लब कहते हैं । ये औद्योगिक देश हैं । ऊंची कारीगरी–टेक्नोलोजी इनके पास है । सोवियत सघ बड़ा देश है । सब तरह का जलवायु हैं सब तरह की वनस्पति हैं । बहुत बार वर्षा की कमी हो जाती हैं । शीत युद्ध की समाप्ती पर सोवियत सघ का यह लाभ हुआ हैं कि पश्चिमी योरप और अमरीका उसकी मदद कर रहा हैं ।

5500 वर्षों म कुल युद्ध हुए । 4500 पांच हजार पांच सौ वर्षों मे कुल युद्ध हुए चौदह हजार और पांच सो । इनमे मनुष्य 36 अरब 50 करोड 10 हजार दस हजार वर्षों के इतिहास में 292 वर्ष शांति क निकले । सबसे पहले लकड़ी का माला था यह माला दो लाख दो हजार वर्ष पुराना हैं ।

युग

पाषाण युग आज से दस हजार वर्ष पहले था। धातु युग, कांसा, लोहा युग 46 ईसवी से 453 ई तक था।

समाज का प्रारम्भ

1 अनजातियता–ट्राइब्लिज्म 2 सामंतवाद फ्यूडलिजम 3 पूंजीवाद– कैपिटलिजम 4 अधिनायकवाद – टोटेलीटेरियनिजम 5 राज्यविहीन समाज

रामायण एक कहानी है। इतिहास नहीं है। उसमें सन संवत नहीं है। राम एक कथा का नायक है। नौकाडरो होता है।

महाभारत एक कथा है। अर्जुन, भीम आदि कथा के नायक है।

लाला लाजपत राय की मृत्यु पुलिस की गोली से 1929 में हुई थी।

भारत में जातियां 3743 है।

भौतिकवादी विचार–मटीरियलिजम फ्रांसीसी विचारकों ने अठारवी सदी में मानव के सामने रखा।

किसी वस्तु की कीमत मार्केट में ही तय हो सकती है समाज का प्रगति स्वाभाविक है। प्रकृति का भी विकास हुआ है। निर्जीव प्रकृति में से सजीव प्रकृति निकली। सजीव प्रकृति में से मनुष्य बना

दुनिया के मन्त्रिमण्डल का नाम सुरक्षा परिषद है। इसके 15 सदस्य है।

विश्व समाज को तीन भागो में बांट रखा है। दोनो महाशक्तियां पहली दुनिया है।

सात औद्योगिक देश दूसरी दुनिया है बाकी 150 देश तीसरी दुनिया है।

सड़कों पर चलते मुसलमानों को आप देता मान है कि ये मुसलमान है। क्या पहचान उनकी।

मेल चालू हुए ईरान देश मे 776 ई पूव मे। स्थान इन्फिया था। 394 ईस्वी तक चालू रहे।

राजस्थान नहर का उदघाटन हुआ अक्टूबर 1927 में। भारत में भ पाये हैं 3500 तीन हजार पांच सौ। गति का कार्य क्रम गोवचिव ने शुरू किया 15 जनवरी 1986 में।

भारत म छापाखाना शुरू हुआ 1556 में।

स्टीम इ जन बना 1712 में।

1986 मे ईसाई धम को मानने वालो की सख्या थी। एक अरब चालीस करोड़।

जीवन का आरम्भ हुआ 6 करोड़ 93 लाख वर्ष पहले।

सबसे पहला विश्व विद्यालय 859 ईस्वी म मोरोको में, अमरीका म खुला।

सबसे पुरानी सभ्यता इराक नाम के देश मे शुरू। इराक पश्चिम एशिया मे है। आज कल पश्चिम एशिया इस्लामी क्षेत्र है। मक्का मदीना पश्चिम मे है। ये बातें 3500 वर्ष ई पूव के आस-पास की है। उस समय नगर राज्य होते थे। एक दूसरे पर हमला करना उनका साधारण काम माना जाता था। राज्य नदियों के किनारे होते थे। पश्चिम एशिया की नदिया हैं दजल फरात और नील सभ्यता का आरम्भ इन्ही नदिया के मैदान थे। दूसरा नम्बर चीन का हैं। ह्वांग हो नदी के किनारे बस्तियां बसी। पहिए की गाडी यही बनी। पहिया ही कारीगरी टेक्नोलोजी का आरम्भ है। घोडे की सवारी यहीं शुरू हुई। लोहे का प्रयोग, तावे का प्रयोग यही से और इसी समय से शुरू हुआ।

मिट्टी की पलेटों पर निराई गुण हुई मिट्टी के बनन आग म उसके बनाय थे।

विश्व इतिहास मे शाति का भावना पदा हुई

गौतम बुद्ध के समय के 567 ई पूव मे जब गौतम जन्मे थ। गौतम बुद्ध न शांति का प्रचार सामाजिक स्तर किया। विचार को जन्म दिया। राज्य स्तर पर अशोक महान न शाति की नीति अपनाई। प्रचार किया। उन्होंन एक युद्ध लडा। मनुष्यों की मृत्यु स क्षम चित्त हुए। दया भावना जाग उठी। हृदय पिघल गया दुख हुआ लडाई पर पश्चाताप किया। प्रण किया कि अब लडूगा नही इतना ही, उन्होंन शाति का प्रचार किया। समाज स्तर पर महाराज गौतम बुद्ध और राज्य स्तर पर सम्राट अशोक भारत भूमि के अमर व्यक्ति है।

हिन्दुओ का पहला और अतिम साम्राज्य

भारत के इतिहास का एक छाटा सा काल रहा है। यह गुप्त काल है। सातवीं सदी के पश्चात पांच दशक। हर्षवधन उस काल का सबसे बडा प्रतापशाली सम्राट रहा है। वह बौद्ध था। उसका समय था 606 ई से 647 ईस्वी तक।

712 ईस्वी

मुसलमानों का पहला आक्रमण 712 ईस्वी मे हुआ आक्रमणकारी जीता वापिस चला गया।

भारत की राजधानी कहना चाहिए आधुनिक भारत की राजधानी दिल्ली, 1911 स्थापित हुई। ब्रिटिश शासन का स्थापना काल से 1757 से 1911 तक कलकत्ता राजधानी रहा। 1911 में दिल्ली राजधानी हुई।

एक बार पहले भी मध्य युग म 1119 म दिल्ली राजधानी बनी। पृथ्वीराज चौहान दिल्ली का पहला बादशाह बना।

दक्षिणी भारत पहली बार

भारत के इतिहास म दक्षिणी भारत पहली बार भारत का भाग बना। विजय नगर साम्राज्य मे दक्षिणी भारत को 1336 म मिलाया गया।

परन्तु ग्यारह वर्ष बाद ही 1347 म वहा इस्लामी राज कायम हुआ। दिल्ली पर पहला इस्लामी हमला 1398 मे हुआ। तमूर न किया था 1469 म गुरू नानक का जन्म हुआ।

पहला योरप निवासी यानी पहला ईसाई भारत मे 1498 म आया। समुद्र से आने वाला वह पहला व्यक्ति था।

मई 1886 म मजदूर दिवस पहली बार मनाया गया 1469 गुरु नानक का जन्म। सिक्ख धर्म का आरम्भ पन्द्रवी सदी के अत से शुरू हुआ। यानी 1500 से आगे पीछे। सबसे नया धर्म यही है।

गोर्बाचेव से पहले शांति के प्रयत्न

1971 म फिनलंड की राजधानी हेलसिंकी में यारप के देशों की पहली सभा हुई। इसी नगर म 1975 मे दूसरी सभा हुई।

अप्रल 1985

यहा से शांति प्रयत्न—शुरू होते हैं। इतिहास म पहला बार 21 नवम्बर 1985 मे शिखर सम्मेलन हुआ। 21 नवम्बर का यह 1985 का यह प्रथम सम्मेलन जेनेवा मे हुआ। उसके बाद गार्बाचेव की कोशिश स शिखर सम्मेलन हर वर्ष होता ह। यही कारण है कि आणविक हथियार तिलमिला कर रह जाते ह। ढेर बढ़ता जाता है पर उनके निकलन की हिम्मत नही।

1526 से 1707 इस्लामी शासन

1757 से 15 अगस्त 1947 तक ब्रिटिश शासन

प्राचीन काल का अशोक महान

मध्यकाल का अकबर महान

आधुनिक काल का नेहरू महान

अध्यात्मवाद और जगतवाद का समन्वय शिरोमणि गांधी महान

मध्यकाल का सेक्यूलरवादी अकबर महान उलझन में पड़ा कि वह कौनसा धर्म माने। सोच विचार के बाद अकबर ने नमाज पढ़नी बंद कर दी। यह हिम्मत की बात थी। नेहरू के लिए सेक्यूलरवादी कोई कठिनाई नहीं थी। नेहरू तो अनीश्वरवादी था। पर अकबर के समय उस ढंग का अनीश्वरवादी होने का प्रश्न ही कहां था। आज विज्ञान का, विद्या का, ज्ञान और जानकारी का युग है पर उस समय विज्ञान कहां था, भौतिकवाद कहां था सभी आस्तिक थे। आस्था छोड़ने की बात ही कहां थी। ऐसा था अकबर महान। कुदरती सेक्यूलरवादी, परिस्थिति वश सेक्यूलरवादी।

1835 में अंग्रेजी भाषा का प्रवेश, भारत की एकता का प्रवेश राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक का प्रवेश। आधुनिक विद्याओं का केन्द्र, समस्त भारतीयों के एक स्थान पर मिलने का केन्द्र कलकत्ता हो गया। राजस्थान के व्यापारी हजारों किलोमीटर कलकत्ते बसने लगे। वहां से धन कमाकर राजस्थानी लोग सेठ श्रेष्ठ बन गए कुएं, तालाब खुदवाने लगे, धर्मशालायें बनी, स्कूल बने। पहली बार सेना को जन सेना बनाया गया। सब जातियों के लोग सेना में भर्ती होने लगे, पुलिस बनी, प्रबन्ध हुआ, पुलिस नाम की कोई संस्था नहीं थी।

1985 के अंत में गोर्बाचेव कहना शुरू किया।

'आप कहते हैं कि आप आक्रमणकारी को कुचल देंगे। आपके पास हथियार बहुत है। तो फिर हथियार दिखाते क्यों नहीं यह पाखण्ड है, विरोधाभास है। शेखी मारना, गौरव के साथ वक्तव्य देना कि हमारे पास हथियार हैं, कुचल देंगे। तो फिर दिखा दो। हम मान लेंगे कि आप हम कुचल देंगे तो आओ, हम निहत्थे हैं आओ देखो। यह आमन्त्रण गोर्बाचेव ने 21 नवम्बर 1985 को पहले शिखर सम्मेलन में जेनेवा में दिया।

बस, इस स्पष्टता की जरूरत थी और शांति वार्तायें शिखर सम्मेलनों में शुरू हुई।

यह मन्त्र दैनिक जीवन के लिए भी है। सब कुछ सामने करा और सामने कहा। मार्टिन लूथर किंग 1483–1546 धर्म सुधार का बेकन 1561-1626 प्रकृति विज्ञानी, इतिहासकार भौतिक वाद का जन्मदाता।

तुलसीदास ने रामायण नाम के महाकाव्य की रचना की अकबर के समय में सोलहवीं सदी में।

भारत के वैज्ञानिक

भास्कर प्रथम– ज्योतिष शास्त्री नवीं सदी ईस्वी में।

भास्कर द्वितीय–खगोल शास्त्री और गणितज्ञ 12वीं सदी में।

चीनी दार्शनिक कन्फ्यूशस 551–449 ई पू में

दांते– 1265–1321 इटली का महान कवि

चार्ल्स डार्विन 1802–1882 सबसे बड़ा वैज्ञानिक जिसने विकासवाद के सिद्धान्त की खोज करके स्पष्ट किया कि प्रकृति और समाज स्वयं रचित और स्वयं संचालित हैं। ईश्वरवाद जैसा अंध–विश्वास मिटे और सेक्यूलर विचार आगे बढ़े। प्रयोगशालायें बनने लगी।

1760 में इंगलैंड में पहला कारखाना खुला आधुनिक काल औद्योगिक काल चालू हुआ ।

14 जुलाई, 1789 में पहली राज्य क्रांति हुई । फ्रांस इतिहास में पहला गणतन्त्र बना ।

1831 में फ्रांस में मजदूरों ने इतिहास की पहली हड़ताल की
इतिहास में पहली कम्यूनिस्ट पार्टी 1847 से 1852 तक रही
कम्यूनिस्ट पार्टी का मेनीफेस्टो 1848 में प्रकाशित हुआ ।

1859 में डारविन की पुस्तक 'ओरिजिन ओफ दी स्पीसीज' प्रकाशित हुई ।

1867 में "कैपिटल" प्रकाशित हुई जो वर्तमान साम्यवाद की आधार पुस्तक है ।

राजस्थान के किसान ने 1452 में अपना खेत खोया । वह खेत उसे 1952 में वापिस मिला । उस दिन जागीर उन्मूलन कानून लागू हुआ ।

दो हजार वर्ष ईस्वी पूर्व में चीन में लिखित भाषा बनी पहली सदी ईस्वी में चीन में कागज बना ।

सातवीं सदी ईस्वी पूर्व में यूनान की राजधानी एथंस में पहला सिक्का बना । इसी समय एथंस में जमींदार और किसान दो वर्ग बन गए थे । बड़े और छोटे बन गए थे । इतिहास लेखन का पिता हिरो डोटस इसी समय हुआ था ।

पांचवीं सदी ईस्वी पूर्व में डीमोक्रेटस नामक विद्वान ने प्रचार किया कि आत्मा, परमात्मा जैसे देवता नहीं है । यह संसार इसके प्राणी इसी मिट्टी से बने हैं । इसी मिट्टी में पूरे के पूरे मिल जायेंगे।

संसार का पहला बादशाह अलेक्जंडर महान था । संसार का पहला साम्राज्य भी उसी का था । यह 334 ई पूर्व के आस–पास की बात है ।

बेकन–1561-1626 प्रथम अंग्रेज दार्शनिक प्रकृति-विज्ञान भौतिकवाद का जन्मदाता।

गोस्वामी तुलसीदास ने रामायण लिखी 1575 में अकबर के समय में।

प्राचीन भारत की विद्यायें जो इतिहास में नहीं लिखी जाती।

1 ईस्वी की बारहवीं सदी में भास्कराचार्य ने "सिद्धान्त शिरोमणि" पुस्तक लिखी।

2 ईस्वी की बारहवी सदी में "लिलावती" पुस्तक लिखी गई जो गणित और रेखा गणित पर विश्व की पहली पुस्तकों में है।

3 बौद्धायन ने पाइथोगरस थियोरम लिखी।

4 भास्कर द्वितीय ने रेखा गणित पर सिद्धान्त शिरोमणि लिखी।

5 सुश्रुत भारत का पहला सर्जन था।

6 आयुर्वेद का संस्थापक अत्रेय था।

7 धन्वन्तरी ने 'चिकित्सा विज्ञान' पुस्तक लिखी।

सभ्यता की प्रगति खेल

1 सबसे पुराना खेल है तीर चलाना, इससे शिकार भी की जाती थी। जीवन की यह मंजिल 8000 ईस्वी पहले की है।

2 दूसरा खेल है कुश्ती	2750 ई पूर्व
3 घुड़ सवारी	3000
4 शतरंज	200 ईस्वी
5 फुटबाल	1672
6 गोल्फ	1457
7 ताश	1825
8 मुक्केबाजी	1743
9 बैडमिंटन	1876
10 जिमनास्टिक	1776
11 नौका दौड़	1865
12 क्रिकेट	1774
13 क्रॉस कंट्री	1798
14 साइकलिंग	1868

युद्ध जीते नहीं जा सकते। इसलिए युद्ध नहीं होने चाहिए।
स्नेपन से विश्वास बढ़ जाता है।

ओलिम्पिया–यूनान में 776 ईस्वी पूर्व से 394 ई० पूर्व तक ओलिम्पिया नाम का नगर था। इसमें खेल शुरू हुए। इन खेलों को आजकल ओलिम्पिया कहते हैं।

नाचने का काम मिस्र में शुरू	2000 ई० पूर्व में
बास्केट बोल बनी	1891 में
बोक्सिंग	1867
क्रिकेट इंगलैंड में पहला मैच	1719
मोशन पिक्चर	1905

नोट–ताश बहुत पुराना खेल है। कहां शुरू हुआ इस पर विवाद है चीन, मिस्र, अरब और भारत–ये चार देश इसके शुरू करने के दावेदार हैं। इसके पत्तों की संख्या का धीरे धीरे विकास हुआ है। 52 पत्ते फ्रांस में तेरहवीं सदी में पूरे हुए।

चैस–शतरंज

दुनिया में पहला खेल शतरंज है। बड़े लोगों ने बादशाहों ने और उनके वजीरों ने यह खेल शुरू किया। वे ही इसे खेलते थे।

यह बात मान ली गई है कि शतरंज भारत में शुरू हुई।

स्टाम्प शुरू ब्रिटेन में 1840 में।

She can no more be ignored or wooed

Whichever way it ends the public and noholds-barred debate in the United States over sexual harassment of women by men is likely to affect social relations in this county, particularly in the relationship between the sexes Reverberations of the battle—which took place centrestage on Friday in the hearings of Ms Anita Hill's charges of sexual harassment against Mr Clarence Thomas President George Bush's nominee for the U S Supreme Court —are evident outside the senate arena,

Last week, virtually nothing else was discussed wherever men and women met, on television or in real life, If one were heading for a dinner party, one

would have to be prepared either to engage in debate, often sharp, or nurse a drink alone in a quiet corn r, If one were travelling in the subway, one could heart it all around Is She lying or is he ? No one really knew and no one perhaps can ever know, except the two involved parties themselves, It was clear that division ran right through the United States, vertica lly a ong political lines and criss cross through sexual ones But the issue raised was larger than the reputa tions of Judge Thomas and Prof Hill or who will be the next Judge in the U S supreme cour

Perhaps the single biggest feature to strike the outsider, even more than the breathtaking candour of the debate was the realisation that women had finally become a major political force in this most powerful of the world s democracies No congressman or senator can surive politically for long in this country by igno ring women s issues Ms Hill s accusation against Judge Thomas amounted to a charge of sexual hara-ssment against a former boss She could not really prove it nor could the judge ever hope to disprove it But it was an issue involving the power relation-ship between the sexes in today s world an issu which women had often tried to highlight but hadn't really succeeded until last week

How should men relate to women in the work place ? How should men behave in a changed work environment where rugby jokes and bathroom banter had once been perfectly normal for the boys ? Should women adopt the same behavioural traits that men had, now that they were competing with men in the same race ? Or should men become more sensitive and less aggressive in deference to the female presence

These were not questions that were raised or answered in Friday s extraordinary hearing of the senate judiciary committee These were questions being debated around the country, No clear answers, really, to any of the major questions being raised But they were important issues reflecting a changed society in which women s sensibilities were suddenly a major factor to reckon with

Could a boss ask his female subordinate out for a dinner date? Could he at all suggest that she render him romantic favours ? If she said No once, could he insist again and again ? Would she be within her rights to refuse and yet expect to be treated like one of the guys when it came to her turn for promotions? If she complained against her boss officially -- and in this country sexual harassment is legally a crime since 1985 -- could she hope to find a job somewhere else

without having people ask her uncmfortable qu*st o*s or turning her away as a potentially "troubl som*" employee ?

Ms Hill calmly and determinedly said that Mr Thomas had often suggested they go out for dinner and had also implied that she oblige him sexually Judge Thomas in a passionate and moving rebuttal denied everyone of her accusations No third person will perhaps ever be able to determine the truth But supposing Mr Thomas had asked her out, was he – at that time unmarried – doing something wrong ? Or was he doing something that came naturally to men, which was wooing a woman for romance ? Was he being unfair to his subordinate as a boss ? Or was he being a there man ? If he cracked lewd jokes with her could he be experted to respect women s right in the supreme court ? Or was such bawdiness normal ?

Questions galore The answers often depended on whether you were a man or a woman Some of the argumentation in public and private cut acress sexual lines but many men felt confused by the new and increasingly demanding expectations of their behaviour in office or outside while many women felt outraged or at least frustrated that even some otherwise sensitive men could not seem to understand the feminine

view of the controversy at all It is not an issue to be resolved overnight, But after the past week few americans could claim ignorance of what sexual harassment was

Meanwhile, it would be useful for us indians democrats that we are, to see a video recording for the debate in the senate judiciary committee on friday The frankness, the sheer onenness of it all, the refined argumentation even when it was in anger or humiliation produce a fine lesson in democratic functioning Fven the prurience that crept in repeatedly particularly during the intrrogation of Ms Hill, was hannled Landlen with dignity It must have been difficult for the senators to handle the embarrassing parts but they did it all with finesse, even when discussing an allegedly pornograpic movie about oversized human attributes

महान रूसी व्यक्तियों के दिमाग सुरक्षित

वाशिंगटन। प्रत्येक शनिवार को अमरीका में टैलीविजन पर 'सिक्सटी मिनिट्स' अर्थात 60 मिनट नाम का एक कार्यक्रम होता है। एक घंटे का यह कार्यक्रम शाम को सात बजे प्रारम्भ होता है। इसे सी बी एस पेश करता है। सी बी सी यहां की तीन बड़ी प्राइवेट टी वी कम्पनियों में से हैं। दो अन्य एबीसी और एनबीसी। 60 मिनट'' एक टी, वी पत्रिका की तरह है। हर कार्यक्रम में तीन या चार घटनाएं दिखाई जाती हैं जो अधिकतर ताजा समाचारों से सम्बन्धित होती हैं। कार्यक्रम बहुत ही लोकप्रिय है और पिछले कई वर्षों से इसे पेश किया जा रहा है।

महान व्यक्तियों के दिमाग सुरक्षित आठ सितम्बर 60 मिनट के दर्शक संकट में आ गए। उन्हें छोटे पर्दे पर मास्को की वह प्रयोगशाला दिखाई गई जहां सोवियत संघ के प्रमुख कम्युनिस्ट तानाशाही, कवियों, लेखकों और चित्रकारों के दिमाग रासायनिक द्रव्यों द्वारा सुरक्षित रखे हुए हैं। पिछले 67 वर्षों से यह प्रयोगशाला काम

पर रही है। इसका उद्देश्य है देश को अधिक महान व्यक्तियों के दिमाग का अध्ययन करके उनकी महानता के कारणों का पता लगाना आज तक किसी बाहरी व्यक्ति को इस प्रयोगशाला में पर रखने की इजाजत नहीं दी गई।

इस प्रयोगशाला की हर चीज एक राज थी। लेकिन पिछले महिने 74 वर्षों से सोवियत संघ म चली आ रही साम्यवादी तानाशाही के बाद कई राज खुले हैं। सबसे पहले इस गुप्त संस्थान म प्रवेश करने वाला रूसी पत्रकार हैं "मार्टिन बोरोविक"। आजकल यह मास्को मे सी बी एस के लिए काम करता है। वह कुछ वर्ष पहले अमेरीका मे जहा पर उसके पिता सोवियत संघ टेलिवीजन के प्रतिनिधि थे। अपने अमरीका प्रवास के दौरान बोरोविक अमरीकी टेलीविजन से बहुत प्रभावित हुआ।

यह अक्सर अपने पिता से कहा करता था कि वह अमरीकी पत्रकारों की तरह समाचार सकलन और प्रसारण क्यो नही करते यह सोवियत संघ म गोर्बाच्योव के सत्तारूढ होने से पहले का जमाना था। बेचारे पिता बेटे को क्या बताते कि साम्यवादी व्यवस्था मे विचारो और प्रेस की स्वतन्त्रता के लिए स्थान नहीं हैं। कुछ दिन बाद बोरोविक अपने पिता के साथ मास्को लौट गया। अगस्त म जब कट्टरपंथी कम्युनिष्टो ने गोर्बाच्योव का गर कानूनी ढग से तख्ता पलट कर सत्ता हथियाने की कोशिश की तो बोरोविक उन लोगों म से था जो मास्को की सडक पर उमड पडे और लोकतन्त्र के विरोधी षडयन्त्र को नाकाम बना दिया।

अब यही बोरोविक 60 मिनट के लिए काम करता है। उसी

ने सबसे पहले वास्को की गुप्त प्रयोगशाला म कदम रखा वहा के दाध कर्मचारी और डाक्टर उससे खुलकम दान कर रहे थ और एक के बाद एक रहस्य का उदघाटन कर रहे थे । सबसे पहले लेनिन का दिमाग दिखाया गया लेनिन ने सन् 1917 की कम्युनिस्ट क्रान्ति की अगुवाई करके सोवियन सघ की स्थापना की थी । इसके बाद लेनिन के उत्तराधिकारी स्तालिन का दिमाग दिखाई पडा । उसको हाथ म उठाकर बोरोविक ने ऊची आवाज मे कहा कि यह उस तानाशाह का मस्तिष्क है जिसने अपने को बनाए रखने के लिए अपने लाखों देश वासियो को मौत के घाट उतारा । फिर सभी लेखक, गोर्की, शाब ब्लादामीर माईकोवस्की और अणु वैज्ञानिक आद्र सखारोव के मस्तिक दिखाये गए । -

मरने के बाद लेनिन और स्तालिन का दिमाग निकाल कर उनके बदन को रसायनिक तत्वो स सुरक्षित करके जनता के दर्शनार्थ मास्को के रेड स्क्वायर म रख दिए गए । 1974 में जब पहली बार मास्को गया तो मन सिफ लेनिन के शव को वहा देखा । तब तक स्तालिन के शव को वहा से हटा दिया गया था । 1956 म सोवियत सघ की सत्तारूढ कम्युनिस्ट पार्टी की 20वीं काग्रेस [अर्थात सम्मेलन] हुई जिसमें उस समय के पार्टी नता खुश्चेव ने स्तालिन के जुल्मो का पर्दाफाश किया था । उसके बाद स्तालिन का शव दर्शनीय वस्तु नही रहा उसे वहा से हटाकर एक कब्र में दफना दिया गया ।

स्तालिन की बेटी स्तालिन की एक बेटी बच गई थी । उसका नाम था उनने स्वेतलाना ने मास्को में बसे एक भारतीय कम्युनिस्ट सुरेशसिंह स विवाह किया था । सुरेशसिंह की मृत्यु के बाद स्वेतलाना अपने पति की अस्थियां लेकर भारत आई थी । वह 1967 की बात है अपने

भारत प्रवास के दौरान स्वेतलाना ने अमेरिका से गुप्त रूप से राजनितिक शरण मांग ली और उसन सोवियत सघ छोड़ दिया।

इस घटना से भारत सरकार को काफी परेशानी उठानी पडी था। इन्दिरा गांधी उस समय प्रधान मन्त्री थी और राजा दिनेशसिंह उनकी सरकार में कैबिनेट स्तर के मन्त्री थे। स्वेतलाना के पति सुरेन्द्रसिंह दिनेशसिंह के सगे चाचा थे। अपने भारत प्रवास के दौरान स्वेतलाना अवध के कालाकांकर नामक स्थान में भी ठहरी थी। कालाकांकर उत्तरप्रदेश के प्रतापगढ जिले मे है। राजा दिनेशसिंह के पुरखे ताल्लुकेदार थे। स्वेतलाना न अमरीका आकर फिर विवाह कर लिया। अब उन पर सोवियत सघ में कोई पाबन्दी नहीं है। और वह अधिकतर वहीं रहती है। स्वेतलाना की मां अर्थात स्तालिन की पत्नी की बहुत ही रहस्यमय ढग से मृत्यु हुई थी। वह अपने पति से 20 वर्ष छोटी थी। उसकी मृत्यु का कारण स्तालिन को भी बताया गया।

लेनिन की इच्छा—इधर सोवियत सरकार ने लेनिन के शव को भी हटा दने का फैसला किया है। उनकी अन्तिम इच्छा थी कि उन्हें मृत्यु के बाद लेनिनग्राद मे उनकी माता की कब्र के पास ही दफनाया जाए। मृत्यु के 67 वर्ष बाद लेनिन की अंतिम इच्छा पूरी की जा रही है। लेनिनग्राद का पुराना नाम सेंट पीटर्सबर्ग था वह रूस के जार शासको की राजधानी रहा है। 1917 की क्रांति के बाद इस शहर का नाम बदलकर लेनिनग्राद रख दिया गया। सोवियत सघ की राजधानी वहा से हटाकर मास्को बना दी गई। लेनिनग्राद रूसी गणतन्त्र का मास्को के बाद दूसरा बड़ा शहर है इसे जार शासक पीटर महान ने बनवाया था।

सोवियत संघ म हर गली के मोड़ पर और हर सरकारी दफ्तर म लेनिन का बुत रखा हुआ ह। सोवियत संघ मे एक कार खाना है जिसका काम लेनिन के बुत बनाना ह। अकल किएव शहर मे लेनिन के तीन सौ बुत हैं कियेव युक्रेन गणतत्र की राज धानी ह जिस। सोवियत संघ से अलग होने का ऐलान कर दिया है शहर के बीचोबीच लेनिन की एक भीमकाय प्रतिमा ह जिसे हटाने पर आजकल विचार विमर्श हो रहा ह। सोवियत संघ के सभी सरकारी दफ्तरो से लेनिन की प्रतिमाए हटाई जा रही ह।

आजकल जो कुछ लेनिन की प्रतिमाओ के साथ हो रहा है, सत्ता म आने पर वही कुछ उन्होने अपने पूर्वक शासक जार के साथ किया था। उनके पूरे परिवार को बच्चों सहित गोली मार दी गई थी। न कोई अदालत न फरियाद जो कुछ लेनिन कहे उसे ही सच मानने का जमाना था। उस समय यह कहा गया कि जार घराने को अपने किए का फल मिला जार जाही काफी जालिम थी और उसने जोर जबरदस्ती से जनता पर राज किया उनके इस रवैये ने जनता म नफरत पदा कर दी और वह मजबूरन कम्युनिस्टो के साथ हो लिए।

स्तालिन और ट्रटस्की—कम्युनिस्टो ने ठीक वही किया जो जार किया करते थे और उनको भी वही सजा मिली। कम्युनिस्ट कई मामलो में जारशाही से भी क्रूरता म बाजी मार ले गए। मसलन स्तालिन ने उन सब व्यक्तियो का सफाया कराया जिन्होने लेनिन को सत्ता में आने मे सहायता दी थी। अंग्रेजी में एक कहावत है कि क्रांति सबसे पहले अपने बच्चों को खाती है। स्तालिन ने इस कहावत को चरितार्थ किया लेनिन के समकक्ष इसी क्रांति के एक अन्य नेता थे

ट्राटस्की वह कई मामलो मे लेनिन से बढ कर थे। ट्राटस्की ने क्राति के बाद सोवियत सेना जिसे "लाल फौज" कहा गया। उसे गठित करने मे महायता दी थी।

स्तालिन हमेशा ट्राटस्की से जलते थे। उन्हे डर था कि वह कही लेनिन के बाद सत्ता में न आ जाए। सन् 1924 मे जब लेनिन की मृत्यु हुई तो ट्राटस्की मास्को के बाहर सरकारी दौर पर थे। स्तालिन ने उस समय सारी जिम्मेदारी सम्भाल ली और ट्राटस्की को मृत्यु तक की सूचना भी न भिजवाई। मास्को आकर ट्राटस्की लेनिन के शव का सुरक्षित रखने के प्रस्ताव का विरोध किया। उनका कहना था कि इससे व्यक्ति पूजा बढेगी। स्तालिन ने उनके सुझाव का ठुकरा दिया ट्राटस्की को पहले देश निकाला दिया गया और बाद मे उनकी हत्या करवा दी गई।



वैज्ञानिक समाजवाद के पूर्ववर्ती

1 हेनरी डी सैंट साइमन 1760–अंग्रेज

2 चारलस फोरिये– 1772–1837 फ्रांसीसी

3 रोबट ग्रावन 1771–1858

इस प्रकार समाजवाद की विचार धारा समाजवाद का दर्शन शास्त्र 18वीं सदी म प्रारम्भ हुआ। यह यूरापियन समाजवाद कहलाता है। यूरापिया एक टापू था जहा यह विचार पहले पहल हुआ। उन्नीसवीं सदी मे मार्क्स ने वैज्ञानिक समाजवाद चलाया। समाज की प्रगति के नियम है जिन्हें मार्क्स और एगलस ढूँढे।

रामायण की रचना तुलसीदास जी ने 1575 मे की। यह अकबर का समय था।

संसार के सात बड़े देश हैं। 1 अमेरिका 2 जापान 3 जर्मनी 4 फ्रांस 5 इटली 6 कैनाडा 7 ब्रिटेन

ये सातों पूंजीवादी देश हैं। सोवियत संघ और चीन इनमें नहीं हैं। इन सातों को इसीलिए पूंजीवादी सप्त कहते हैं। इन दोनों समाजवादी देशों को मिलाने से बड़े देश आठ हैं। संसार के कुल देश 170 हैं। राष्ट्र संघ के सदस्य 160 हैं। 10 देश बहुत छोटे देश हैं। ये देश अधिकांश समुद्र में बसे टापू हैं।

विश्व सदैव है, असीम है। जीवन बाद का है। मनुष्य दस हजार वर्ष का है। समाज का विकास हुआ है और हो रहा है। प्रकृति का भी विकास हुआ है। पृथ्वी ने अपना जीवन गर्म उगलते कीचड़ से शुरू किया। टुकड़ा सूरज से टूटकर विश्व में घूमा। जहां अच्छा जलवायु मिला वहां रुक गया। यह सब संयोग वश हुआ। इसके पीछे न कोई योजना थी और न कोई कर्ता धरता था। यह अनादिकाल माना भूमण्डल का आत्मवान था। प्रारम्भ संयोगवश हुआ। ज्यों समय बीता, नियमानुकूल सेट विभाग बनते गये। नियम बदलता में जो बात सेट न हो सकी वे मिट गई।

पश्चिमी देश सोवियत संघ के खण्डित होने के पक्ष में नहीं हैं। अमरीका और सोवियत संघ दो महा शक्तियां रही हैं और एक दूसरे को कमजोर करने के पक्ष में रही हैं। एक ने यह चाहा है कि वह दूसरे से आगे रहे। पर आज 1991 के अंतिम दिनों में अमरीका की प्रबल इच्छा है कि सोवियत संघ अब आगे टूटे नहीं। बारह गण राज्य जो बचे हैं वे एक रहें। तीन बालटिक गणराज्यों के टलने के बाद अब बारह ही रह हैं। इन बारह में पांच हैं कजाकिस्तान, उजबेकिस्तान, तुर्कमानिस्तान, ताजकिस्तान और किरगिजिया ये पांचों इस्लामी देश हैं। सोवियत संघ के साथ सत्तर वर्ष रहने पर भी वह बहुमत के हिसाब से इस्लामी देश हैं। इसलामी भावना

जागृत हो गयी है। पश्चिम को यानी अमरीका आदि को भय है कि यह पश्चिम एशिया के मुसलिम राज्यों की तरफ न झुक जाय। बड़े चार धर्मों में बस एक इस्लाम ही कट्टर है। बाकी सब आधुनिक और उदार हैं। सोवियत संघ उन पांच में से है जिनके पास निषेधाधिकार हैं। खंडित होने पर इस निषेधाधिकार का क्या होगा? यह प्रश्न गम्भीर है।

सी आर पी सेंटरल रिजर्व पुलिस बल राज्य सरकार का विषय है। परन्तु सी आर पी पुलिस होते हुये भी केन्द्र के अधीन है। यह बल 1939 में बना था। इसमें महिला बटालियन भी है। जानने लायक बात है कि केन्द्र सरकार ने जब देखा कि पंजाब पुलिस आतंककारियों से ठीक नहीं निपट रही है तो यही सी आर पी बल भेजा गया था। आतंककारी इसी सी आर पी पर घात लगा कर हमला करते हैं। ये आतंककारी भारत में सब जगह हैं। कार खाना की रक्षा के लिए सैन्ट्रल इण्डस्ट्रियल सक्युरिटी फोर्स बना हुआ है।

आसाम राइफल्स– एक प्रकार पुलिस बल है। केन्द्र के अधीन हैं। आसाम के देश द्रोहियो के लिये हैं।

सिविल डिफेंस– एक प्रकार की पुलिस है केन्द्र के अधीन।

चाइल्ड मैरिज एक्ट 1929 लड़का 21 वर्ष का और लड़की 18 वर्ष की होनी चाहिए। गैर कानूनी होने वह विवाह गलत होगा कानूनी सहायता नहीं मिलेगी।

ऑक्सीजन का काम

इसका काम जलाना है। ऑक्सीजन नही होगी तो आग नहीं जलेगी ओक्सीजन नहो होगी तो भोजन नहीं पचेगा। हजम नही होगा। भोजन पचना है का अर्थ है भोजन जलता है। जब हम सास लेते हैं तो हम ओक्सीजन और नाइट्रोजन दोनो फेफडो म जाती हैं। वहा जाकर रक्त मे मिल जाती है और शरीर की प्रत्येक कोशिका म पहुच जाती है। भोजन का जलाना और शरीर को गर्म करना ये दो काम आक्सीजन के हैं। फूक मारते हैं तो आग जलती हैं क्योंकि हम आग मे अधिक ओक्सीजन देते हैं, परिश्रम से व्यायाम से अच्छी भूख लगती है क्योंकि हम अधिक सांस लेते है और अधिक ओक्सीजन शरीर मे पहुचाते है तो भोजन अधिक तेजी से पकता है यानी जलता है।

ऑक्सीजन कब बनी, या कहा से आई, कोई नहीं जानता ? इतना ही कह सकते हैं कि जीव पैदा हुए क्योंकि ओक्सीजन थी।

आक्सीजन के बिना पोधा नही बढेगा, बीज नहीं उगा। ओक्सीजन के बिना पोधे को गर्मी नही मिलेगी। भूमध्य रेखा के दोना तरफ वन होने का कारण है कि वहा ओक्सीजन है गर्मी है।

Fossil remains of premitime men have been Found that go back to a time 10 00000 years ago

मनुष्य के वशेष जो मिले हैं, वे दस लाख वष पुराने हैं।

चीन की दिवार महान

विश्व का पहला साम्राज्य चीनी साम्राज्य था। यह बात 221 ई पूव की है। सम्राट ने विश्व दिवार बनाई। इसके बनने मे 15 वष लगे। यह अब भी कायम है।

विचित्र प्रकाश

धरती के उत्तरी भाग म पर तु उत्तरी ध्रुव से पहले आकाश मे प्रकाश छाया रहता हैं। यह प्रकाश कहा से आता हैं, क्यों होता हैं कुछ पता नही। यह घटना फिनोमेना–रहस्यमय हैं, समझ से बाहर हैं। इसीलिए इधर किसी वैज्ञानिक का ध्यान नही जाता।

विकासवाद इवोल्यूशन क्या है, क्यो है

कुछ पता नही। परन्तु विकासवाद की प्रक्रिया की प्रारम्भ की खोज 1859 म डारविन न की। इसी तारीख से वज्ञानिक शिक्षा का आरम्भ मानना चाहिए। मूल नियम हैं कि मनुष्य पग नही हुआ बना नही। उसका धीरे–धीरे हजारों वर्षों म विकास हुआ हैं सवम पहले मनुष्य का उदय उत्तरी पूर्वी एशिया म न ो के किनारे मनुष्य का उदय हुआ। परन्तु ठोस सबूत इस जगह के पक्ष मे नहीं हैं।

प्रारम्भिक मनुष्यों के-प्रिमिटिव मनुष्यों के अवशेष-फोसिल्स मिले हैं। ये दस लाख वर्ष पुराने हैं। तो मान लो कि मनुष्य प्रारम्भिक रूप यानी जो धरती पर चलना दस लाख वर्ष पहले शुरू हुआ।

तो मनुष्य दस लाख वर्ष का है। धरती पांच अरब वर्ष की है।

मनुष्यों के होने और रहने के प्रमाण पश्चिम एशिया में मिलते हैं। कहना चाहिए दजला और फरात नदियों के किनारे मिलते हैं। इन दो मैदानों में नील नदी का मैदान भी शामिल है। यह बात पांच लाख वर्ष पहले की है।

समझो मनुष्य का मनुष्यों की तरह रहना पांच लाख वर्ष पुराना है और स्थान है पश्चिम एशिया।

तीन लाख वर्ष पहले, मनुष्यों की टोलियां समुद्र के रास्ते से इंडोनेशिया और चीन की तरफ गईं।

कलेण्डर बना 6000 वर्ष छः हजार वर्ष पहले पहले मिश्र में वर्ष में 365 दिन निश्चित किये गए। यहां कैलेण्डर का आविष्कार हुआ।

मिश्र के बाद रोमन सम्राट ने इसको और सही बनाया चौथे वर्ष 366 दिन वर्ष के कर दिए। इसे ग्रिगरियन कलेण्डर कहलाता है। पोप ग्रेगरी ने चालू किया था।

पहली पुस्तक छपी 1440 में।

वर्णमाला 3500 वर्ष पहले यानी 1500 वर्ष ई० पूर्व में बनी। यह हुआ रूमसागर के मैडिटेरेनियन सागर के पूर्वी किनारे के पास। आज यहां तुर्की, मिश्र, फिलिस्तीन, इसरायल आदि देश बसे हैं। यहां से यह वर्णमाला ग्रीस पहुंचा।

Ancestor Langvage

बाप दादाओं की भाषा, for the sake of conveience

सुमीत के लिए सरलता के लिए, अंग्रेजी भाषा 450 ई में शुरू हुई। परन्तु आधुनिक अंग्रेजी चली सन् 1500 से।

पेन–कलम

पहला पेन मनुष्य की अंगुली थी।

पहली स्याही

फलों का रस और जानवरों का खून।

लोहे का पेन

इंगलैंड में 1780 में बना। फाउंटेन पेन बना अमरीका में 1885 में। पेनसिल बनी 1795 में।

कागज चीन में बना सन् 105 में। आधुनिक कागज 1798 में बना जो समाचार आज चल रहे हैं उनमें सबसे पुराना है 'टाइम्स ओफ लंदन' यह पत्र 1785 में शुरू हुआ।

किताबें कब बनीं

मध्य युग से पहले किताबें नहीं बनीं। 450 के आस पास भेड बकरी की खाल पर लिखाई होती थी। लेटिन भाषा में यह पहली किताब निकली गई।

पहली अंग्रेजी की डिक्शनरी निकली 1552 में।

सोना — मनुष्य का पवित्र पीला और पहला धन है। मिश्र के लोगों ने आज से 5,000 हजार वर्ष पहले सोना निकालना शुरू किया था। मनुष्य के पहले हमले जमीन के लिए नहीं सोने के लिए हुए थे। सिरिया के लोग अपने पडोसियों पर सोने के लिए हमला करते थे। यह घटनाये 4500 वर्ष पहले की थीं। ग्रीक और रोमन बादशाह दूसरे कमजोर बादशाहों पर उनका सोना छिनने

क लिए आक्रमण करते थे। उस समय के दासो से सोने की खुदवाई कराया करते थे।

दो हजार वर्ष पहले विश्व का पहला वैद, डाक्टर हुआ। उसका नाम था हिप्पोक्रेटस दवाओ का जन्मदाता था।

साबुन कब बनो ?

साबुन पहली सदी ई पूर्व मे बनी।

सुगन्ध

गुलाब के फूल को बडे लोग 1300 वर्ष पहले काम म लेते थे। गुलाब का इत्तर भी इसी समय बनने लगा। इसी समय चन्दन की सुगंध का भी प्रयोग हुआ।

जुते

पहले लकडी की खडाऊ चली। सबसे पहले अमरीका 1629 मे चमड के जूते बने।

एनका आविष्कार 1352 मे हुआ।

आटा और रोटी

दो पत्थरो के बीच मे आटा पीसने का काम आज से पाच हजार वर्ष पहले शुरू हुआ।

चाय

चाय का स्थवेन चीन है। चीनी लोग चार हजार वर्ष से पीते आये हैं। योरप मे चाय 1690 मे पहुची 1790 के आस पास चाय योरप और अमरीका आने लगी। सबसे ज्यादा चाय भारत मे उगती है।

चाय की जन्म भूमि आसाम है। आसाम मे यह जगल में

सु-रनी रूप में उगती थी। बाद म इस सेना म उगाया जाने लगा चीनी लोग आसाम से बीज ले गये और चाय की खेती करने लगे। आसाम से ही लगा गई और उगाई जाने लगी। आज कल चाय जाना गुमात्रा और फोमूसा म उगाई जाती है। सबसे ज्यादा भारत म खपती है।

आज का दिन और चाय

पाच अरब की जन सख्या म से साढे चार अरब लोग चाय पीते हैं। जहा देखा चाय हर गली म चाय, सब जगह चाय। किसी आदमी का रोकने का, राजी करने का यह बना बनाया उपाय है। चाय एक A relaxation है विश्राम है। भाई चारे का बना बनाया सूत्र है मत्र है। बैठो सा, च य तो पीके जाओ यह मनचाहर चलती रहती है। सबसे ज्यादा चाय निर्यात करता ह

धूम्र पान–स्मोकिंग

धूम्रपान शुरु हुआ–फ्रास म 1556 हैं पुर्तगाल म 1558, स्पेन मे 1559 म इगलण्ड म 1565 मे।

1556 से पहले धूम्रपान कही नही था। धूम्र को हम स ही हानिकारक माना जाता रहा ह। तुर्की सरकार न घोषणा की कि धूम्रपान करने वाले को मृत्यु दण्ड दिया जायगा। रूस क सम्राट ने हुक्म निकाला कि स्मोकिंग करने वाले का नाक काट लिया जायेगा। आज हर कोणा पर धूम्रपान मिलेगा। दिया सलाई 1833 मे बनी। पेटरालियम 1859 म ढूढा गया। पेटरोलियम मे से ही किरोसिन निकाला जाता हैं।

बाइसिकिल बनी 1865 मं।

पहली उडान 1903 मे।

Telephone in 1875

Typewriter 1873 मे

मजदूर की सुरक्षा मे लिए फैक्टरी एक्ट 1948 बना। होम गाड बना बना 1946 मे। छात्रो का बन हैं। पुलिस की मदद के लिए 1962 मे इसमे सुधार हुआ।

पटरोल मे चलने वाली कार	1887 मे
हवा म पहली उडान दिसम्बर 17,	1903 म
चलते हवाई जहाज से उतरना	1912 मे
टेलीफोन बना	1875 मे
टाइप राइटर	1873 में
सीने की मशीन–सींगर मशीन	1851 मे

उत्तरी प्रकाश

ध्रुव प्रदेश से पहले, आकाश में एक प्रकाश होता है। कही 50 किलोमीटर और कही सौ किलो मीटर की ऊचाई पर होता है। यह क्यों होता है, कैसे होता है। अभी तक मालूम नही हो सका। यह विश्व का बडा आश्चर्य है और एक रहस्य है। दक्षिणी गोलाई मे भी होता है, पर थोडी दूर मे। उत्तरी कैनाडा म उत्तरी स्कोट लड मे, दक्षिणी नोरवे फिर दक्षिणी स्विडन मे यह प्रकाश दक्षिण मे सरकार अमरीका मे यू एस ए में भी आ जाता है।

1951 में सार्वजनिक क्षेत्र मे केवल मे 5 फैक्टरिया थी जो 1988 में 231 हो गई।

पहला कारखाना बम्बई में खुला 1854 मे। रूई के कपडे बनाने का था। भारतीय पूजी और भारती प्रबन्ध था। दूसरा कारखाना कलकत्ते म खुला जो जूट का था। लेकिन इसमे विदेशी पूजी थी और विदेश प्रबन्ध। खान से कोयला निकालने का काम भी रानी गज मारिया में इसी समय शुरू हुआ।

सीमेंट का पहला कारखाना मद्रास में 1904 में बना। कागज का पहला कारखाना 1832 में। बंगाल में सिरामपुर में खुला। लोहा और स्टील का कारखाना 1870 में बना। सदरी फैक्ट्री 1951 में बनी।

सोना–पीला धातु

भारत में सोने की तीन बड़ी खानें हैं। ये तीनों खान दक्षिण भारत में है 2 कर्नाटक जिले में और एक अनन्तपुर में।

104 टन सोने का अनुमान है।

लोहा–आधार भूत धातु

2100 इक्कीस सौ करोड़ टन लोहा भारत की खानों में है।

चूना– भारत में 6 030 करोड़ टन चूना है।

रेल– 1853 में चली, बम्बई से थाना तक।

सन्देश वाहन

पोस्ट आफिस खुले 1837 में।

पहली पोस्टेज स्टाम्प कराची में निकली 1852 में। रेलवे मेल शुरू हुई 1907 में।

हवाई डाक से शुरू हुई 1911 में। तार भेजना चालू हुआ 1851 में।

हवाई डाक से शुरू हुई 1881 में।

टेलीफोन कलकत्ते में चालू हुआ 1881 में

मजदूरी भुगतान कानून बना 1936 में

न्यूनतम मजदूरी कानून बना। 1948 में।

विश्व के मन्त्रिमंडल का नाम सुरक्षा परिषद है। इसके 15 सदस्य हैं। इनमें 11 सदस्यों का चुनाव होता है। 4 सदस्य स्थाई

है। इसका कभी चुनाव नहीं होता। यह मन्त्रिमंडल 1945 में बना था, तभी से ये पांच राष्ट्र सदस्य हैं और सदा रहेंगे। पांच देशों की यह स्थायी पंचायत है। पांच की संख्या बड़ी शुभ और नामी संख्या है। अनादि काल से चली हमारी पंचायत भी पांच में बनती थी। पंच फैसला कहलाता था। कोई भी पाँच मिलकर फैसला करते थे। सबको मान्य होता था। तो फिर ये पांच देश हैं जो सदा रहने वाले स्थायी सदस्य हैं। ये पांच देश विश्व विजयी हैं। इन्होंने हिटलर को हराकर विश्व को फासिज्म नाम के अधिनायकवाद से बचाया था। पांच के मुंह से परमेश्वर बोलता है यह धारणा हमारी रही है। सो ये पांच हैं, सोवियत संघ जिसने हिटलर को उसकी रसोई में बंद कर दिया था, जहां उसने आत्महत्या की थी। दूसरा सदस्य है अमरीका जिसका लिखित नाम है संयुक्त राष्ट्र अमरीका। तीसरा नाम है ब्रिटेन जिसके साम्राज्य में सूरज नहीं छुपता था। पूर्व से पश्चिम और पश्चिम से पूर्व सब जगह अंग्रेजों का राज्य था। अंग्रेजों ने विश्व को सभ्य बनाया सब जगह लोकतन्त्र पहुंचाया। सब जगह अंग्रेजी पहुंचा कर एक विश्व भाषा बनाई। अंग्रेजों के कारण हमारा देश भी एक हुआ है और एक है।

चौथा नाम है - फ्रांस। संसार को सभ्य बनाने में फ्रांस का भी बहुत सहयोग रहा है। नेपोलियन जैसा उदार योद्धा फ्रांस में ही हुआ है।

पांचवां सदस्य है चीन जहां विश्व के पांचवें हिस्से की जन संख्या है। पांच अरब की आबादी में 90 करोड़ नब्बे करोड़ मनुष्य चीन में हैं। सभ्यता का आरम्भ चीन में हुआ था। सभ्यता के आरम्भ का दूसरा स्थान ग्रीस है, यूनान है। एक स्थान पूर्व में और दूसरा स्थान पश्चिम में।

विश्व के ससद का नाम है जनरल असम्बली । इसकी सदस्य सख्या 160 है एक सौ साठ । ससार म इतने ही देश हैं।

राज के दो भाग हैं । एक भाग है मन्त्रिमडल जो चुनाव से बनता है । दूसरा भाग हैं स्थायी नौकरियां जो स्थायी हैं जिनम से किसी एक नौकर को भी नही हटा सकते । मानलो किसी आदमी ने रिश्वत लेली या किसी ढग से उसने सरकारी रूपये का दुरूपयोग कर लिया तो उसकी जाच होगी । जाच म वष लग जाए गे तब तक उसे कुछ वेतन मिलता रहेगा । बगाल म 15 वष से कम्यूनिस्ट सरकार हैं पर वह सरकार दबी रहती हैं । सरकारी नौकर के काम करने की गति धीमी होती हैं । हर काम को नियमों म उलझाया जाता हैं । उलझन को सुलझाने में एक पग बाधक बन जाता है। नियमो के विभिन्न अथ लगाये जाते हैं । छोटे अफसर से बड अफसर की तरफ नियमों की यात्रा शुरू होती है । यह यात्रा उतार चढाव मे फसी रहती हैं ।

आर्थिकहित और राजनीतिक हित जहा टकराते हैं, लोकतन्त्र का पूरा लाभ मिल नही सकता ।

बगाल मे कम्यूनिस्ट सरकार समाज का कल्याण इसीलिए नहीं कर पाई कि वह नौकरशाही के अर्थालकार मे फसी हुई है ।

चीन की जनसख्या दस अकों की है । एक अरब तेरह करोड़ छत्तीस लाख, बियासी हजार पाच सौ एक है–1133682501 है दुनिया की कुल पाच अरब के आस पास ह । चीन मे 85 करोड भारत में 75 करोड ।

कम्यूनिस्ट कायक्रम 1903 मे बना था जिसमें कहा गया है प्रालिटेरियन क्रांति से वर्ग मिट जाए गे । इस प्रकार सामाजिक और आर्थिक असमानता हमेशा के लिए मिट जायेगी । यह था 1903 का

डाक सेवा 1837 में शुरू हुई। पहला डाक टिकट 1852 में राची से निकला। डाक विभाग शुरू हुआ 1854 में।

मनीआडर प्रणाली शुरू हुई 1880 में। डाक घर बचत बैंक 1882 में बना। रेल डाक सेवा शुरू हुई 1907 में, हवाई डाक सेवा शुरू हुई 1911 में। पहली टेलिग्राफ लाइन 1851 में कलकत्ता से चालू हुई। 1884 में कलकत्ता से आगरा टेलिग्राफ जारी हुआ।

अहिंसा

अतर्राष्ट्रीय संधियों में पहली बार अहिंसा दर्शन को मान्यता प्राप्त हुई। शांति के प्रचारक राजनेता गोर्बाचेव नवम्बर 1986 में पहली भारत यात्रा की। दोनों देशों ने पत्र तैयार किया वह दिल्ली घोषणा पत्र कहलाता है। इस घोषणा में दोनों देशों ने अहिंसा के नाम पर चलने का वचन लिया। गांधीवाद को पहली बार इतने बड़े देश ने स्वीकार किया। अहिंसा का प्रण लेकर नवम्बर 1986 से सोवियत संघ ने देशों का दौरा शुरू किया। उसे सफलता मिली और आज युद्ध की आशंका मिट गई। यह दिल्ली घोषणा पत्र से शुरू हुआ था।

गांधीजी का अहिंसावाद और सोवियत संघ का शांतिपूर्ण सह अस्तित्व का दर्शन, दोनों ने आज हजारों वर्ष पुरानी समाज हिंसा को समाप्त कर दिया है।

गांधीजी का अहिंसावाद और गोर्बाचेव का खुलावाद, इन दोनों विचारों ने आज विश्व शांति को ऊंचे चबूतरे पर विराजमान कर दिया है।

गोर्बाचेव ने सोवियत संघ ने अमरीका से संयुक्त राज्य अमरीका से कहा आओ और देखो कि हमारे पास कितनी सेना है और क्या

हथियार है। अमरीका ने देखा कि सोवियत संघ के पास वह है
कुछ है जो अमरीका के पास है। विनाश का भूत अमरीका के सिर
पर चढ़ गया। सुरक्षा की संधियां करके और गोर्बाचेव से मित्रता
बढ़ाकर अपने भय को दूर किया।

सच्चे का समाज हितकारी को गोपनियता का सिक्रेसी की जरूरत नहीं। सोवियत संघ की शांति की नीति सदा ही सच्चाई और इमानदारी की थी, पर विरोधी को विश्वास कैसे और क्यों हो। दिखाओ और जचाओ। बस यही खुलापन है। सोवियत संघ ने यही किया और विश्व शांति को बचाया। मानव को विनाश से बचाया। दो पक्षों के बीच में थोड़े समय के लिए निर्णय गुप्त रखा जा सकता है। इसे कोनफीडेंशल कहते हैं। यह आवश्यक है। Confidentiol बना Confidence से। यह जरूरी है।

सीमा सुरक्षा बल 1965 में बनाया गया।

पहली रेलगाड़ी 1 अप्रैल 1853 में चली। बम्बई से थाना तक 34 किलोमीटर चली।

सरकारी क्षेत्र का खाद का कारखाना 1951 में बिहार में बना।

यू एन आई की स्थापना 1959 में हुई। यह सरकारी कम्पनी है समाचार इकठे करके पत्रों को देती है।

स्वर्ण नियंत्रण अधिनियम 1968 इस कानून के अनुसार भारत सरकार सोने की बिक्री, भाव आदि पर कंट्रोल रखती है। देश में सोने की दो खानें हैं भारत गोल्ड माइंस लिमिटेड हुट्टी गोल्ड माइंस लिमिटेड। भारत गोल्ड माइंस द्वारा निकाला गया सारा सोना भारत सरकार ले लेती है। हुट्टी खान से निकाला गया सोना बम्बई बाजार के भावों पर सोने के उन औद्योगिक उपभोक्ताओं को बेचा जाता है जिनको लाइसेंस मिल जाता है।

देश मे सुग्ररों की सख्या एक करोड दस लाख है।

देश म भेडा की सख्या पाच करोड है। 1987 म ऊन का उत्पादन 4 करोड टन और 15 लाख टन था। देश मे ऊन की कुल माग छ करोड किलोग्राम है। एक सौ असी लाख टन ऊन बाहर स मगवाई जाती है। 180 लाख टन 1982 मे। 1924 करोड गाय बैल थे। सात करोड भसे थी। भसा मे ससार म भारत का दूसरा नम्बर है। गाय बैलो मे छठा नम्बर है। देश में दूध का उत्पादन 1987 मे 440 टन था।

रिजव बैंक की स्थापना 1 अप्रेल, 1935 मे हुई थी। 1 जनवरी, 1949 को रिजव बक का राष्ट्रीय करण किया गया था। नोट छापने का अधिकार इसी को है। एक रूपये के सिक्के और उससे कम के सिक्के भारत सरकार निकालती है।

जीवन बीमा निगम की स्थापना 1 सितम्बर 1956 मे हुई थी भारतीय यूनिट ट्रस्ट की स्थापना 1964 मे हुई थी।

गृह रक्षक दल 1946 मे बना और 1962 मे इसम व्यापक सुधार किया गया। यह दल राज्य पुलिस की सहायता करता है। गृह रक्षक दल केंद्र की सस्था है।

केंद्रीय रिजव पुलिस 1939 मे हुई। राज्य पुलिस की मदद करता है।

केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल 1962 मे बना कारखानो का विनाश से बचाने के लिए हैं। हडताल मे और इसी प्रकार के दूसरे झगडों से कारखानों की मदद की जाती हैं।

असम राइफल्स, 1828 मे बना। बगाल के बाद अग्रेजो ने असम अधीन किया और असम राइफल्स की स्थापना 1829 मे की

यह मद्य सनिक वन हैं।

केंद्रीय म वे ग ब्यूरा—सी बी आई 1963 म बना।

उत्तराधिकार अधिनियम 1925 म बना।

हिन्दु उत्तराधिकार अधिनियम 1956 म बना। परिवार प्रधान की मृत्यु हो जाने पर, उसके उत्तराधिकारी कौन होंगे, यह इसमें बताया गया है।

प्रतियोगिता और सहयोग संघर्ष और सहयोग दोनों म मन का द्वंद्वात्मक कहते हैं।

जेनेवा मे 21 नवम्बर, 1585 का निर्णय लिया गया कि युद्ध जीते नहीं जा सकते। इसलिए युद्ध की सोचना उसकी तयारी करना विश्व विनाश की तयारी हैं।

विश्व विनाश का हथियार प्रथम बम्ब बनाया।

1 अमरीका ने 1945 म
2 सोवियत संघ ने 29 अगस्त, 1949 म
3 ब्रिटेन ने 2 अक्टूबर, 1952 म
4 फ्रांस ने 13 अक्टूबर 1960 म
5 चीन ने 16 अक्टूबर 1964 म

ये पाच देश सुरक्षा परिषद क स्थाई सदस्य हैं विश्व के जीवन मरण का निर्णय इन्ही के वश म हैं।

दुनिया म कुल युद्ध हुए 14,500 चौदह हजार पाच सौ। ये युद्ध 5500 वर्षों म हुए। इनम कुल आदमी मरे 36 अरब और 50 करोड़। दस हजार वर्षों के इतिहास में 292 वर्ष शांति क थे।

पेरीक्लोज 490–429 ई पूर्व मे अथेन्स की सरकार का प्रधान था। लोकतन्त्र डिमोक्रेसी का पिता कहलाता है। लोकतन्त्र

एथेंस मे शुरू हुआ। सिकन्दर बख्त और आरिफ बेग भारतीय जनता पार्टी के सदस्य हैं।

फ्रांस के चौदहवे लुई ने 72 बहत्तर वर्ष राज किया। उसका समय था 1638 से 1715 तक राज किया।

भगवान महावीर 599 से 527 ई पूर्व म। उनके उपदेश है, हत्या मत करो। मच्छर भी मत मारो। मुह पर पट्टी बाधलो। जिससे कोई मच्छर–कीडा मुह मे न चला जावे। ब्रह्मचार्य का पालन करो। तपस्या करो।

मार्कोपालो 1254 से 1323 तक पूर्वी एशिया की पहली यात्रा की। उस तक इतनी बडी यात्रा नही हुई थी।

माओ–चीन का क्रातिकारी नेता और 1894 1976 1920 म कम्यूनिस्ट पार्टी की स्थापना की।

शिवाजी ने दक्षिण में हिन्दु राज कायम किया 1675 म।

अपने विचारों के लिए जो लोग मरे गये

1 सुकरात 469–399 ई पूर्व सुकरात विश्व का पहला आदमी था जो अपने विचारो के कारण मारा गया।

2 अमरीका–यू एस ए का निग्रो नेता दूसरा आदमी था जो अपने विचारो के लिये मारा गया। उसका नाम था मार्टिन लूथर किंग।

3 महात्मा गांधी तीसरा आदमी था जो अपने विचारो के लिए मारा गया–दिनाक 30 जनवरी, 1948

मार्क्स के पूर्ववर्ती है

मार्क्स मे पहले का समाजवाद युटोपियन समाजवाद कहलाता है। विचारको ने एक टापू माना जहा समाजवाद को उन्होंने लागू किया। टापू का नाम यूटोपियन रखा गया।

1 जीन मसलियर—1664—1729

2 गैब्रियल बो नाट—1709—1785

3 मारेली—दिनांक उपलब्ध नहीं हैं ।

जीन मसलियर ने एक किताब लिखी है जिसका नाम है। 'टेस्टामेंट' इस किताब में फ्रांस के किसानों की दुर्दशा का वर्णन है। अठारवीं सदी तक 1701 से 1800 तक मजदूर वर्ग बना नहीं था मजदूर बना उन्नीसवी सदी में । उन्नीसवीं सदी में मशीनी कारखाने बने । पहला कारखाना ब्रिटेन में 1760 में खुला था । पूंजीपति वर्ग उत्पीडक वर्ग, शेष वर्ग सामंतता के बाद पूंजीवती यानी कारखानदार थे । इससे पहले उत्पीडक वर्ग जमीन के मालिक जिंद जमींदार, भूस्वामी कहे जाते थे । एक मुफ्तखोर वर्ग और था। जिसे अंग्रेजी में क्लेर्जी CLERGY कहते हैं । इन्होंने जगह—जगह घर खाल दिए यानी खुलवा दिए जहां धन आने लगा ।

2 हेनरी डी सेंट साइमन 1760—1825

3 चारलस फारियर 1772—1837

4 रोबर्ट ओवन 1771—1858

यूटोपियन समाजवादी सेंट साइमन का मानना था समाज सुसंगठित होना चाहिए । वर्तमान व्यवस्था होनी बंद होनी चाहिए मनुष्य की योग्यता और काम के अनुसार उसकी कमाई होनी चाहिए राज्य को चाहिए कि काम धंधे की योजना बनायें और जनता को काम दे । योजना में कृषि क्षेत्र और कारखाना क्षेत्र दोनों हों। समाज में सार्वजनिक संगठन बने और उन्हें राज्य सत्ता का कुछ भाग मिले । इस प्रकार हम देखते हैं उन्नीसवीं सदी का पूर्वार्द्ध समाजवाद का समाजवादी विचार का प्रारम्भ हैं ।

उत्तरी राजस्थान के किसान ने जो खेत 1452 में खोया था, वह उसे 18 फरवरी, 1952 को वापिस मिला 18 फरवरी 1952 को किसान ने राजपूत के सामने माचे पर, मुढे पर बैठना शुरू किया। बीकानेर राज में जाट को सेना में भरती नहीं किया जाता था। 1939 में युद्ध छिड़ा। भारत सरकार से आदेश आया कि इनकी राज्य सेना बढ़ाओ। उस लाचारी में 1940 में पैदल सेना में भर्ती चालू हुई कवलरी में, तोपखाना आदि में तैनात नहीं था। 1935 से पहले कोई जाट पुलिस में नहीं था। 1927 तक कोई जाट रेवेन्यू में नहीं था। 1934 तक कोई जाट जुडिशल में नहीं था। फरवरी 18, 1952 से जाट का जीवन मानवाग्गी बना जब जागीर खतम हुई और राजपूत जाट दोनों धरती पर बैठने लगे।

नोट–भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी की पहली सभा 26 दिसम्बर 1925 को कानपुर में हुई थी।

10 अक्टूबर को भारत सरकार ने कहा है कि सार्वजनिक क्षेत्र अब बहुत नहीं बढ़ाया जायेगा। यह ठीक किया। मनुष्य सरकार के लिए और समाज के लिए काम नहीं करता। वह परिवार के लिए और खुद के लिए ही काम करता है। या भय से करते है। सोवियत संघ अब इसी नतीजे पर पहुचा है।

अमरीका शांति का पक्षधर

अमरीका को विश्वास हो गया है कि सोवियत संघ वास्तव में शांति चाहता है। इसीलिए उसने अब एक बड़ी पहल की है अक्टूबर एक 1951 को उसने कहा है कि थोड़ी दूर की मार करने वाले बम्बों को समाप्त कर रहा है। और अगर सोवियत संघ तैयार हो जाय तो वह लम्बी दूरी की मार करने वाले जहाजों का हथियारों को नष्ट कर देगा।

मुसलमान मगोलिया म भी है। सोवियत सघ क किर्गिस्तान गणतत्र म मुसलमान हैं। सोवियत सघ क मध्य एशियाई भाग भी मुसलमान हैं। यह ध्यान म रखन की बात है कि मुसलमान हमेशा मुसलिम एकता चाहते हैं।

दुनिया मे कुल देश 166 है। सब ही राष्ट्र सघ क सदस्य है। सुरक्षा परिषद है राष्ट्रसघ का मत्रिमडल। सुरक्षा परिषद के 15 सदस्य है।

3600 ई पूव 1985 ईस्वी तक 14514 युद्ध हुए है। 3600 ई पूव से 1985 ईस्वी तक यानी पिछले 5600 वर्षों में 292 वप शाति के रहे। इन युद्धो मे 36 अरब और 40 करोड़ लाग मरे।



व्यापार का रास्ता

धातु–प्रोज–भारत ने बनाया और इसके बर्तन थाली, कटोरी और दूसरे बर्तन धातो से बनाये थे यानी 2500 ई पूर्व की हैं। और धान्य था सिंध नदी की छाटी। लोग खेती करते थे, पशु पालते थे। याद रखो सिंध नदी का क्षेत्र था।

1500 ई पू मे उत्तरी पश्चिमी सीमा से अफगानिस्तान की तरफ से आर्यों ने हमला कर दिया। आर्यों के नेता राजा कहलाते थे। राजा चुने जाते थे। आर्य लोग अपने साथ गाय और भैंस लाये। गायें बहुत थी और थोड़ी सी भैंसे थे। ये दोनों जानवर भारत मे बाहर से आये। भारत की गंगा घाटी मे और बिहार उड़ीसा होते हुए बंगाल मे चले गये। दक्षिण मे गुजरात, मध्य प्रदेश मे चल गये। आर्य लोगों ने गांव बसाया और खेती करने लगे। आर्य लोगों ने लोहा ढूंढा बिहार मे। यह एक हजार वर्ष ई पूर्व की बात हैं। लोहा निकालने मे मे इससे चीजें बनाने मे भारत पहले देशों मे से है। यह मत भी है कि पहला देश है। पत्थरों

की और मिमट्टी की भट्टी बनाते थे और उसम लोहा डाल देते लकड़ी का कोयला भी डाल देते थे। लोहा पिघल जाता। फिर ठंडा होने पर उसके गाले और छड़ें बन जाती थीं। काटे वे ज्यादा मजबूत होने के कारण हल के लिए इस लोहे की कुदाली जिसे दूसरे ने कुल्हाड़ी, चाकू छूरा, बनाने लगे। यह भारत की देन है।

रूई— सबसे पहले भारत ने ही रूई उगाई। कपड़े बनाए कपड़े निर्यात किये। चीन ने रेशम दिया। भारत ने रूई दी।

भारत ने भैंस पाली, गाय पाली और हाथी पाले। बर्मा और भारत इन दो देशों ने ये दो जानवर विश्व को दिये।

राजा— ईसा पूर्व की पहली सदी में भारत में छोटे छोटे राज्य बन गये। राज्यों के मालिक राजा को राजा कहते थे। आर्यों का विश्वास था कि ब्रह्मा नाम का एक ईश्वर है। उसीने सृष्टि बनाई। ब्रह्मा आकाश में स्वर्ग में रहता है। उसने इस धरती पर अपना प्रति निधि छोड़ रखा है उसे भी ब्रह्मा कहते हैं। ब्रह्मा की सन्तान कहलाते हैं ब्राह्मण लोगों को सिखाते थे कि भगवान ने ही चारों वर्ण बनाये।

गिनती— गिनती ब्राह्मणों ने बनाई। शतरंज का खेल ब्राह्मणों ने बनाया और राजाओं को सिखाया वर्ण माला जो आज हम लिखते हैं यह भी ब्राह्मणों ने बनाई।

यह जानी मानी बात है जन जानकारी की बात है कि मौजूदा कालम हम प्राविधिक प्रगति में तीन बुनियादी प्रवृत्तियां देख सकते हैं। प्रथम विद्युत शक्ति के स्रोतों में क्रांति सर्वोपरि इसका सम्बन्ध वेग के विद्युतीकरण से अणुशक्ति के शांति पूर्ण उपयोग से और भविष्य में ताप नाभिकीय ऊर्जा उपयोग की सम्भावनाओं से है।

रेशमी व्यापार के रास्ते– रेशमी व्यापार के रास्ते सभ्यता विस्तार के पहले रास्ते हैं। शहतूत का पेड चीन में उगा, कब इस पर रेशम का कीडा पैदा हुआ, कब उसे मनुष्य ने देखा कब, कब उस रेशम से पहला कपड़ा बना, कुछ पता नहीं है। बस इतना ही मालूम है कि पहला कपडा रेशम का था जो आज तक चल रहा है। इस रेशम को बेचने के लिए चीनी व्यापारी रूम सागर के किनारे वाले यूनान और मिश्र पहुंचे। अन्तर्राष्ट्रीयता व्यापार की तरफ यह व्यापार पहला व्यापार था। पहला अतर्राष्ट्रीय व्यापार था। ईसा से ढाई हजार वर्ष पहले की बातें हैं। आज साढे चार हजार वर्ष पहले की बात हैं। वर्तमान काल में मनुष्य ने कैमिस्ट्री की मदद से बहुत तरह के कोमल और पतले वस्त्र बना लिए हैं। कुदरत की बराबरी मनुष्य नहीं कर पाया है। वस्त्र की परख करने वाले लोग कहते है कि हम हाथ से टटोल कर कह सकते है कि यह विशुद्ध, कुदरती रेशम है या बनावटी रेशम है।

गर्मी के मौसम के लिए रेशम के कीडे ने वस्त्र बनाया। सर्दी के मौसम के लिये, भेड ने बनाई। ये गर्म और सरद दो कपडे मनुष्य के आदि काल के कपडे है।

यह कब तक की बात है पता नहीं। भेड कब बनी, शहतूत का पेड कब उगा पता नहीं। इतना ही जानते है ये दो कुदरत की देनें मनुष्य के पहले वस्त्र थे। सभ्यता के विकास मे रेशम ने पहल की। आज भी कैमिस्ट्री की कारीगरी के सामने निडर और निस-संकोच, रेशम आदर सम्मान के साथ टिका हुआ।

अचम्भा– प्राचीन सभ्यता के विद्वानों अचम्भा होता है कि पांच हजार वर्ष पहले, जावा, सुमात्रा सींघापुर आदि द्वीपों में मनुष्य क्यों और कब गया आश्रम क्यो लिये।

अमरीकी राष्ट्रपति रानल्डरीगन ने कहा, राष्ट्र एक दूसरे का भरोसा नहीं करते क्योंकि वे हथियारबन्द हैं। हथियार बन्द इसलिए हैं कि वे एक दूसरे का भरोसा नहीं करते। अमरीका का यह महान कथन कहा क्यों है? इसलिए कहा है कि तीसरी दुनिया के देश निगुट देश यह कहते हैं और सोचते नहीं थकते कि अमरीका एक साम्राज्यवादी देश हैं। पूजीवादी दुनिया यानी जिन्हें हम पश्चिमी दुनिया कहते हैं, वे दूसरे देशों पर कब्जे की कोशिश में रहते हैं। महान सत्य यह है कि 1945 के बाद साम्राज्यवाद रहा ही नहीं। दुख की बात तो यह है कि समाजवादी देश यह प्रचार करते हैं।

अविश्वास के इस घेरे को तोड़ा गया 1985 से 1990 में बीच सोवियत ने नेतृत्व किया अगुवाई की गोर्बाचेव ने। जेनेवा में पहली अगुवाई की गई 21 नवम्बर 1985 में जेनेवा के शिखर सम्मेलन में। उस दिन विधा का आरम्भ हुआ। वह विधा है। खुलापन।

कूटनीति का सिद्धांत है कि प्रारम्भ स्पष्टता से करो। धीरे-धीरे स्पष्टता की ओर बढ़ो। नया विचार कहता है 'सदव स्पष्टता सदैव सत्यवादीता' 1500 ई पूर्व में मिस्र ने सिरिया और फिलिस्टीन पर हमला किया। यह विश्व का पहला हमला था। बदीलान का क्षेत्र मसोपोटेमिया का एक भाग है।

मिश्रित अर्थ व्यवस्था

फिर फिर कर हम नेहरूजी की विचार धारा पर आते हैं सब से व्यवस्था है मिश्रित अर्थ व्यवस्था। सरकारी काम, सामाजिक

काम मारउव म मूना काम हैं—यह बिना घनीधारी का काम हैं।
सामाजिक स्वामीत्व किसी का स्वामीत्व नहीं।

प्राथमिकता निजी स्वामीत्व को हो मिलनी चाहिए सामाजिक स्वामीत्व के दो बड़े नुकसान हैं प्रथम उनम नौकरशाही का होना स्वाभाविक है। नौकरशाही म छोटे अफसर और बड़े अफसर की श्रंखला हो जाएगी। जिम्मेवारी एक दूसरे पर टालते रहेंगे। विलम्ब लम्बा होता जायेगा।

वस्तु की कीमत मार्केट म ही तय होती है। समाज या सरकार तय नहीं कर सकते। भौतिकवाद का जन्म यानी अनीश्वरवाद का जन्म फ्रांस में अठारवी सदी मे हुआ था। बाबा मार्क्स को फ्रांस से ही प्रेरणा मिलती थी। मार्क्स उन्नीसवी सदी का व्यक्ति था। भारत म जातिया 3743 हैं। दुनिया म प्राचीनतम ग्रंथ ऋग्वेद है।

1 सिर पर चोटी की जगह धोती की, छोटी सी टोपी मत रखो।

2 कुर्ता पहनना बद करो।

3 दाढ़ी, मूछ की कटाई ऐसी न हो कि हिन्दु मुसलमान की पहचान हो सके।

4 जहां तक हो सके जीवन शैली को, पोशाक को, बाल कटाई को अंतर्राष्ट्रीय बनाओ। कोट पेंट और टाई रखो। या कुर्ता पाजामा रखो।

5 समाज की प्रगति कुदरती है। उत्पादन के साधन यानी टेक्नालोजी तो ऊंची होगी। मशीनीकरण तो होगा।

जमीन की बुआई शुरू सात हजार 7000 वर्ष पहले हुई। लिखित भाषा शुरू हुई 3500 ई पूर्व मे। 400 ई पूर्व मे मिश्र के लोग Cooper का प्रयोग करने लगे।

40 हजार—चालीस हजार वर्ष पहले मनुष्य दो परों पर खड़ा हुआ था। शरीर की सम्पूर्णता को प्राप्त हो चुका था। 40 हजार वर्ष परिवार बने।

प्रकृति देवी ने सोच विचार कर निर्णय लिए कि एक ग्रह पलेनट Planet ऐसा हो कि जहां जीव खड़े हो सकें इस निर्णय के अनुसार हमारी धरती माता को उचित स्थान पर रखा गया। परन्तु कहीं—कहीं कसर पाई गई। फेर बदल किया गया योरप के जलवायु को कई बार बदला गया। आज से 13,000 तेरह हजार वर्ष पहले बहुत ठंडे योरप को कुछ गर्म किया। बर्फ को पिघला कर उत्तर की तरफ धकेल दिया गया। यहां वह बर्फ आज तक हैं। कुछ जीव बर्फ के साथ चले गए दूसरे मर गए। मरने वाले जानवरों में ममथ Mamoths थे। औजारों में सबसे पहले धनुष बाण बने। कुत्ता पहला पालतू जीव था। दूसरा जीव बकरी था। ई॰ पूर्व 400 में ताम्बे का प्रयोग मिश्र में शुरू हुआ। 400 ई॰ पूर्व से धातु युग शुरू हुआ। धातु युग से वर्ग शुरू हुए, क्योंकि सामान बचने लगा जो मजदूरी करने वाले किसान को दिया जा सकता हैं।

इतिहास

कुदरत या प्रकृति का, नेचर का इतिहास और समाज का इतिहास। प्रकृति का प्रारम्भ नहीं। जिसका प्रारम्भ नहीं, उसका इतिहास नहीं। धरती माता प्रकृति में से निकली। जिसका प्रारम्भ है उसका इतिहास है। धरती का जन्म और वातावरण और परिपक्वता पर जीव का जन्म। लाखों वर्ष के जीव विकास की सम्पूर्णता पर मानव का उदय। मानव का जन्म उस काल से माना जाता है जब वह एक दिन दो परों पर खड़ा होकर सीधा चलने लगा। एक

दिन ऐसा आया कि मानव दो टांगो पर खड़ा हो गया और अगली दो टांग उसके दो हाथ बन गए। उन हाथों से वह लाठी से बेर तोड़ने लगा। यह कब की बात है, केवल अनुमान है। यह अनुमान दस लाख वर्ष का है। दस हजार वर्ष पहले मानव न लाठी से बेर तोड़े थे। लाठी उठाई थी, पत्थर फेंक कर दूसरे जीवों को मारा था। पत्थर फेंक अपने मनुष्य भाइयों को भगाया था इसलिए कि भोजन सामग्री थोड़ी थी। निवास स्थान थोड़ा था। भोजन और निवास स्थान सीमित रहे हैं और सीमित रहेंगे। मनुष्य जीवन अभाव में बीता है। अभाव हमेशा रहेगा। सारे अनंरिक्ष में, असीम अंतरिक्ष धरती माता एक ही हैं। दूसरी नहीं है, धरती माता नक्शा मास्टर क्लास रूम में टांगते हैं गाले का मेज पर रखते हैं। बस यह एक ही है।

हल सबसे पहले मसापोटमिया में बना-चार हजार वर्ष पहले कागज बनने से पहले किताबें मिट्टी की बनती थी।

खगोल विद्या का विकास मसापटेमिया यानी इराक में हुआ। उन्होंने 365 दिन का वर्ष, 30 दिन का महीना, 7 दिन का सप्ताह घंटे, मिनट बना लिए थे।

साम्यवाद

मार्क्स, एंगल्स और लेनिन, ये तीनो युग पुरुष है। बहुत ही सूक्ष्म बूझ वाले विचारक थे। पर ये तीनो ही भूगोल के जानकार नहीं थे। धरती माता एक ही हैं, उस पर भी पहाड़ हैं, चार भागों में से तीन पर पानी है। बढ़ती जन संख्या, घटती धरती। सीमित साधनों में साम्यवाद सम्भव नहीं। मानव सदैव अभावों में रहेगा।

राज्य हमेशा रहेगा, प्रबन्ध की प्रशासन की जरूरत हमेशा रहेगा। जनसंख्या।सीमित हो निर्णय लेना पड़ेगा। इस निर्णय के प्रश्न के लिए और सीमित सामग्री के वितरण के लिए कोई समिति या शासन

सीमित सामग्री होगी तो व्यापार होगा। व्यापार होगा तो वस्तुओं के भाव भी होंगे। मूल्य निर्धारण होगा, मूल्य निर्धारण कौन करेगा। स्पष्ट है कि माग और पूर्ति के सतुलन से होगा। निजी सम्पत्ति रहेगी, व्यापार रहेगा। यानी खुदरा व्यापार रहेगा। बड़ा व्यापार और बड़े कारखान समाज में होंगे। शोषण नहीं होगा। शोषण विहीन समाज होगा। सामान बचने वाले गाहक वाले रहेंगे विवाह प्रथा और परिवार रहेंगे।

याद रखो मनुष्य परिवार के लिए काम करता है और करता रहेगा। समाज के लिए नहीं करेगा। स्टेलिन और लेनिन जैसे अकेले प्रशासक नहीं होंगे।

नोट भारत में प्राचीन काल को सतयुग कहते हैं मध्यकाल को द्वापर और आधुनिक काल का त्रेतायुग। यह झूठा प्रचार है। प्राचीन काल तो अधकाल था, मध्य युग था गुलामी का युग और गुलामो के व्यापार का युग आधुनिक काल हैं मुक्ति सघर्ष का युग

क्या ऐसी सामाजिक व्यवस्था बन सकती है कि मनुष्य बिना मैनेजर के काम करेगा। क्या जीवन होटल जैसा और होस्टल जैसा बन सकता हैं? नहीं ऐसा कभी नहीं हो सकता। बाबा मार्क्स के समय में और लेनिन के समय में टेक्नोलोजी पर मशीन पर बहुत भरोसा किया जाता था। विज्ञान पर कमीस्टरी पर विश्वास किया जाता था। जमीन तो सीमित हैं पर खाद की सहायता से अन्न उत्पादन बढाया जा सकता है। पर हम भूल जाते हैं कि धरती माता को मिट्टी के बिना कुछ नहीं हो सकता।

कहा जा सकता है कि राज्य विहीन Stateless Society की योजना थोथी कल्पना है।

क्या सोवियत संघ का समाजवादी विचार की तरफ विकास हुआ। सोवियत समाज परिवार की सीमाओं में, कबीलों और जातियों की सीमाओं में, मजहबी सीमाओं में आने के लिए तैयार पड़ा है। जातीयता और क्षत्रीयता मौका मिलते ही, ढील देखते ही सिर उठा लेती है।

परिवार रहेंगे, जातीयता रहेगी, राष्ट्रीयता और राष्ट्रवाद रहेंगे।

सकीर्णता में ममता है व्यापकता में ममता विहीन कोरी औपचारिकता है।

सीमित साधनों में, सीमित धरती पर, साम्यवाद की रचना असम्भव है।

सीमित साधनों के आवंटन के लिए प्रशासन की आवश्यकता सदैव हमेशा रहेगी। अनुशासन की आवश्यकता हमेशा रहेगी।

मुसलमानी राज्य की स्थापना 1186 में लाहौर में हुई थी।

कनफ्यूसस–551-479 ई पूर्व में चीन का मत था दार्शनिक था जिसने अपना धर्म चलाया।

हीगल–द्वन्द्वात्मक पद्धति का विवरण किया।

कमाल अतातुर्क–1818 1938 आधुनिक टर्की का निर्माता था। राष्ट्रपति बना टर्की से यूनानियों को निकाल दिया।

रूजवेल्ट–1882 1945 चार बार अमरीकी राष्ट्रपति



मुसलमानो की धार्मिक कट्टरता

इसाई, बौद्ध भौर हिन्दु जब कम्यूनिस्ट बन जाते ह तो धम से उनका सबध पूरा का पूरा टूट जाता ह। परन्तु मुसलमानों के विषय मे यह बात नही ह। बहुत से कम्यूनिस्ट नमाज के समय पार्टी की मिटिंग से चले जाते ह भौर पश्चिम की तरफ मुह करके ऊपर नीचे होने लगते ह, कान मे उगली डाल लेते ह भौर कुछ रागिनी सी करते ह। धोती का भाधा भाग खोल लेते ह। धोती को वे भारतीय पहनावा मानते है पायजामा नहीं खोलते है।

सोवियत सघ के बहुत बडे भाग मे मुसलमान रहते है स्टेलिन के समय मे वे देश भक्त हो गए थे। मक्का भौर मदीना जाना छोड दिया था। मस्जिदे मदरसा बन गई थी। परन्तु गार्बाचेव के आन के बाद उन्हे ढिलाई मिल गई। मदरस मस्जिद बनने लगे। मक्के भौर मदीने की तीर्थ यात्रायें शुरु हो गई। मुसलमान जहां भी माइनोरिटी में है, अल्प स्ंख्यक हैं, वे देश भक्त नहीं ह। सब पश्चिम की तरफ देखते हैं भौर जीवन का उद्देश्य बना लत ह कि

वे कभी अरब न तीर्थ स्थानों का दर्शन करेंगे। बौद्ध और इसाई भी विश्व व्यापी धर्म ह। परन्तु वे हिंदुओं की तरह उदार ह। कोई तीर्थ स्थान नही है। उनकी कोई धर्म यात्रा नही होती। वे रोम नहीं जाते। बौद्ध कभी गया नही जाते। सोवियत सघ मे ■ करोड से थोडे ऊपर मुसलमान हैं। सोवियत सघ के मध्य एशियायी भाग म छ गणतन्त्र हैं। उन गणतन्त्रो मे से तीन ने कम्यूनिस्ट पार्टी पर रोक लगा दी है। पिछले पाच वर्षो म वहा पाच हजार मस्जिदे खुल गई हैं। फारसी, अरबी के अध्ययन के लिए मदरसे खुल रहे हैं मुस्लिम पार्टिया बन रही हैं। इस्लाम का प्रचार कर रही है। कम्यूनिजम को इस्लाम विरोधी बता रही है। उत्सवो पर कुरान के मन्त्र बोले और गाए जाते हैं। कुरान की कापिया मुफ्त बाटी जाती है। सादी अरब ने इन दो वर्षो म कुरान की पन्द्रह लाख प्रतिया बाट दी है। भारत के मुसलमाना म धार्मिकता बढती जा रही है। जलसो म धफत सोगध फारसी अरबी म शुरू करदी हैं।



उतरी राजस्थान के जागीर विरोधी नेता

बीकानेर मुक्ता प्रसादजी वकील और रघुवर दयालजी गायन हनुमानसिंह दूधवा खारा।

झुंझूनू गारीर निवासी चौधरी नतरामजी, देवरोड निवासी चौधरी प नसिहजी बहुत ही लगनशील नेता थ बहुत दूरदर्शी थ। उनग बहुत आशायें थी, पर वे बिमार होकर जवानी म ही मर गए। उन्होंन नई बात यह की कि 1932 म उन्होंने अखिल भारतीय जाट महासभा का अधिवेशन झुंझूनू म बुलाया। उस अधिवेशन म एक नई बात जो हम को बताई गई और दिखाई गई थी वह यह थी सारे राजपूती राज्यों म बस दो जाट शिक्षित थे। व ने उदयपुर क हरीसिंह जो आगरे से पढकर आया था। राजस्थान म उस भरती नहीं किया गया। दूसरा जाट था रामचन्द्रजी जो जाट स्कूल संग-रिया म पढ थे। बाद मे बनारस म पढें।

यह बात भी जाननी चाहिए कि चुरू जिले का कोई जाट झुंझूनू नहीं गया। जो इने गिने जाट थे उन पर महाराजा ने राई

लगा दी थी। हा, बीकानेर ने गुप्तचर वहा बहुत थे। एक गुप्तचर मेरा मस्त था। जाट स्कूल सगरिया मे पढ चुका था। गरीब राजपूत का लडका था। उसने मुझे बताया कि हमने तुम्हारी हिस्ट्री लिख ली है। मेरे पीछे गुप्तचर 1938 के अगस्त तक रहे। उस समय बीकानेर की सेना और पुलिस मे गुप्तचर में भाई जाट नही था। पहला जाट पुलिस मे 1935 में आया। पहला जाट सेना में 1941 में आया जब महायुद्ध चल रहा था। वह जाट था सहीराम जो जाट स्कूल का छात्र रह चुका था।

राजपूत राज्य होते हुए भी झुंझुनू के राजनीति में आकर जाट महासभा का अधिवेशन कर सके क्योंकि जयपुर राज्य में पुलिस का महा निरीक्षक एक अंग्रेज था। उसका नाम था अफ अस यग। महाराजा उस समय छोटा था। माइनर था। सीकर मे भी एक अंग्रेज था। वहां भी 1933 म जाटो ने एक बहुत बडा हवन किया तीन दिन तक घी आग में जलाते रहे। हवन के बहाने उन्होंने जागीर विरोधी ठाकुर विरोधी बातें की। जागीरदार और राजपूत एक ही बात थी। हर राजपूत के जमीन थी। किसी जाट के पास जमीन नही थी। ठाकुर से लेकर खेती करता था। हर राज राजपूत भूमि वाला। हर जाट भूमिहीन। दूसरी बाता के साथ जाट पर दो रूकावटे थी। राजपूत के सामने जाट जमीन पर ही बैठ सकता था। माचे पर, मूढे पर नही। वह अपने नाम के दूसरे हिस्से पर सिंह नही लगा सकता था।

मैं पहला जाट था जो 'सिंह' लगाने लगा। मुझे ठाकुर समझ कर, एक अंग्रेज अफसर ने ठाकुरो की स्कूल मे मास्टर लगा दिया। उस अफसर को महाराजा ने स्टेट से निकालने चले जाने का हुक्म

दिया। भारत के वायस राय ने बीच बीचाव किया। बापू के एक न दौड़-धूप की।

साम्प्रदायिकता से मुक्ति का एक ही मार्ग है वह है सेक्युलर वाद "धर्म निरपेक्षता"।

धर्म को एक अंधविश्वास मानो। मंदिर जाना छोड़ो। मस्जिद जाना छोड़ो। धर्म मानना ही बंद करो।

धर्म मानना और धर्म निरपेक्ष होना संभव नहीं है। मानव महात्मा नहीं हो सकता। मानव महात्मा गाँधी कभी नहीं बन पाएगा जहा धर्म होगा, वहा कट्टरता होगी। धर्म अंध विश्वास है और अंध विश्वास कट्टरता से मुक्त नहीं हो सकता। यह जीवन की वास्तविकता है। यह उपदेश काम नहीं करेगा।



विषय का परिचय

विषय नया है, इस विषय पर अब तक कोई पुस्तक नहीं है। कौन किसने कैसे, क्या आदि पर किताबें हैं। पर कब पर कोई किताब नहीं है। और मूल बात यह है कि सीखने के लिए, जानने के लिए समझने के लिए पहला मूल मंत्र है, "कब" इसी का नाम तिथि शास्त्र है।

आप छात्र हैं प्रशासनिक सेवा की नौकरी की तैयारी कर रहे हैं, क्लर्क बनना चाहते हैं, मास्टर बनना चाहते हैं, तैयारी करनी पड़ती है। लिखित परीक्षा होती है, साक्षात्कार होता है। सामान्य ज्ञान की तैयारी करनी पड़ती है। जो विषय आप सीखना चाहते हैं उस विषय के प्रारम्भ पकड़ो। वह शुरू कब में होता है। उसके बाद तिथियों का क्रम बना लो। क्रम विस्तृत भी हो सकता है और संक्षिप्त भी।

साम्राज्यवाद और कम्यूनिज़म दोनों अभिव्यक्तियाँ छवि

बिगाड बन गई थी । पर वस्तु स्थिति यह थी कि न की कहीं मग्न ज्यवाद है और न कही कम्यूनिजम की स्थापना कोरी कल्पना है।

मार्क्स और अगन्स दानो भूल गए कि हमारी पृथ्वी मे बहुत कही भूमि नही ह । विश्व मे आज भी जमीन की कमी ह। इस परसा क्या स्थिति होगी । जनवद्धि रोकने का आदेश कौन करे पालना कराने के अधिकारी कौन हो। साम्यवाद की व्यवस्था इ नही आएगी । अभाव की स्थिति हमेशा रहेगी । मार्केट हमेशा रग चीजो का भाव हमेशा मार्केट तय करेगा । मार्केट का सचालन होगा।

नोट –रूसी राष्ट्रपति और सोवियत राष्ट्रपति मे क्या अतर ह।

राजस्थान म जागीर उन्मूलन कानून लागू हुआ । 18 फरवरी 1952 मे । 1465 और 1952 के बीच उत्तरी राजस्थान के किसान और जाट निचली श्रेणी मे रहे ।

1935 तक कोई जाट पुलिस मे नही था । 1927 तक कोई जाट रैवेन्यू विभाग मे नही था । 1934 तक कोई जाट वुकिल नही था । 1949 तक जाट पक्का मकान नही बनाता था कहावत थी "साधु को सोवे चली और जाट को सोवे हेली" पहला जाट नौकरी में आया 27 जून 1919 मे। मुसरामजी थे।

ससार के इतिहास मे सवधानिक शासन शुरू हुआ 15 जून 1215 में इगलड के बादशाह से ऐसे नियम पर हस्ताक्षर कराए थे। इसे मैगनाकार्टा कहते हैं।

बिल ऑफ राइटस 1689 में हुआ । मैगनाकार्टा जमा सवैधानिक नियम पास हुआ ।

यूरोप में जन जागृति 1453 में, ग्रीस के विद्वान कोन्स्टेन्टीनोपल में रहते थ । उस पर 1453 म मुसलमानों का अधिकार हो

या। ग्रीस के ये विद्वान पूर्वी यूरोप को यानी कोन्स्टेंटीनापल को छोड़कर पश्चिमी में इटली आदि को चले गए। उन्होंने ग्रीस के विद्वानों का जिक्र किया। उनकी विद्या का भी जिक्र किया। इस प्रकार यूरोप की विद्यायें शुरू हुईं 1453 में। विश्व की पहली राज्य क्रांति हुई 1789 में। अमरीका की स्थापना हुई 1783 में।

गांधीजी को कत्ल किया 30 जनवरी 1948 में। साम्यवादी चीन की स्थापना हुई 3 अक्टूबर 1949 में। भारत ने ब्रिटिश सम्राट से संबंध तोड़ा।

26 जनवरी 1950 में भारत ने गणतंत्र बनने की घोषणा की।

स्टेलिन की मृत्यु 5 मार्च 1953 में हुई।

बिना तेल और बिना ऊर्जा के पहला भू–उपग्रह घूमा, 4 अक्टूबर 1957 में सोवियत संघ ने घुमाया।

श्री नेहरू का मृतकाल 27 मई 1964 में। विंस्टन चर्चिल मरे 1965 में। चीन राष्ट्र संघ का सदस्य बना 1971 में। अफगानिस्तान गणतंत्र बना 1976 में। चीन का प्रधानमंत्री मरा चाऊ एन लाई 1975 में। सोवियत संघ और भारत में दोस्ती दोहराई 1976 में। रोनाल्ड रीगन अमरीकी राष्ट्रपति और लोरक युद्ध की तैयारी हुई 1981 में। चीन ने मार्क्सों के सिद्धांत छोड़ा 1982 में। आतंकवादी स्वर्ण मंदिर में घुसे 1984 में। आतंकवादियों को पवित्र स्थान से निकालने के लिए सेना भेजी 1984 में भारत की प्रधान मंत्री इन्दिरा गांधी की हत्या 1984 में हुई। दो देशों के बीच में विश्व की पहली लड़ाई 490 ईसा पूर्व में हुई। पाकिस्तान विद्रोहियों की मदद कर रहा है। सऊदी अरब भी बहुत मदद करता है, विद्रोहियों की।

दो देशों के बीच में होने वाले युद्धों से सबसे पहला युद्ध हुआ

फारिस और ग्रीस के बीच में। यह मराथीन का युद्ध कहलाता है। जो 490 ई पूव मे हुआ।

ग्रीस यूरोप म है और फारिस पश्चिमी एशिया म। परन्तु दोना एक दूसर की सीमा पर है।

हर आदमी अनाज खाता है, हर आदमी चाय पीता है, सजीवता बढाने म चाय का पहला स्थान। चाय कुदरती रूप से सबसे पहले असम मे उगी। निजी खेती निजी व्यापार निजी सम्पत्ति कभी समाप्त नही होंगे। भूमि सीमित है, जनवृद्धि असीमित है।

मेरे अभिन्न मित्रो के नाम है, कानदान और लक्ष्मीदान दोनों भाई है। 1927 मे मेरे मित्र हुए। कानदान का बटा है नरसिंह दान—मैडिकल डाक्टर है।

मेरे तीसरे मित्र का नाम है, चतरसिंह झुन्झुनू जिले में सावर पुरा उनका गाव हैं।

जीवन के दो आधार हैं—हवा और पानी। हमे हवा और पानी सबसे पहले चाहिए। सात किलोमीटर तक हवा हैं, धरती से तीन गुणा अधिक पानी हैं। ये दोनो चीजे खत्म नही होंगी, इन दोनों चीजो का प्रतिक्षण नवीनीकरण होता हैं। भोजन का हर वर्ष नवनीकरण होता हैं कुदरत की कृपा हैं। प्रकृति छोटी से बड़ी हुई हैं। विकसित हुई हैं। समाज भी जगलीपन से निकल कर सभ्य हुआ। कुदरत न विकास करना बद कर दिया है। जमीन और अधिक नही आएगी। आबादी बढ़ेगी, भविष्य भयकर और भयानक हैं।



अहिंसा को मान्यता

अतर्राष्ट्रीय संधि मे अहिंसा को मान्यता मिली 27 नवम्बर, 1986 मे। राष्ट्रपति बनते ही गोर्बाचेव ने शांति अभियान छेड दिया। सोच विचार के बाद उसने प्रथम दौरा भारत का ही किया।

जो संधि हुई उसके दस सिद्धांत हैं–

1 शांतिपूर्ण सह अस्तित्व
2 मानव जीवन सर्वोपरि है।
3 सामाजिक जीवन का आधार अहिंसा हो।
4 भय और सन्देह की जगह विश्वास और समभावन हो।
5 प्रत्येक देश को आर्थिक और राजनीति व्यवस्था की छूट हो।
6 सेना पर होने वाला व्यय देश के विचार पर हो।
7 प्रत्येक व्यक्ति का व्यापक विकास हो।
8 मनुष्य जाति का पूरा ध्यान विश्व विकास पर हो।
9 डराने धमकाने के स्थान पर व्यापक सुरक्षा हो।
10 अहिंसा के लिए निरस्त्रीकरण आवश्यक है।

तारक युद्ध

सोवियत संघ को नष्ट करने के लिए अमरीका ने आकाश में सैनिक ठिकाने बना लिए थे। यह बात 1983 की है। सोवियत संघ ने इसके विरुद्ध जन मत तैयार किया। यह योजना फिर बीच में ही छोड़ दी गई।

मुद्रा

ऐसा समय कभी नहीं आएगा कि मुद्रा के माध्यम के बिना ही चीजों की अदला बदली होने लग जाय। मुद्रा रहेगी, मार्केट और हाट बाजार रहेंगे। साधन हमेशा सीमित रहेंगे, भूमि सीमित है।

मार्क्स का जन्म 5 मई 1918 में हुआ था। मृत्यु हुई 14 मार्च, 1883 में।

अहिंसा परमो धर्म यह सिद्धांत भारत की ओर से विश्व को देन है, वरदान है।

एक चिर तटस्थ राष्ट्र एक आदर्श राष्ट्र क्या संसार में कोई ऐसा देश है जिसने कभी किसी पर आक्रमण नहीं किया। और उस पर किसी ने आक्रमण नहीं किया। वह चिर काल से तटस्थ बना रहा है। उस देश की एक विशेषता और है वहां कभी गृह युद्ध नहीं हुआ। एक तीसरी विशेषता भी है, वहां लोगों में आपसी हिंसा नहीं है। वहां कोई कतल का केस नहीं होता। वहां हमेशा गणतंत्र रहा है। वहां सम्राट कभी नहीं रहा वहां हमेशा लोकतंत्र रहा है। वहां अधिनायकवाद कभी नहीं रहा हर प्रकार से एक आदर्श राष्ट्र है। दुनिया में 165 देश हैं, इनमें राष्ट्र संघ के सदस्य हैं 160 देश। जो पांच देश बचे वे नाम मात्र के देश हैं। समुद्र में बसे छोटे देश हैं जिनमें किसी की भी जनसंख्या एक लाख से ऊपर नहीं है। पर

उस देश की जनसंख्या एक करोड़ के आस पास है। 165 देशों की आबादी पांच अरब हैं।

वह देश है स्विजरलैंड। इसकी राजधानी का नाम है जेनवा मिटींग तीन दिन चली। एक दिन का अधिवेशन आठ घंटे का था। कुल समय लगाया गया 24 घंटे। दोनों राष्ट्रपति पूरे साहित्य से सुसज्जित। दोनों में से हर एक के बीसियों सहायक और विशेषज्ञ। आप आश्चर्य नहीं करते कि दोनों विश्व की शीर्षस्थ शक्तियां आखिर क्या किया ? साराश निकला।

1 युद्ध जीते नहीं जा सकते अतः युद्ध नहीं होने चाहिए।
2 दोनों महाशक्ति वर्ष में एक बार अवश्य मिलेगी।
3 अच्छा हो दो बार मिले।
4 सैनिक शक्ति में ऊंचा होने की कोशिश नहीं करेंगे।
5 8 जनवरी 1985 में हुई वार्ता पालन करेंगे।

8 जनवरी 1985 के निर्णय का महत्व

अमरीका ने 1983 मे निर्णय लिया कि आकाश मे बाह्य अंतरिक्ष में Outer space आउटर स्पेस में किसी अज्ञात स्थान पर सैनिक अड्डे बनाएगा। सोवियत संघ की क्षमता नहीं हैं कि अंतरिक्ष मे हमारी सेना को ढूढ लेगा। इसमें यह निर्णय भी लिया गया कि अणविक हथियारों के परीक्षण बंद किए जाए गे जिससे कि इन हथियारों की मार की भयकरता से बचा जा सके। इन देशों के बीच बनी 1962 की हाट लाइन को और अधिक तीखा बनाया जाय जिससे कि बातचीत की कुशलता बढ़ सके दोनों शक्तियों के बीच सम्मेलन की नियमित तीक्ष्ण की जाएगी।

एक बहुत महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया कि रूसी भाषा और अंग्रेजी भाषा एक दूसरे के यहा पढ़ाई जाएगी।

बहुत ही महत्व की बात यह हुई कि आकाश में बनने वाले अमरीकी फौजी ठिकाने रुक गए। सोवियत संघ ने अमरीका को बताया कि सोवियत संघ के पास भी यह जानकारी है कि वह जमीं ही आकाश में सैनिक ठिकाने बना सकता है।

सोवियत संघ ने अपने प्रयासों से विश्व विनाश की सम्भावना को मिटाया। शांति के लिए यह प्रथम प्रयत्न था।

दसियों शिखर वार्ताओं में यह पहली वार्ता थी। इस शिखर सम्मेलन से अंतरिक्ष में बनने वाले सैनिक ठिकाने बंद हुए। सोवियत संघ अमरीका को यह बात जताएगा कि अगर आकाश में सैनिक ठिकाने बन गए तो वे मिटेंगे नहीं। एक दूसरे को पता नहीं लगेगा कि किसका सैनिक ठिकाना कहां है। इन ठिकानों के बनने के बाद दोनों महाशक्तियों को पता ही नहीं लगेगा कि किसके ठिकाने कहां हैं। भविष्य में दोनों देश संधि नहीं कर पायेंगे कि इन आकाशीय ठिकानों को नष्ट किया जाय। एक दूसरे के ठिकानों की जांच नहीं हो पाएगी कि दूसरे हिस्सेदार अपने ठिकाने बंद किए कि नहीं। धरती सीमित है पर आकाश सीमित नहीं। कहां और कैसे पता लगायेंगे कि दूसरा क्या कर रहा है। संधि की शर्तों की जांच नहीं हो सकेगी। अमरीका मान गया क्योंकि सोवियत संघ ने अमरीका को जता दी कि वह पीछे नहीं है। एक डाल-डाल है तो दूसरा पात-पात है एक डाली पर है तो दूसरा पत्तों पर है। हम अपनी सुधारने की कोशिश करते हैं पर हिन्दी सुधारने की कोशिश नहीं करते। एक टीचर हिन्दी का एम ए है। ग्यारहवीं क्लास को पढ़ाता है। क्लास में हिन्दी यों बोलता है, मेरे को तो इस बारे में पता नहीं। तेरे को पता हो तो मेरे को जानकारी दे। इसी प्रकार हमारे को, तुम्हारे को बोलता है। हिन्दी पास मास्टर को पूछता हूं

मास्टरजी आप शीर्षस्थ शब्द बोर्ड पर लिखो। वह गलत लिखेगा। बाद मे मुझे ओलमा देता है कि आपका उच्चारण ठीक नही था। इस पर मैं कहता हू कि उच्चारण को मत देखो। जनता उच्चारण गलत करेगी पर तुम उनके बोले हुए को सही लिखोगे। उच्चारण को कभी मत देखो आपने अगर सीखा है वही लिखो। सही लिखना सीखा। सही मात्रा मे, सही सयुक्त अक्षर सीख कर सही लिखो। स्पलिंग आख के द्वारा दिमाग म चित्रित होते हैं। उन्ही चित्रित शब्दो को लिखो। उच्चरित को छोडो चित्रित लिखो।

वर्तमान विश्व शाति का पहला प्रयत्न नवम्बर 1985 म हुआ था, दो महा शक्तियो क बीच म। स्वीजर लड की राजधानी जेनेवा म। स्विजर लड और उसकी राजधानी जेनेवा सदा स शाति-स्थल रहे है।

साधन सदा सीमित रहेगे

मत विरोध हमशा रहगे। साइंस और टेक्नोलोजी सदा ऊची होती जायेगी। सघर्ष सदा रहेगा। प्रशासन सदा रहगा। कारण स्पष्ट है। भूमि सीमित है। कृषि क्षेत्र सीमित रहेगा।

भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी पहली मिटिंग कानपुर मे 26, दिसम्बर 1925 मे हुई थी। महात्मा गाधी की हत्या 30 जनवरी 1948 मे की गई थी।

नोट हत्या का दिन कही कही 31 जनवरी मिलता है। पर सही है 30 जनवरी 1948।

भारत मे पहली कम्युनिस्ट सरकार केरल राज्य मे बनी थी

1957 म। दो बरस के बाद इस कम्यूनिस्ट सरकार का डिसमिस कर दिया गया। अक्टूबर 1962 मे चीन ने भारत पर आक्रमण कर दिया। सीमाविवाद की बात थी। चीन बहुत बडा देश है दुनिया के चौथे हिस्से की आबादी चीन मे है। जानने की बात है कि वह एक कम्यूनिस्ट देश है जिसे भूमि बढाने का सीमा बढाने का लोभ लालच नही होना चाहिए। पर देशाहंकार से मुक्ति हर कम्यूनिस्ट को नही मिलती। मेरा घर, मेरी जमीन मेरा देश आदि प्रतिक्रियावादी विचार पीछा नही छोडते। लोकमत के दबाव को देख कर चीन रुक गया पर विवाद ग्रस्त क्षेत्र चीन ने नही छोडा। विश्व व्यापी साम्यवाद की स्थापना सदिग्ध है। पांच महाद्वीपों में 165 देश हैं। सारी जमीन पर कब्जा हो चुका है। साधन सीमित सकुचित होते जा रहे हैं।

राजनीतिक प्रचारो मे साम्राज्यवाद की बुराई होती है। वस्तु स्थिति यह है कि साम्राज्यवाद कहीं है ही नही। ससार मे 165 देश हैं। किसी का भी किसी पर राज नही हैं। सबसे बडा विशाल है सयुक्त राज्य अमरीका। उसे अंग्रेजी मे सक्षप्त में यू एस ए कहते हैं। कई देश अमरीका के हैं और न कभी रहा हैं। ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, हालंड, बेलजियम आदि किसी के पास कोई उपनिवेश नही है। उपनिवेशनवाद का नारा भी निराधार है।

कम्यूनिजम की बुराई भी एक निराकार बुराई है। कम्यूनिजम कहीं नही है। कोई भी देश इसकी स्थापना में लगा हुआ नही है। सब जान गये है कि कम्यूनिजम की स्थापना असमव है। भूमि सीमित होती जा रही हैं। सीमित भूमि, मनुष्यों, पशुओं और पक्षियों का पेट नहीभर सकती। जब मिट्टी ही नही होगी तो भोजन वस्त्र कहा से, किसमे से निकालेगा जन सख्या पर नियत्रण कब

होगा, कौन कराएगा, नियत्रण का आदेश कौन निकालेगा। सब बातें भूख मरने आदमी कर सकते हैं। भूख मरने की स्थिति आ सकती है, तो सामाजिक अनुशासन बिगड सकता है। स्थिति लगभग ऐसी ही रहगी, जसी आज है। सीमित साधनो म सीमित भूमि पर साम्यवाद असम्भ है।

ससार

जिसे हम ससार दुनिया World कहते हैं उसके तीन मुख्य क्षेत्र हैं– प्रकृति, समाज और विचार Nature, Society ard Thought ससार मे पहली हडताल 1831 म हुई फास में लिमोन नामक नगर मे किसी उद्यम के मजदूरो ने यह हडताल की। मजदूर नामक वग का उदय 19वी सदी के आरम्भ मे हुआ। पहले ब्रिटेन मे और फास म, फिर बेलजियम मे दूसरी हडताल 1834 में हुई।

सत्ता, सम्पति और स्वाभिमान

PROPERTY, PRIVILEGE AND POWER



किराया कानून तथा आवास विकास

अनेक देशों में किराया नियंत्रण कानून द्वितीय महायुद्ध के दिनों में लागू किए गए थे। महायुद्ध के दौरान मकानों की कमी हो गई, महंगाई बढ़ गई और किराए पर मकान मिलना मुश्किल हो गया था। इस कानून का मूल लक्ष्य गरीब नगर निवासियों का लोभी मकान मालिकों के सरक्षण करना था। पर धीरे धीरे इस कानून के कारण बड़े शहरों में किराये पर देने के लिए मकान बनवाना कम हो गया। लोग किराया कानून से बचने के अनेक रास्ते निकालने लगे। पगड़ी का रिवाज सर्वव्यापी बन गया। मकान मालिकों ने मकानों की मरम्मत करवाना छोड़ दिया जिससे मकानों की हालत खस्ता हो गई, उनकी उम्र घट गई और किराएदारों पर किराए के अलावा आवश्यक मरम्मत का भार भी बढ़ने लगा। अब बम्बई जैसे शहरों में हालत यह है कि पुराने किरायेदारों द्वारा देय किराया इतना कम है कि गृहकर व कॉरपोरेशन टैक्स आदि मिला कर अनेक घरों मे मकान मालिकों की किराए की आमदनी से

अधिक टैक्स देना पड़ता है। यद्यपि मकानों व जमीन के मूल्य आसमान छूने लगे हैं। पर यह मकान मालिकों के लिए एक खयाली राहत भी नहीं है क्योंकि वे मकान खाली होने का स्वप्न भी नहीं देख सकते। अनेक शहरों में अब मकान खाली कराने के लिए किराएदार को मोटी मोटी रकमें देनी पड़ती हैं जिसकी जिससे समझौता वार्ता करवाने में दलालों की चांदी बनने लगी है। एक दूसरा प्रभाव इसके कारण अपराध वृत्ति वालों का रोजगार पनपना भी है, क्योंकि मकान मालिक अब अदालत में जाने के बदले इन गिरोहों की शरण में जाते हैं। ये गिरोह अधिकांशतः राजनीतिक संरक्षण में पलते पुलिस से साठ गांठ रखते व लठैतों व गुण्डों के बल पर मकान खाली करवा लेते हैं। धनवानों के अपहरण की जितनी घटनायें आज अखबारों में छप रही हैं उनसे कई गुना अधिक मकानों को जबरन खाली करवाने की घटनाएं हो रही हैं जिनका जिक्र अधिकतर न अपराधों की गिनती में होता है न अखबारों की सुर्खियों में।

सरकार को भी घाटा

किराए को अप्राकृतिक व अव्यवहारिक स्तर पर स्थिर कर देने से सरकार भी घाटे में है। स्टैम्प ड्यूटी, सम्पत्ति कर आयकर, भेंटकर आदि सब की उगाही कम होती है। काला धन, पगड़ी तथा ऊपरी के किराए के माध्यम से बढ़ता जाता है। सरकारी सम्पत्ति तो कौड़ियों के दाम किराए पर चलती है। राजस्थान में ही देवस्थान विभाग की सम्पत्ति का किराया करोड़ों रुपया बढ़ सकता है। जयपुर के बाजारों की दुकानों के किराए की वृद्धि से ही चुंगी पूरे राजस्थान में पूर्णतः खत्म की जा सकती है। सरकार व जनता सबको बाजार की शक्तियों को दबाने का खामियाजा भुगतना पड़ रहा है।

"अदालतो मे भी जितने मामले लम्बमान हैं उनमें किराए कानून सम्बन्धी मामलो की प्रतिशत काफी बडी हैं। समाज का एक भाग दूसरे से अप्रिय रिश्ते मे उलझा हुआ है। नागरिक जीवन अस्वस्थ व कलहमय हो रहा है। लोग किराए पर देने के लिए मकान अधिकाशत नही बनाते। आवासन समस्या गहराती जा रही है। सरकार त्रिशकु की तरह कोई भी व्यापक सुधार करने म अक्षम है। अपने ही कानून द्वारा स्थिति से निपटने मे सर्वथा अक्षम हैं।'

ऐसा नही है कि मालिक मकान व किराएदार दो अलग अलग आर्थिक वग हों। बहुत से मालिक मकान कमजोर आर्थिक स्थिति मे होते हैं व कई किराएदार धनवान भी होते हैं। कई विधवाओं अल्पायु के बच्चो व सेवानिवृत्त लोगो की जीविका का एकमात्र साधन मकान किराया होता है तथा बहुत से किराएदारों के अपने मकान होते हैं जिन्हे वे दूसरो को किराए पर रखते हैं। सरकारी अफसरो व सार्वजनिक उपक्रमों के कई अधिकारी हल्के ब्याज पर सार्वजनिक ऋण लेकर मकान बनवाते व उन्ह अच्छे किराए पर दे देते हैं तथा स्वय सरकारी मकानो मे नाममात्र के किराए पर रहते हैं। उच्चाधिकारियो मे खासा अच्छा प्रतिशत ऐसे लोगों का है जिनके अपने मकानों के बहुत बढिया किराए आते हैं और जो तथाकथित 'उचित किराए' [फेयर रेंट] देकर आलीशान बगलो म रह रहे हैं।

सरकार की किराया नियन्त्रण कानून बनाने की मशा मूलत समाजवादी थी कि अल्प आय वाले व्यक्ति भी किराए पर मकान लेकर आराम से रह सके। किन्तु कालान्तर म मालिक मकानों ने वे तरीके ढूढ लिए जिनसे यह मन्शा फलीभूत नही हुई। नतीजा यह है कि शहरों म गन्दी बस्तियो की बाढ आ रही है। गन्दी बस्तियो तक की आयोजना व प्रबन्ध प्रभावशाली व धनिक व्यक्ति

ही करते हैं व वहा भी अकिंचनो को लठैता के बल पर हर महीना कुछ न कुछ देना पड़ता है। केवल जो लोग किराया कानून के लागू होते समय या बीच मे कभी धोखे से किराएदार बन गए वे ही इस कानून का लाभ अधिकाशत कमा रहे हैं।

किराया नियन्त्रण कानून के कारण मकानो की खरीद फरोख्त बहुत कम हो गई हैं। जिस मकान मे एक भी किराएदार हो उसे कोई खरीदना नही चाहता। इस सम्पति के स्थानान्तरण मे झझट हो, उसका मूल्य हमेशा सीमित रहता है। पश्चिमी देशो मे जहा बडे शहरो की कमी नही, सम्पति, गृह दुकान आदि की खरीद फरोख्त लगभग चौबीस घटों मे पूरी हो जाती है। वहा सम्पति पर बिक्री कर या रजिस्ट्रेशन फीस मामूली एक या दो प्रतिशत के आस पास हैं। हमारे यहा सम्पति का सौदा एक पूरा कानूनी पहाड व कर चोरी व सावधानी से काली व सफेद सम्पति बाटने की सश्लिष्ट कला है। जो सीधे साधे खरीदना बेचना चाहे उसे ग्राहक ही नही मिलता। जमाने के रूख से उल्टा चलना हो तो मकान को कौडियों मे बेचना होगा। दलालो की चादी होगी। नुकसान मे सिर्फ सरकार व ईमानदार लोग रहगे।

काला धन

इन हालातों मे लोग मकान बनाने मे पू जी केवल काला धन छिपाने, कमाने या पडे पडे मकान की कीमत बढाने के लिए ही लगाते हैं। किराए पर देने का सौदा महगा पडता हैं। किराए के लिए मकानो की मांग व अपूर्ति में जमीन आसमान का अतर हो गया है। इसलिए एक तरफ बहुत कमा सकने के अवसर हैं पर दूसरी तरफ कानूनी जजीर हैं, इसलिए आवास योजनाए निजी

क्षत्र म न के बराबर ही बन रही है। सरकारी नीति भी इसमें सहायक नही है। सार्वजनिक निर्माण विभाग मकान की अनुमानित लागत पर केवल साढे सात प्रतिशत दर से किराया तय करता है। मकान की अनुमानित लागत भी बहुत ही दकियानूसी ढग से आकी जाती है। इस चक्कर मे आवेदन करने वालों को भी अलग से महनताना देना पडता है। फिर एक बार जो किराया तय हो गया उसम वृद्धि का कोई प्रावधान नहीं हैं। जबकि मुद्रास्फीति रुकने का नाम नही लेती।

आज जब बैंको की ब्याज दरें आसमान को छू रही है, वित्तीय सस्थाए यथा रीको व वित्त आयोग उस प्रोजेक्ट पर ऋण ही नहीं देते जिसमे विनियोजित पू जी पर आय बीस प्रतिशत स कम हो। एक खुदरा व्यापारी भी पच्चीस प्रतिशत तक नफा कमाना चाहता है, ऐसी अवस्था मे गृह निर्माण पर पू जी लगाने वालों से केवल साढे सात या दस प्रतिशत आमदनी पर विनियोजन की अपेक्षा करना बेकार है। नतीजा यह हैं कि किराए के लिए कॉलोनी बनाने का काम कोई निजी पू जी वाला हाथ मे नही लेता अत आवासीय समस्या का हल केवल सरकारी हाथो रह जाता है और सरकारी हाथों ने आज तक किस समस्या का सुलझाया है ?

विश्व बैंक का अध्यन

विश्व बक न विकासशील देशो के चार वद्धमान नगरों में किराया कानून व आवास समस्या का गहन अध्ययन करवाया है। इनमें भारत का बगलौर घना का कुमासी, मिश्र का कयरो व ब्राजील का रियो डी जेनरी शामिल है। बगलौर में पिछले चार दशको से चल आ रहे किराया नियत्रण कानून के कारण मकानों की

बहुत कमी है। इस कमी को और भी भयानक बना दिया है जमीन के व्यापार के सरकारीकरण, गृहनिर्माण के लिए वित्त व ऋणों की अनुपलब्धता तथा सीमेंट-लोहा लकड़ी आदि की कमी ने। शहर की आबादी का दो तिहाई भाग किराए पर रहने वाला है। किराया नियन्त्रण कानून 1940 की स्थिति को यथावत रखने की कोशिश कर रहा है। कुछ संशोधन हुए हैं पर ढांचा वही चल रहा है। रेंट कंट्रोलर को "उचित किराया" तय करने का अधिकार है जिसमें काफी भ्रष्टाचार है। मकान मालिक राजनितिक प्रभाव से खाली करवा लेते हैं। कानून की निरन्तर अवहेलना से भी उन्हें मुश्किल से कभी कभी ही सजा मिलती है। मालिक मकान अपने तरीकों से किराया बढ़वाते रहते हैं। इस प्रकार यह कानून वहां सिर्फ भ्रष्टाचार, राजनीतिक प्रभाव व अव्यावहारिक स्थितियों को पनपा रहा है।

मकान मालिकों व किराएदारों की औसत आय का अध्ययन बताता है कि प्रथम पच्चीस प्रतिशत मकान मालिकों की औसत आय किराएदारों की औसत आय से अधिक है। इतनी ही प्रतिशत मकान मालिकों की आय किराएदारों की औसत आय से कम भी है। किराएदारों में से दस प्रतिशत अन्य मकानों के मालिक भी हैं। इनकी आय मकान मालिकों की आय से कम नहीं है। किराया नियन्त्रण कानून कोई भी सार्वजनिक हित साधने में अक्षम रहा है।

दूसरे देशों के नगरों की स्थिति का अवलोकन करने की आवश्यकता नहीं है। बंगलौर के अध्ययन से यह स्पष्ट है कि किराया नियन्त्रण कानून गुनाह बेलज्जत है और इसका उन्मूलन या व्यापक संशोधन अत्यन्त आवश्यक है। यह स्पष्ट है कि कुछ ही समय में

गुले बाजार की परिस्थितियाँ कानूनी प्रावधानों पर विजय पा लेती हैं और सरकार व जनता दोनों के हित में है कि जमीन पर उपस्थित परिस्थितियों का ध्यान में रखकर किराया नियन्त्रण कानून को सरल, व्यवहारिक व आवास विकास में सहायक बना जा सकता है।

कानून में सुधार जरूरी

विश्व बैंक की टीम ने किराया नियन्त्रण कानून में सुधार हेतु ये कुछ उपाय सुझाए हैं–उनमें से प्रमुख निम्न हैं–

[1] मकान खाली होने पर नए किराएदार को देने में नियन्त्रण कानून लागू न हो।

[2] कुछ मोहल्लों, इलाकों को किराए नियन्त्रण से मुक्त कर दिया जाए। फिर इन्हें दाने अन्य इलाकों में यह व्यवस्था लागू की जाए।

[3] एक हद तक किराए पर नियन्त्रण हटा लिया जाए यथा या तो ऊपर से 1000 रुपए मासिक से अधिक किराए वाले मकानों को नियन्त्रण मुक्त कर दिया जाए या नीचे से ढाई सौ या चार सौ रुपए तक के किराए वाले मकानों को नियन्त्रण मुक्त कर दिया जाए। यह स्थानीय परिस्थिति के अनुसार होना चाहिए।

[4] किराया नियन्त्रण के हटाने का समयबद्ध कार्यक्रम बने व घोषित हो जाए ताकि किराएदार नई परिस्थिति के अनुसार अपना नया प्रबन्ध करने के लिए समय व पूर्व सूचना प्राप्त कर सकें।

[5] मकान मालिक किराएदारों को निश्चित दरों पर धन राशि देकर उनसे मकान खाली करवाने का कानूनी अधिकार पा सके।

[6] एक साथ किराया नियंत्रण कानून को हटा दिया जाए।

उपरोक्त विधियों या उनके चतुर मिश्रण द्वारा किराया नियंत्रण कानूनों की आवास निर्माण में अवरोधक शक्ति का हनन किया जा सकता है। यह स्थानीय परिस्थितियों पर निर्भर करता है कि इनमें से कौनसी विधि या विधियां अधिक उपयुक्त व उपयोगी होंगी।

"जो भी हो किराया नियंत्रण कानून अपनी पूरी उम्र जी चुके हैं उनके लागू करने की परिस्थितियों में अप्रत्याशित बदलाव आ गया है। आज आवास योजनाओं के क्षेत्र में निजी प्रयत्नों के सहयोग की सख्त आवश्यकता है। अतः सरकारों को चाहिए कि इन पर गंभीर अध्ययन कर व्यापक संशोधन करें व आवास विकास व उपयोग का मार्ग निष्कंटक व प्रशस्त करें।"

यह आश्चर्य की बात है कि समाज में इतनी कटुता व बेइमानी फैलाने वाला यह निरर्थक अधिनियम अभी तक जीवित व सक्षत है।



समाजवादी देशो मे अनुशासन

समाजवादी देशो म सामाजिक अनुशासन और नियमों का पालन अपेक्षा कृत अच्छा होना चाहिए। पर सोवियत सघ का उदाहरण सामने है जहा अफीमची 1991 के मार्च मे इस प्रकार थे।

कुल अफीमची–15 लाख यह सख्या सोवियत सघ के प्रत्येक गणतत्र की है जहा चोरी से अफीम के पौधे विशेष रूप से उगाए जाते हैं।

सोवियत सघ गणतत्र–राज्य–और जनसख्या पूरा सोवियत सघ 1991 म जनसख्या 29 करोड़ 30 लाख थी उनतीस करोड़ तीस लाख। रूसी जाति के लोग हैं 51 प्रतिशत ये हैं गणतत्र

1 रूस–14 करोड़ 70 लाख इसम रूसी 83 प्रतिशत है।
2 कजाखस्तान–1 करोड़ 70 लाख, रूसी 41 प्रतिशत
3 एस्तोनिया 20 लाख रूसी 30 प्रतिशत
4 लटविया 30 लाख रूसी 33 ,,

5	लिथुआनिया	40 लाख रूसी 9	,,
6	ताजिकिस्तान	50 लाख रूसी 10	,,
7	किरगिस्तान	40 लाख रूसी 22	,,
8	बलोरसिया	एक करोड रूसी 12	,,
9	यूक्रेन	5 करोड 20 लाख रूसी 21	प्रतिशत
10	मोलडोविया	40 लाख रूसी 14	प्रतिशत
11	जोरजिया	50 लाख ,, 7	,,
12	आरमिनिया	30 लाख ,, 3	,,
13	अजेरबाइजान	70 लाख ,, 8	,,
14	टकमेनिया	40 लाख ,, 13	,,
15	उजबेकिस्तान	2 करोड ,, 11	,,

याद–सोवियत संघ खंडित हो रहा है। हमे जानना चाहिए कि वे कौनसे गणतंत्र हैं जो अलग हो रहे हैं।

वस्तु और पदार्थ

पदार्थ की व्याख्या की जा चुकी है। पदार्थ का उल्टा है 'विचार'। भौतिकवाद और विचारवाद। मटिरियलिजम और आइडियलिजम।

वस्तु इसका विशेषण हैं वास्तविक। वस्तुगत भी है। इसका उल्टा है मन। मन का विशेषण है मनोगत मन की बातें हैं मनोगत सत्य। मन के बाहर की बातें हैं वस्तुगत सत्य। SUBJECTIVE मनोगत शब्द है SUBJECTIVE और OBJECTIVE

पदार्थ मैटर–उल्टा है अध्यात्मवाद का वस्तुगत दुनिया और मनोगत दुनिया।

तुलसीदासजी ने रामायण लिखी 1575 मे अकबर के समय

 यह मन की बात है/चौ० मालसिंह

सुकरात का समय था 469 399 ई पूव म पलेटो का गुरु था। सुकरात को फासी दी यूनान की सरकार न।

पलेटो 426–347 ई पूव म–सुकरात का शिष्य था अरिस्टाटल का गुरु था।

पेरिक्लीज–490-429 ई पूव–येथेंस की सरकार का प्रधान था। लोकतन्त्र का पिता था।

शकराचार्य–जन्म 788 ईस्वी मे, दाक्षिण

रोग बिना मा भी धोबा नही देती है।

भारत मे सैनिक शासन की स्थापना नही हो सकता क्योंकि सेना मे जातिया हैं, धर्म है। जो जाट चाहेंगे, राजपूत उस नहीं चाहेगे। राजपूतों की बात जाट नहीं मानेंगे। इसी प्रकार मराठों की द्राविडो की बातें हैं।

पश्चिम एशिया मे सात देश है। सब मुसलमानी हैं। इनके बीच म स्थित है इजराइल। यह यहूदियो का देश है। राजधानी जरूसलम इनका तीर्थ स्थान है। यह मुसलमानों का भी पवित्र स्थान है। सो मुसलमानो का और यहूदियों का जूज का विवाद सदा स ही है। पर 43 वर्षों से तो उनम आपसी युद्ध चल रह है।

ताजा शाति प्रयासो मे पहला प्रयत्न जेनवा म 19 स 21 नवम्बर 1985 तक हुए।

योरप मे हमेशा लडाइया होती रही हैं। पर 1945 के बाद वहा लडाई नही हुई। कारण यह है कि योरप के देशो न बहुत सधिया कर रखी है। इनम पहली 1975 मे हुई थी। सधि का नाम है फाइनल एक्ट FINAL ACT 1975 के बाद भी यारप के देश समय समय पर सम्मेलन करते रहते हैं।

वास्तविक दुनिया OBJECTIVE WOULD वस्तुगत दुनिया आपसी निभरता Interdependeuce इतनी बढ गई हैं कि योरप म युद्ध नही हो सकता।

1991 म सोवियत सघ मे मत लिया गया कि वे किस प्रकार की सरकार चाहने है। आध से ऊपर लोगो न कहा कि वे पश्चिमी देशो जसा लोकतन्त्र चाहते हैं पश्चिमी देशो मे शामिल ह अमरीका, ब्रिटेन, फ्रांस बेलजियम आदि।

सोवियत सघ के समाजवाद को तकनीकी भाषा मे राजकीय समाजवाद कहते हैं। बहुमत ने मत दिया कि बाजार भाव की अर्थ व्यवस्था चाहते ह। 44 प्रतिशत न मत दिया कि भावो की राज-कीय व्यवस्था चालू रहनी चाहिए। खुली आर्थिक व्यवस्था हो। सोवियत जनता का बहुमत है।

चमार महर्षि वाल्मीकि की सतान ह वालमीकि चमार थे। रामायण की रचना महर्षि वाल्मीकि ने की थी।

पश्चिम एशिया मे छ देश है। सभी मुसलमान है, इन देशो के प्रशासक और नेता आधुनिक ढग की जीवन मे रहते हैं। बाल कटाई और पोशाक आधुनिक ढग की ह यानी पश्चिमी ढग की ह। योरप और अमरीका के लोगो जसी जीवन शनी और बाल कटाई ह। भारत पाकिस्तान के मुसलमान भी आधुनिक ढग से रहते ह। पर कुछ मुसलमान मध्य युगीन है। उनकी स्त्रिया पगथली से लेकर चोटी तक ढकी रहती हैं। उस पोशाक को बुर्का कहते ह।

मध्य युगीन भारतीय मुसलमान बाल कटाई और पोशाक मुस लमानी ढग का रखते हैं। होठो के पास से लेकर चेहरे के ऊपरी हिस्से तक पतली कटाई करते हैं। सडक पर चलते इनसान को वह

सकते हैं कि यह मुसलमान है और अरब देश और पश्चिम एशिया की नकल करता है। ये मुसलमान भारत के देश भक्त नहीं हो सकते। इनकी सहानुभूति पाकिस्तान के साथ है। ये अरबी फारसी मुसलमान हैं।

शारीरिक परिश्रम करने से और व्यायाम करने से भूख क्यों जाती है उत्तर दीजिए उत्तर यह है कि ग्रोक्सीजन ज्यादा पेट में पहुचती है। ग्रोक्सीजन भोजन को पचाती है। शारीरिक काम न करने से ग्रोक्सीजन कम मात्रा में पेट में पहुचती है। इसलिए भोजन का ईधन नहीं पहुचती। आग नहीं जलती। आग न जलने के कारण, भोजन पकता नहीं है यानी पचता नहीं है पचना और पकना एक ही बात है।

विश्व शान्ति की स्थापना

विश्व शान्ति की स्थापना में पहला प्रयत्न हुआ 4 अक्तूबर 1985 में। उस दिन सोवियत राष्ट्रपति गोर्बाचेव फ्रांस की राजधानी पैरिस में थे। फ्रांस के राष्ट्रपति मितरां से संतोषजनक बात हुई। इसके बाद गोर्बाचेव ने शिखर सम्मेलन शुरु किये। पहला शिखर सम्मेलन 21 अप्रैल 1985 में जेनेवा में हुआ। 1965 5 मार्च 1953 में स्टेलीन की मृत्यु हुई। 1965 में चर्चिल की मृत्यु हुई। साम्यवाद और साम्यवाद विरोधी दोनों उल्टी विचारधायें मिली तब हिटलर हारा। वह विश्व विजयी लगभग हो गया था। सारे पश्चिम को उसने लगभग जीत लिया था। हिटलर 21 जून 1941 में सोवियत संघ पर हमला बोल दिया और मर गया। आत्म हत्या करली अपनी रसोई में छुप कर।

अपनी सेना घटाकर गोबछिव ने अमरिका को भरोसा दिला
दिया कि सोवियत संघ शान्ति का वातावरण चाहता है। और
विश्व शान्ति की स्थापना हो गई। विश्व शान्ति की स्थापना मे दो
का हाथ है। अटम बम्ब का और गोबचिव का। अमरीकी राष्ट्रपति
को बुलाकर दिखा दिया कि जिसका तुम घमण्ड करते हो वह मेरे
पास भी है। स्टेलीन ने हुक्म दिया कि इस अवधि म अटम बम्ब
बन जाय। और अटम बम्ब का विस्फोट हो गया।

विश्व शान्ति को कायम रखने मे होट लाईन का हाथ है। यह
होट लाइन 1962 में तैयार हो गई थी। उस वर्ष ख्रुश्चोव की
नरमी न विश्व युद्ध टाला था। उसने मध्य अमरीका से अपनी सेना
वापिस बुला ली थी। ख्रुश्चोव की हार ख्रुश्चोव की जीत सिद्ध
हुई। हार में जीत यों निकलती है। ख्रुश्चोव ने अमरीकी हुक्म
माना। ख्रुश्चोव जीता।

सुरक्षा और सहयोग का संगठन योरप की शान्ति के लिये 30 जुलाई
1975 में बना था। यह संगठन फिनलैंड की राजधानी हेलसिंकी
म बना था। एक अगस्त 1975 मे इस पर हस्ताक्षर हुए थे। इस
संधि को फाइनल एक्ट 1975 कहते हैं। योरप की शान्ति ही विश्व
की शान्ति है। दुनिया के विभिन्न भागों मे युद्ध होते रहते हैं जैसे
कि पश्चिम एशिया के अरब देशों में होते रहते हैं।

1985 में गोर्बाचिव के आने के बाद विश्व शांति किसी एक्ट
या संधि पर निर्भर नहीं है। वह निर्भर है गोर्बाचिव की कोशिशों
पर। उसके विदेशी दौरों पर। उसकी खुलेपन की निति पर।
गोर्बाचिव के इस मन्त्र पर।

स्टेलिन शासन या उल्टा गार्बाचवी शासन स्टालिन न सख्ती की कठोरता की प्रति पर दी। गार्बाचेव न ढिलाई की नरमी की प्रति पर दी। कहावत ताड भी कि प्रति सवत्र वजत। इन गुंडों को माफिया टोल MAFIA GANG कहते हैं। लूटना हत्या करना, स्त्रियो के साथ बलात्कार करना आदि। यह भी दूरस्थ स्थानो पर नही। मास्को नगरी की सडकों पर। रात को नहीं दिन म। छुपकर नही, सडको पर झगडे सडको पर सबका प्रदर्शन। मास्को वाशिंगटन से आगे हो गया। गर्भपात के विशेषज्ञों का एक वग बन गया।

कठोरता एक बुराई है तो ढिलाई दूसरी बुराई है। कठोरता बडो के लिए बुराई है, ढिलाई छोटो के लिए बुराई है। बडे थोडे होते है, छोटो से समाज बनता है।

याद प्रशासन और अनुशासन साथ चलने चाहिए। कठोर हैड मास्टर की स्कूल मे पढाई अच्छी होगी। विद्यालय का उद्देश्य पढाई है। बच्चो पर अनुशासन और मास्टरों पर अनुशासन साथ चलने चाहिए।

सोवियत सघ की जन सख्या 1991 मे 29 करोड है। उनतीस करोड है। तीसरा नम्बर है।

आकाश मे सनिक ठिकाने SDI STRATEGI DEFENCE INITIATIVE 23 मार्च 1983 मे अमरीका ने ऐसी योजना तयार की कि वह अन्तरिक्ष मे, असीमित और अदृश्य आकाश मे सनिक ठिकाने बनाएगा जिनको सोवियत सघ ढूढ नहीं सकेगा। काम प्रारम्भ हो गया था नीव पड चुकी थी। कार्टर

और मजदूर जान लग गये थे। गोर्बाचेव उस समय केवल नेता था। पर उसने उसी समय दूसरे खतरों से सावधान किया। विश्व के दबाव से और सोवियत संघ की घोषणा से कि यह पीछे नहीं रहेगा।

अमरीका ने यह मांग छोड़ दी। आकाश में पहरी लगाने का काम गोर्बाचेव की धमकी से और विश्व जनमत को जगाने से बन्द हुआ।

यह है समाजवाद की विश्व को दी गई सेवा। Communism is Humanism साम्यवाद ही मानववाद है। मानववाद की दूसरी व्याख्या है ही नहीं। यदि हैं तो पाठक बतायें।

पृथ्वी का चौथा भाग ऐसा है जहां बर्फ है। पिघलती नहीं है। बर्फ क्यों है? पिघलती क्यों नहीं है? पाठक जानकारी प्राप्त करें।

रूसी प्रेजीडेंट और सोवियत प्रेजीडेंट में क्या अंतर है।

दिल्ली घोषणा पत्र नवम्बर १९८६

भारत और सोवियत संघ के बीच दस सिद्धांत कायम करने निर्णय किया गया। सिद्धांत अहिंसा पर आधारित है। विश्व की राजनीति में यह पहला सिद्धांत है जो अहिंसा पर आधारित है। दस सिद्धांत ये हैं —

1 शान्ति पूर्ण सह अस्तित्व विश्व व्यापी आधार बनना चाहिए।
2 मानव जीवन सर्वश्रेष्ठ माना जाना चाहिए।
3 अहिंसा सामाजिक जीवन का आधार बनाना चाहिए।
4 भय और शंका के स्थान विश्वास बैठना चाहिए।

5 प्रत्येक देश की प्रभुसत्ता का आदर हो।
6 जो साधन नाश पर नष्ट हो रहे हैं, वे विकास पर लगने चाहिए
7 नागरिक का बहुमुखी विकास हो।
8 वर्तमान भय का वातावरण दूर हो।
9 निरस्त्री करण करके अहिंसा की स्थापना हो।
10 मध्य देशों के मामों में महा शक्तियां हस्तक्षेप न करें।

मार्क्स और अगल्स दोनो भूल गये थे

जब साम्यवाद का सपना देखा और सामाजिक आर्थिक व्यवस्था की कल्पना की उस एक मूल भूत तथ्य भूल गए। जन संख्या की बढ़न की प्रवृति है। और रोके तो कौन रोक और क्यों कोई मान।

जमीन सीमित है और सीमित होती जायेगी। ब्रह्माड में कहीं जमीन नहीं है। रामजी ने बस एक ही पृथ्वी बनाई थी। कोई प्रयोग करना था। सो रामजी ने कर लिया।

साम्यवाद कभी नहीं आयेगा। भारतीय कम्यूनिस्टों की पहली सभा 26 दिसम्बर 1925 में कानपुर में हुई थी।

त्यौहार

हमारे त्यौहारों में किसी भी त्यौहार का इतिहास सम्मत नहीं है। होली कब चली, क्या चली, किसने चलाई इसका इतिहास नहीं है। दिवाली की भी यही हालत है। इतिहासिक घटना होने की यह कसौटी है कि उसका प्रमाण होना चाहिए। सबसे आधार

मूत्र बात है कि उसका काल हो। रामायण, महाभारत, होली दिवाली, दसहरा आदि सब काल्पनिक ह, कवियो की रचनायें ह। उप यासकार कहानीकारों की रचनायें हैं।

इतिहासकारों के लिए ये कथायें ग प ह Fiction ह।

बस, एक त्योहार सही है। वह इतिहासिक घटना ह। वह है बुद्ध पूर्णिमा। बुद्ध महाराज का समय 400 ई पूव के आग पीछे का ह। महाभारत का युद्ध 900 ई पूर्व मे अब माना जाने लगा है। पर इसे इतिहास का अग नही बनाया जा सकता। राम-रावण गढ़ी हुई कथा हैं। बुद्ध की मृत्यु 544 म हुई।

भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग आधुनिक काल ह। यह युग 1757 स शुरू हुआ। बगाल से शुरू हुआ। भारत भूमि का निर्माण वर्ष 1757 ह। बगाल मे पूव स शुरू हुआ। उत्तर पश्चिम की तरफ भारत भूमि बढ़ती गई। दिल्ली पहुचने म इस एकता धारा को एक सौ वष लगे। 1757 स 1857 के बीच भारत बना। इससे पहले भारत था ही नही। मगध नामक राज्य का केवल बिहार और उत्तर प्रदेश म प्रभाव था। अशोक की भी यही सीमा थी। देश को गौरव ह अशोक महान पर। उसने दो इतिहासिक काम किए। बौद्ध धम यानि अहिंसा का प्रचार और उस समय तक के सबसे बड़े राज्य पर शांति काल की स्थापना मौर्य काल यानी बौद्ध काल और गुप्त काल यानी हिंदुकाल।

इसी प्रकार आखातीज अक्षय तृतीया नाम बहुत बड़ा ह। पर इसकी हिस्टरी नही है। इसलिए इसका कोई महत्व नहीं ह। इसी तरह राम-रावण युद्ध एक बहुत बड़ी गल्प है। गप्प ह। कौरव-पांडू आदि वश का इतिहास से कोई सम्बन्ध नहीं ह। कहानी, उप-

न्यास लिखने की प्रथा सदा से रही है। महानीकार, उपन्यासकार सदा से रहे ह।

राजस्थान बना 17 मई 1949 मे। शीत युद्ध शुरु हुआ 4 माच 1946 मे। चर्चिल ने सोवियत कम्यूनिजम के विरुद्ध भाषण दिया। द्वितीय युद्ध की समाप्ति के बाद शान्ति का दशन जन्म मा 567 ई पूव मे जब गोतम बुद्ध जन्म मे। राज्य स्तर पर शान्ति के दशन का प्रारम्भ हुआ चौथी सदी मे जब अशोक महान ने अहिंसा का सकल्प किया और अहिंसा का प्रचार किया। गोतम बुद्ध और अशोक महान प्राचीन भारत के अहिंसा के जन्मदाता बने। आधुनिक भारत मे महात्मा गाधी अहिंसा के प्रचारक बने। मध्य काल के भारत म अकबर महान ने शाति का माग दशन अपनाया। आक्रमण की नीति हिंसा का मार्ग अशोक न बद किया अकबर न अपनाया और महात्मा गाधी ने इस विश्व व्यापी बनाया।

विक्रमी सवत ईस्वी सन मे अठावन वष पुराना ह।

स्वर्ण युग

भारत के इतिहास का स्वण युग गुप्त काल म था। उस काल म भारत मे कोई लडाई नही हुई। हष वर्धन का समय भी शान्ति का समय था। यह समय था 606 ई से 647 ई तक। हिंदु सम्राटो में हष वधन ही कारगर और बडा सम्राट था। याद रखना चाहिए अशोक बौद्ध था। चन्द्रगुप्त मौय हिंदु था।

मुसलमान का पहला हमला 712 ई मे हुआ। पर आक्रमण कारी वापिस चला गया।

हिंदु मुसलमानों का पहला साम्प्रदायिक झगडा महमूद गज़नवी ने गुजरात में सोमनाथ का मदिर तोडा। यह पहली साम्प्र-

दायिक घटना है। धर्म के नाम पर होने वाला पहला लडाई झगडा यह घटना है 991 ईस्वी।

1991 मे लेनिन की दुर्गति

मार्क्स और एंगल्स ने समाजवाद का दर्शन ढूंढा। लेनिन ने उसे सोवियत संघ मे सफलतापूर्वक लागू किया। स्टलिन ने उसे आकाश पर चढाया और अब समाजवाद के दुश्मनो ने समाजवाद की नगरी मोस्को मे लेनिन की मूर्ति को उखाड फेंका।

लेनिन के मस्तिष्क का अध्ययन

लेनिन की मृत्यु जनवरी 1924 मे हुई थी। स्टैलिन के आदेश से लेनिन का मस्तिष्क अध्ययन के लिए सुरक्षित रख दिया गया। मस्तिष्क का अध्ययन नये नये आविष्कारो द्वारा आज तक हो रहा है। उस अनमोल मस्तिष्क को समाजवाद के कट्टर दुश्मनो ने फेंक मारा। आजकल सोवियत संघ का अनुशासन कैसा है। कल्पना करो। स्टेलिन का दिमाग भी वहीं है। वैज्ञानिको के दिमाग भी वही है।

1 राजस्थान नहर का उद्घाटन 27 अक्टूबर 1927 मे हुआ। जी डी रडकन के प्रयत्न से यह नहर आई थी।

2 ओलम्पिक खेल 776 ई पूर्व मे ग्रीस मे चले। खेलो का प्रारम्भ यही से होता है। सभ्यता का विकास भी यही से शुरू होता है। सन 394 में ये खेल बंद हो गए।

3 रामायण एक कवि की कल्पना है। वह एक कहानी है, समय, काल आदि का पता नही है। इसी प्रकार महाभारत एक कहानी है। इतिहास का इन घटनाओ से कोई संबन्ध नहीं है, अंग्रेजी में ऐसी कहानी को LEGEND लीजेंड कहते है।

4 लाला लाजपत राय की मृत्यु 1929 मे पुलिस की गोली से हुई।
5 संसार मे 3500 भाषायें है ।
6 शांति स्थापना का कार्यक्रम शुरू हुआ 15 जनवरी 1986 व सफलता मिली 21 नवम्बर 1985 मे, जेनेवा नगर की शिखर वार्ता मे ।
7 भारत म छापाखाना चालू हुआ 1556 म ।
8 स्टीम इ जन बना 1712 इ गलड मे ।
9 जीवन का आरम्भ हुआ छ करोड 90 लाख वर्ष पहले ।
10 ईसाइयो की सख्या 1986 म एक अरब 62 करोड ।
11 सबसे पुराना विश्वविद्यालय बना मोरोक्को मे, उत्तरी अफ्रीका 859 ई मे।
12 सबसे पुरानी सभ्यता मध्य पूर्व मे दजला और फरात नदियों के किनारे वहा आजकल जो देश है वह है मैसोपोटमिया । यह 3500 ई पूर्व की बात है । उस नगर राज्य होते थे । आबादी कम होने से जमीनो पर, प्राणियो पर कब्जा नही किया जाता था । नील नदी के मैदान म मिस्र की पहली सभ्यताओं का दर्जा है । मिस्र, मैसोपोटेमिया यूनान टर्की आस पास ही है । पूर्व म चीन की सभ्यता का जन्म स्थान है तो सभ्यता के जन्म स्थान पूर्व और पश्चिम दोनों दिशाओ म है । भारत का स्थान तीसरा है । आम भी मध्य पूर्व से ही आए थे । दजला फरात के मैदान मे ।

चाक की सवारी भी मध्य पूर्व म यानी दजला और फरात क किनारे शुरू हुई । लाठी क बाद लोहे का प्रयोग होने लगा वह भी इसी स्थान पर हुआ । कुल्हाडी सादा की कुछ चाकू खनवर आदि यहा बने । मिट्टी की पलटों पर लिखाई शुरू हुई । यह भी

यहीं से शुरू हुई । घड़े, हाँडी भी यहीं बनने लगे । कुम्हार पहला कारीगर था, लुहार दूसरा ।

संसार की जन संख्या पांच अरब है । पच्चासी करोड भारत की आबादी है । खेलों का प्रारम्भ यूनान म 1370 ई पूव मे हुआ फिर मिट गए ।

विश्व के सात बडे औद्योगिक देश

1 अमरीका 2 जापान 3 जर्मनी 4 फ्रांस 5 इटली 6 कैनाडा 7 ब्रिटेन । सीखने की बात है कि इन नामो मे सोवियत संघ का नाम नहीं है । कारण यह है कि औद्योगिक देश नही है वहां कल कारखाने नहीं है । कच्चा माल बहुत हैं पर उसकी मशीने आदि नहीं बनती । सिविल कारीगरी नही है, हा सैनिक कारीगरी है । स्टेलिन ने सैनिक कारीगरी पर जोर दिया था । कारण यह था पश्चिमी पूजी पति देश आक्रमण की तैयारी मे थे । कम्युनिजम को उखाड फेंको, यह उनका उद्देश्य था । अब गोर्बाचेव उसे औद्योगि देश बनाना चाहता है, भाग दौड करता रहता है ।



वस्तुगत संसार के तीन विभाग

प्रकृति, समाज और विचार, चिंतन

विचार चिंतन होना चाहिए प्रकृति और समाज के विषय म।

परिवार नियोजन

भारत मे आबादी बढ़ती जाएगी। मुसलमान बढाना चाहते हैं सिख भी पीछे नहीं हैं। हिंदुओ मे मतभेद है, जैसा कि सदा रहा है।

लेबर मार्केट

जैसे वस्तुओ की मार्केट होती है वसे ही लेबर मार्केट होती है। मोल तोल म कम्पीटीशन जरूरी है।

पाकिस्तान मे साम्प्रदायिकता और क्षेत्रीयता दोनों है। शिया और सुन्नी दो वर्ग हैं। फिर सिंधी आगन्तुक लोग जो भारत से गए एक बड़ा सम्प्रदाय उत्तरी पश्चिम सीमा का है। भाषा का प्रश्न भी

हैं। पंजाबी, सिंधी, पठावरी, कश्मीरी आदि। पाकिस्तान में सैक्यूलर दल भी हैं—विशेषकर कराची और सिंध में। इंडोनेशिया भी मुसलिम देश है। वहां नौ करोड़ मुसलमान हैं। अरब देश व्यापारी वहां गए थे उन्होंने स्थानीय लोगों को मुसलमान बना दिया कसर से बचने के लिए पत्ते की सब्जी, छिलके सब्जी होनी चाहिए। यानी सब्जी का छिलका होना चाहिए। जैसे आलू का छिलका उतरना नहीं चाहिए।

सोवियत कम्यूनिस्ट पार्टी के टूटने से पहले उसकी सदस्य संख्या 22 करोड़ थी। सोवियत संघ की कुल आबादी 1988 की जुलाई में 29 करोड़ थी। पार्टी के पास करोड़ों रुपये थे। जब्त हो गए। बड़े-बड़े भवन भी जब्त हो गए। पार्टी गैर कानूनी बन गई। सोवियत संघ में कठोरता घटने से, परिश्रम में ढिलाई आई। उत्पादन कम हुआ। सामान घटा, भाव बढ़े सामान की कमी होने के कारण सब लोग लोकतन्त्र को कोसने लगे हैं।

मध्य युग के संत कवि कहा करते थे
जात पात पूछे ना कोई, हरि को भज सो हरि को हायी।

एक साम्प्रदायिक युद्ध

दो धर्मों के बीच का युद्ध साम्प्रदायिक युद्ध कहलाता है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अब साम्प्रदायिक युद्ध समाप्त हो गए। केवल एक अपवाद है। वह है इजरायल और पलेस्टाइन के बीच में। इजरायल नाम के देश की स्थापना 1948 में हुई थी। यहूदी लोगों का एक होमलैंड बनने के लिए 1948 में एक देश बना दिया गया। यह इजरायल है। अरब जाति के मुसलमानों के बीच में इजरायल

बना। झगडे म बना और झगटा प्राज तक चल रहा ह। यह प्रदेश पश्चिम एशिया कहलाता ह। पश्चिम एशिया म छ देश ह। अरबों के देश का सिरिया ह। यह सिरिया फिलिस्तिनी युद्ध भी कहलाता है यहूदी और अरब एक दूसरे को घणा करते हैं कि 1948 से 1991 तक आपस म कभी मिले नही। बात नहीं की इस वर्ष 1991 क अक्टूबर म स्पेन की राजधानी मेडरिड में मिले। सम्मेलन में दोनों पक्षो ने हाथ नही मिलाए, मुस्कराए नहीं। इतनी गहरी नफरत, इतनी पुरानी नफरत आज की परिस्थिति मे यह गर अरवाद ह।

43 वर्ष पुराना युद्ध बेमिसाल है। यह साम्प्रदायिक बेमिसाल ह। ससार की पहली लडाई 490 ई पूर्व म हुई। यूनान और फारिस के बीच में हुई। 26 जनवरी का उत्सव मानना महत्वपूर्ण नही है। 15 अगस्त मानना महत्वपूर्ण है। उस दिन पूण स्वतन्त्र हुए थे।

1465 और 1952 के बीच राजस्थान का जाट जमीन से कटा रहा।

15 जून 1215 मे लोकतन्त्र का जन्म हुआ। ब्रिटिश सम्राट ने स्वीकार किया वह ससद के अधिकारो को मानकर उस द्वारा बनाए कानूनो पर हस्ताक्षर करेगा।

मनु महाराज–ईसा से पूर्व चौथी सदी में हुआ। उसी ने जातिया बनाई और उनके कर्तव्य बताये।

26 जनवरी 1929 में कांग्रेस ने स्वतन्त्र होने का यानी गण-तन्त्र होने का निर्णय लिया।

पहली पुस्तक छपी चीन में 1471 में।
सबसे पहले कपडा बना 4500 वर्ष पहले।

भौतिकवाद का दर्शन फ्रांस में अठारवीं सदी में बना।

युद्ध जीते नहीं जा सकते, युद्ध नहीं होने चाहिए, यह निर्णय मिलकर सम्मलन में लिया, 21 नवम्बर 1985 जेनेवा में।

बाल्मीकि ने रामायण लिखी 600 ई पूर्व म, बाल्मीकि जाति के चमार थे।

वर्तमान विचारें चालू हुई 1859 मे।
खेती चालू हुई ग्यारह हजार वर्ष पहले।
कुत्ता पालन शुरू हुआ 7700 ई पूर्व म।
भेड पालन शुरू हुआ 7200 ई पूर्व मे।

मार्क्स का जन्म 5 मई, 1818 म हुआ, मृत्यु हुई 14 मार्च, 1883 म।

'मजदूरों का अधिनायकवाद' नामक व्यवस्था का विचार मार्क्स ने स्वय ही प्रस्तुत किया था। इस विचार के कारण समाजवाद की स्थापना म बहुत सफलता मिली।

पुरानी दुनिया में तम्बाकू का पौधा नहीं था। 1492 म अमरीका ढूँढी गई। 1501 से योरप के निवासी वहां बसने लगे। तम्बाकू खाने लगे और पीने लगे। सबसे पहले पुर्तगाल और स्पेन में आई। फिर फ्रांस म आई। गोआ, डामन और डिऊ में पुर्तगाली बसने लगे और धुऐ का प्रचार करने लगे। सर्वनाशक धुआ केवल 500 वर्ष पुराना है। पुर्तगाली और अंग्रेज लाए। ज्यों अंग्रेज फलते गए, धुआ फैलता गया। अंग्रेजो ने पाइप बनाया, हमने चिलम और हुक्का बनाया। चिलम और हुक्के की हिस्टरी नहीं मिलती।

कमर से बचना हो तो धुएं से बचो, किसी आदमी का बीड़ी

सिगरेट से स्वागत करना, उसे हानि पहुचाना है।

प्रण करलो कि बीड़ी–सिगरेट किसी को नही पिलाऊगा। चुप मत रहो, गौरव के साथ बोल कर कह दो कि मैं आपको बीड़ी सिगरेट नही पिलाऊ गा। सवनाश का पहला कदम मैं नहीं उठाऊगा

चाय

यह नुकसान नहीं करती, लाभ भी नही करती। हां, मन को राजी करती है। लाभ यह है कि चाय के नाम से थोड़ा दूध भी पेट मे चला जाता है।

छाछ

खूब पीओ, धाप कर पीओ, पिलाओ। फीकी पीओ, नमक मिलाओ, चीनी मिलाओ।

दस लाख को मिलियन कहते हैं। एक करोड़ को दस मिलियन कहते हैं। पर भारत मे चलन हो गया है कि करोड़ को Crore कहते हैं, लाख को Lakh कहते हैं। एक–One Hundred Thousand हिंदी मे एक सौ हजार। दस करोड़–Hundred million इसके बाद की सख्या बिलियन कहलाती है जो हमारे मे नहीं आती। हमे यह जानना जरूरी है कि मिलियन Million किस कहते हैं। फिर सीखो–मिलियन–दस लाख।

सोवियत सघ की जनसख्या 1988 में 28 करोड़ थी।

चीन की जनसख्या एक अरब का पहुचने वाली है। ससार की जनसख्या 5 अरब है। भारत की जनसख्या 85 करोड़ है।

मानव जाति का जो पहला समाज बना वह कहलाता है प्रारम्भिक समूह प्रणाली–PRIMITIVE COMMUNAL SYS

TEM यह समूह दस हजार वर्ष चला। इससे पहले मनुष्य हिरणों की तरह जगल में बिना किसी व्यवस्था रीति रिवाज के रहता था। ठीक इसी तरह जैसे हिरण रहते हैं। यही से इतिहास शुरू होता है। इसमें पहले मनुष्य जानवर थे। जानवरों का इतिहास नही होता।

इतिहास का अध्ययन हम चार भागो मे बाटते है

1 परिवार पूर्व का काल मानव इतिहास शुरू होता है। जब मानव दो परो पर चलने लगा। अगली दो टागे हाथ बन गई थी। यह समय था आज से दस लाख वर्ष पहले था।

2 परिवार काल यह काल शुरू होता है आज से 40 हजार वर्ष पहले।

3 सांमत काल जब मनुष्य अच्छी जमीन पर कब्जा करना शुरू किया यह समय शुरू होता है आज से दस हजार वर्ष पहले।

4 उत्तर सामत काल– जब राज्य बनने लगे। राजा बनने लगे। राजाओं के नीचे भूमि पति बनने लगे। फिर छोटे भूमि पति बनने लगे। किसान वर्ग का उदय हुआ आक्रमण होने लगे। सेनायें होने लगी।

विद्यायें बढने लगी। विज्ञान उदय हुआ प्रकृति पर नियन्त्रण होने लगा, आविष्कार होने लगे मशीन बनी।

1 पूंजीवाद इंग्लैंड मे शुरू हुआ 1760 मे जब यहा पहला कारखाना खुला और मशीन से चलने लगा।

2 सांमतवाद शुरू हुआ जब राजा होने लगे। बडा बादशाह था। बादशाह के नीचे छोटे राजा। राजाओं के नीचे जमीदार।

जमीदारो ने कौचे किसान ।

3 प्रारम्भिक समाज–Primitive Society परिवार बढते गये।

समाज वनने लगा पीढिया वनने लगी । गोत्र बनन लग ।

4 समाजवाद–जसा सोवियत सघ मे है ।

स माजिक आर्थिक न्याय के सिद्धात का प्रारम्भ हुआ टोमस मूर स वह 1478 से 1535 के समय मे या । दूसरा व्यक्ति है टोमासो कपानेल जो 1568 से 1639 के बीच था । ईसा से 3500 वप पहले मिश्र म वर्ग उन गए । ईसा से 3500 वप मिश्र में युद्ध होा लग गए थे । प्राचीन मे धरती, सोना और दास ये तीन चीज सम्पत्ति मानी जाती थी ।

पावक, वैरी, रोग रिण,
सपने ही राखिए नाहि ।
ये थोडे हू बढई पुनि,
महा यतन सू जाहि ।

ये पक्तिया मैंने 1926 में कठस्थ की थी । परन्तु मैंने इन्हें काम में नही ली । मेरा पुत्र सज्जन कुमार अप्रेल और मई, 1991 में दो महीने बिमार पडा रहा । मैं उग होस्पीटल नही ले गया । वह दा जून 1991 के दिन चल वसा । यह 'लापरवाही मैंने कसे की क्यो की, मैं रात दिन आंसू भरता हू । उसकी मा नारायणी देवी की क्या हालत ह, वणन से वाहर है ।

बडे लोग

वह दुर सिहजी–जाट समाज के पहले सेवकों में है । उन्होंने 1917 मे जाट स्कूल सगरिया की स्थापना की । बीमार हो जाने के क रण वे वृद्धावस्था स पहले ही चले गए । उनका देहात । जून

1924 में हुआ था। उनके जीवन का यह अंतिम दिन हर वर्ष याद किया जाना चाहिए।

राष्ट्रीय झंडों का रिवाज 1219 में पड़ा। डेनमार्क ने बनाया था। 1339 स्वीजरलैंड ने बनाया।

प्रतिरक्षा के लिए पहली दिवार 271 ई पूर्व चीन में बनी। इस दिवार के बनने मे 15 वर्ष लगे। यह भी जानने की बात है कि यह दिवार आज भी कायम है। चीन की सभ्यता पहली तीन सभ्यताओं में है। मिश्र, इराक और चीन, ये सभ्यताओं के पीछे क्या कारण है, इसका अध्ययन आज तक नहीं है। मिश्र और यूनान तो पास पास है। पर चीन तो इन दोनों स्थानों से हजारों किलो-मीटर दूर है। एक पूर्व में है, दूसरे दो पश्चिम में हैं। इतिहास में यह भी रहस्य है कि आर्य लोग कहां से आए? वापिस क्यों नहीं गए? यह भी रहस्य है कि संस्कृत भाषा किसने बनाई और कब बनाई। वेद किसी विचित्र विद्या किसने और कब बनाई।



भारत-भ्रमण

सन् 1921 में मैं भारत भ्रमण पर निकला। रोटी कपड़ा और मकान की तलाश में निकला। उस समय 1920 के लिए जो नयी चीज थी वह थी कि रोटी कपड़ा और मकान के साथ विद्या भी प्राप्त हो। और 1926 में मुझे ये सब चीजें मिल गईं। तब मैंने कहा

> रोटी कपड़ा और मकान,
> संग में हो विद्या का दान,
> देख डाला देश तमाम,
> आया न कहीं मेरा काम
> बहादुरसिंह का करूं गुणगान
> सचमुच था वह मनुष्य महान।

बहादुरसिंहजी ने 1917 में संगरिया कस्बे में स्कूल खोला। जिसका नाम जाट स्कूल था।

संयोगवश

सब रचना संयोग वश हुई। मूल रचना संयोग वश हुई मिट्टी

पानी और हवा ये तीनो चीजें संयोग वश हुई । सूरज इन तीनों चीजों से बना है । संयोग हुआ कि सूरज का एक टुकड़ा टूटा । वह टुकड़ा आगका चक्कर लगाता रहा । उसे जहां अनुकूल स्थान मिला वह सूरज का टुकड़ा रुक गया । अनुकूल तापक्रम में यहां टुकड़ा धीरे-धीरे ठंडा होने लगा । मिट्टी सिकुड़ने लगी, क्योंकि हवा अलग हो गई । मिट्टी के सिकुड़ने से पहाड़, मैदान और सागर बन गए । उसके बाद सूरज में से कोई और टुकड़ा नहीं टूटा । यह अनुकूल वातावरण यहीं ही सीमित स्थान पर है । यह सीमित स्थान अब भर रहा है । मनुष्यों से भर रहा है । असीम ब्रह्माण्ड में हवा सीमित है, पानी सीमित है, मिट्टी सीमित है । नाना प्रकार के जीवों की सृष्टि की प्रवृति है । पशु-पक्षी और मनुष्य । मुख्य समस्या मनुष्य वृद्धि की है । पशु, पक्षी का बढ़ना या न बढ़ना मनुष्य के हाथ में है

हमारी पृथ्वी पर पांच महाद्वीप है और पांच ही सागर हैं । दो महाद्वीप पुराने हैं और इनकी सीमाएं मिलती है । एशिया की पश्चिम सीमा और योरप की पश्चिमी सीमा मिलती हैं । परिभाषा की दृष्टि से दोनों महाद्वीप एक ही महाद्वीप बनते है । परन्तु दोनो महाद्वीपों एक बहुत है । इसलिए इन्हें दो महाद्वीप माना गया है । एशिया और योरप सीमा जाट है । तीसरा और चौथा महाद्वीप ढूंढ गए पन्द्रवी सदी के अंत में । 1498 में कोलम्बस ने ढूंढे चौथा महाद्वीप आस्ट्रेलिया 1793 में ढूंढा गया । पांचवा महाद्वीप अफ्रीका की जानकारी तो थी पर यह जानकारी केवल किनारों तक ही सीमित थी पन्द्रवी और सोलहवी सदी में धीरे-धीरे भीतर जाने लगे लोग ।

पानी, हवा और तापक्रम—ये तीन चीजें केवल हमारी छोटी एक मात्र पृथ्वी पर है । जलवायु के अनुसार हमारी पृथ्वी के तीन भाग है । उष्ण शीतोष्ण और शीत आखिरी भाग जन शून्य हैं ।

पहला भाग पिछड़ा हुआ है। केवल शीतोष्ण कटिबंध पर विश्व की जनता बसी हुई है। यह शीतोष्ण कटिबंध एक दिन जन संख्या के भार से जरूर दबेगा। बचने का एक ही उपाय है कि कोई कठोर नियम बनाया और कठोरता से उसका पालन करवाया जाए। तभी कठोर प्रशासन कायम होगा।

साम्राज्यवाद और कम्यूनिज्म दोनों अभिव्यक्तियां रूढ़िवादिता बन गई थी। पर वस्तु स्थिति यह थी कि न कहीं साम्राज्यवाद है और न कहीं कम्यूनिज्म है। साम्राज्यवाद भूत मात्र रह गया है। कम्यूनिज्म की स्थापना की कोरी कल्पना है।

याद रखो–मनुष्य परिवार के लिए काम करता है करता रहेगा। समाज के लिए नहीं करेगा। स्टेलिन और लेनिन जैसे अकेले प्रशासक नहीं होंगे।



बीकानेर के कम्यूनिस्ट

शोकत उस्मानी 1921 म स्वतन्त्रता संग्राम मे हिस्सा लिया। पेशावर षड्यन्त्र केस मे कैद हुए 1924 म पार्टी के प्रथम आंदोलन मे हिस्सा लिया। कैद हुए यह आंदोलन कानपुर मे हुआ था 1928 म मेरठ षड्यंत्र केस मे कैद हुए। 1923 म लेनिन से मिले अफ-गानिस्तान होते हुए तुर्की के रास्ते छुपकर गए थे। उसी वर्ष टर्की के क्रांतिकारी नेता और तुर्की के प्रेजीडेंट कमाल पाशा से मिले थे। ध्यान देने की बात है कि हमारा आंदोलन एक मुसलमान ने शुरू किया था आज यह स्थिति है कि एक भी मुसलमान पार्टी का सदस्य नही हैं।

मदन अजमानी–कोमरेड मदन अजमानी की स्मृति में हमने अपने पार्टी भवन का नाम रखा हैं। मदन अजमानी डियूटी पर मारे गए थे। पलाना में कोयले के मजदूरों की सभा मे अध्यक्षता करने और मुख्य अतिथि की हैसियत से गए थे। लौटते समय गाडी का एक्सीडेंट हो गया था यह 1953 की घटना हैं।

मालदान देपावन—उपनाम 'मनुज' ये भी उसी गाडी म थ और सभा से लौट रह थे ।

रामनलाल—प्रथम सगठन कर्ता सभा म थ । इनका भाई प्रभुदयाल आज का मडिकल कालेज म डाक्टर हैं ।

1991 मे जिला कौंसिल के सदस्य

1 शिवचरण कश्यप 2 दानाराम पडिहार 3 बद्री मादानी 4 रामश्वर शर्मा 5 दुर्गाराम नमा 6 हनुमान गग

[illegible] पार्टी का हुसैन और बिजारो का पक्का साम्यवादी

कनल मोहनसिंह—राज्य स्तर के सक्रिय कार्यकर्ता

स्व० हुकमाराम गौड़—पार्टी के लिए गाव व नगर—डगर अलख जगाए रखा। लोकप्रिय जननेता जिसने कम्युनिस्ट पार्टी के लिए वर्षों भूख—प्यास सहकर कार्य किया आज हुआ टी. बी. की बीमारी से [illegible]

[illegible]

[illegible]

बीकानेर क्षेत्र के बड़े आदमी

चौधरी पोकर रामजी—एक भूमिहीन गृह हीन, ठेला धकेलने वाला जाट 1931 में भारत का दूसरा लखपति बना था। जो उस समय दावेदार मेहर छाजूराम कहलाते थे। 1931 में एक दिन की बात है बीकानेर रेलवे का जनरल मैनेजर पार साहब रेल की पटरी का निरीक्षण के लिए निकले। सुजानगढ़ से P.W.I. का ठेला Trolley रतनगढ़ की तरफ आ रहा था। रतनगढ़ पहुचने पर, साहब ने ट्रोली धकेलने वालों से परिचय पूछा। पोकरजी से भी पूछा। साहब जाट जाति के नाम से खुश होते थे। पोकरजी दूसरे ही दिन बीकानेर में पार साहब से मिले रेलवे कामों का उन्हें ठेकेदार बना दिया। बस पोकरजी बन गए पोकर ठेकेदार। कुछ ही महीनों में लखपति बन गए। बीकानेर में उस घर में रहने लगे जहां आजकल अमरनाथजी कश्यप रहते हैं। वह घर आज भी वैसा ही है जैसा 1931 में था लकड़ी की छत है लकड़ी वही है जो पोकर ने रखवाई थी। यह जगह मुझे इतनी प्यारी है कि मैंने भी अपना मकान उन्हीं के मकान

के पास बनाया है। बस्ती का नाम है पोकर क्वाटर्स। उस वक्त जो कुछ कमाई हुई वह उन्होंने परमार्थ पर लगाई। जाति सेवा में लगाई। यह कहना ज्यादा ठीक होगा कि दुखी जाटों की सेवा में, उनका दुख दूर करने में लगाई।

उस समय का जाट भूमिहीन था, फोग की लकड़ी बेच कर गुजारा करते थे। रात भर चल कर सवेरे बीकानेर पहुंचते थे। चिल्लाने लगते लादा लेलो, लादा लेलो। ऊंट दुखी, जाट दुखी। दोपहर हो जाता, शाम हो जाती थी। लादा नहीं बिकता था। 1931 का वह जमाना मंदी का था, भाव गिर गए थे।

पोकरजी दुखी थे, उन्होंने जाट धर्मशाला बनाई।

लादो लादे वाला को कतारिया कहते थे। लादे वालों की कतार रात को गावों से चलती थी। वह कतार बीकानेर की गलियों में फिरती थी, लादा लेलो, लादा आ।

पोकरजी ने यह कतारियां धर्मशाला स्थापित की 1931 में।

1947 में लोकतंत्र की लहर बीकानेर में भी चली, चौधरी कुम्भारामजी, चौधरी छागारामजी और मैं, हम तीनों ने इसे छात्रावास बनाया। मैं इस छात्रावास का प्रबन्धकर्ता हो गया। उसी में रहने लगा। 1947 से 1961 तक छात्रावास में ही रहा। फिर पोकरजी की बस्ती में पोकर क्वाटर्स में आ गया।

ये थे भारत के दूसरे जाट लखपति, और बहादुर सिंहजी के बाद दूसरे विद्या प्रचारक।

पोकरजी का गोद लिया बेटा रामनाथजी गंगानगर जिले में महरी जमीन का मालिक है।

पोकरजी को देखने से ऐसा लगता था कि इनके पास न रोटी

है, न कपडा है, न निवास है। और इनकी जानकारी भी बहुत कम हैं। पर वे थे महा मानव, कहना चाहिए जाट जाति का एक आदर्श मोडल Model मेरे तीखे स्वभाव को सह लेते थे, मुझे घर पर ठहराते थे। समय समय पर रुपया देते थे। मेरी इच्छा के अनुसार भोजन तयार करवाते थे। खीर बनवाते थे। और मैं मेरे पास क्या था। आप पाठक जानते हैं मेरे पास क्या था।

पोकरजी की तुलना किसी दूसरे आदमी से नही जा सकती। उनका स्वभाव, उनकी सहनशीलता उनका पहनावा, उनका बोलना क्रोध कभी नही, ऊ ची आवाज कभी नही, मूड का बदलाव कभी नहीं सदा एक मूड, एक ध्वनि स्वर, एक चाल, कभी जल्दबाजी नही कभी ताकी दी नहीं। घमड अभिमान नही, सारी उमर शरीर हल्का फक सा रहा। हमेशा धोती कमीज, कोट नही, बनियान नही स्वेटर नही, और सुनो एक ही कमीज था धोकर उसी को पहनते थे।

मित्रो के नाम

1 कानदान 2 लक्ष्मीदान 3 चतरसिंह

रिक्तारामजी—नोखा पचायत समिति के भूतपूर्व अध्यक्ष, जन नेता सादगी मे आदर्श व्यक्ति।

स्वामी सागरनाथजी—सच्चे, सादे और सरल स्वभाव के स्वामी ग्रामीण जन नेता।



बीकानेर के प्रमुख व्यक्ति

दाऊदयालसिंह–बीकानेर के प्रथम कम्युनिस्ट सांसद (लोकसभा)

पूर्व महाराजा करणीसिंह–पूर्व महाराजा जो बहुत बड़े बहुमत से लोक सभा के सदस्य बने। इनकी विशेषता यह रही है कि इनमें बड़प्पन का अहंकार नहीं था।

चुन्नीलाल इन्दलिया–बीकानेर जिले के महत्वपूर्ण किसान नेता हैं और विधान सभा के सदस्य हैं।

श्री गिरधारीलाल भोबिया–लोकप्रिय नेता हैं आप शुरू से ही किसान वर्ग से जुड़े रहे। बीकानेर जिला किसान सभा के अध्यक्ष रहे। किसानों की समस्याओं को लेकर कई आन्दोलन किये। नोखा मगरा विधान सभा क्षेत्र से विधायक चुने गये। राजस्थान विधान सभा में किसान हित के लिए आवाज बुलन्द की। बाद के वर्षों में सहकारी आन्दोलन में भाग लेकर बीकानेर जिला ऊन सहकारी समिति का गठन किया। नोखा, लूनकरणसर एवं बीकानेर मार्केटिंग सहकारी समितियों का गठन किया। किसान छात्रावास के अध्यक्ष

रहे। बीकानर जिला परिषद के चुनाव मे प्रमुख चुने गए। लगातार तेरह वर्षो तक बीकानेर जिला परिषद के प्रमुख रहे। कृषि क्षेत्र मे कार्यरत होकर गाव म कुआ खुदवाकर कुए से खेती शुरू की आज सकडो कुए नोखा तहसील मे खुद रहे हैं। तहसील के लोगो को यह रास्ता भी स्वय करके दिया है। बीकानेर शहर से इनके एक मात्र सहयोगी शिवरतन डावा रहे हैं। आज भी साथ देखे जा सकते हैं। श्री भोबिया प्रगतिशील विचारक ह एव मिलनसार व्यक्तित्व के धनी ह। आज भी उमूल डेयरी एव डेयरी फेडरेशन के अध्यक्ष ह।

कोमरेड गिरधारी लाल–सदा स ही कम्यूनिस्ट ह। सदा से ही सेक्यूलरवादी हैं। सदा से निष्ठावान ह। कम्यूनिस्ट होने के साथ साथ सामाजिक कार्यकर्ता ह। नागरी भडार के विकास म आपका बहुत बडा सहयोग ह। राज्य स्तर की कार्यकारिणी के आप सदा से ही सदस्य रहे ह। सावजनिक सभाओ मे अच्छा भाषण कर्त्ता हैं हर मौसम कुर्ता पाजामा म रहत हैं। सादा जामा पदन करते ह। कभी अडते नही, घमन्ड नाम की चीज नहीं महत्वाकाक्षा इनके स्व–भाव में कभी नहीं रही। पार्टी क्षेत्र में, समाज क्षेत्र मे गिरधारी लालजी एक आदर्श मानव आदश कायकर्ता और आदश साम्य–वादी ह। 1981 स वे नागरी भडार के अध्यक्ष हैं।

कोमरेड शिवकिशन–1991 मे जिला सेक्रेटरी हैं। राजस्थान की कार्यकारिणी के सदस्य ह। 1956 स 1982 तक रेलवे म नौकरी की। सेवा मे साथी मजदूरो का सगठन किया। ऐच्छिक रिटायरमेंट लिया जिससे कि पूरा समय पार्टी के कामो मे लगा सकें। सभाओ म अच्छे भाषण देते हैं। विशेष बात यह ह कि आज भी मजदूर नेता ह। 1983 मे सात महीने सोवियत सघ म रहे।

1960 मे रेलवे हड़ताल म पूरा भाग लिया। डिसमिस हुए फिर नौकरी में ले लिए गए। राजीपे की शर्तो के अनुसार लिए गए।

श्रीगोपाल जोशी–प्रगतिशील विचारों से ओत पात, बीकानेर नगर के पूर्व विधायक प्रगतिशील युवक सम्मेलन क वर्षों पूव स्वागत अध्यक्ष रहे। रूस यात्रा करके आए। अच्छे वक्ता व कई विषयों क ज्ञाता। सभी से सामान्य भाव मिलते हैं, घमड से कोसो दूर हैं। मृदुल स्वभाव आकर्षक व्यक्तित्व के धनी।

कर्नल मोहनसिंह–बड़े अफसर हैं। भूमिपति हैं। फिर कम्यूनिस्ट नता हैं, सक्रिय और गतिशील है।

हरिराम चौधरी–नागौर निवासी, बीकानेर मे डूगर कालेज के छात्र थे। छात्रों में प्रगतिशील और वाम पथ का प्रचार किया। भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी के लिए धन भेजा करते थे। जन सभा बुला कर उसे सफलता पूवक सबोधित करते थे।

शौकत उस्मानी भारतीय स्तर पर भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी की स्थापना म बहुत बडी भागीदारी थी। सोवियत सघ और अरब देशो का दौरा किया। जन मुक्ति सघर्षो म सक्रिय भाग लिया।

कुम्भारामआर्य–भूतपूर्व बीकानेर स्टेट की नौकरी म रहते हुए भी जन जागृति मे सक्रिय थे। उस समय के महाराजा ने जनता सरकार बनाई। उसम कुम्भारामजी मिनिस्टर थे। बाद म राजस्थान स्तर पर भी मिनिस्टर रहे। अस्सी से ऊपर की उमर मे होते हुए भी आज भी सक्रिय नेता हैं।

प्रोफेसर केदार–भूतपूर्व बीकानेर राज्य में सक्रिय नेता थे। राजस्थान बनने पर राजस्थान स्तर पर मिनिस्टर रहे। समाज सेवा म इतने सक्रिय रहे कि इन्होंने विवाह नहीं किया। सेवा क क्षेत्र म बहुत सदाचारी और एक आदर्श ब्रह्मचारी रहे।

मनोहर मिस्त्री–बीकानर स्तर पर ग्रौर राजस्थान म पिछडी जातियो क उत्थान मे बहुत योगदान रहा।

मुरलीधर व्यास–बीकानेर स्टेट के समय से ही एर बहुत ही जनप्रिय नेता थे। सरकारी नौकरी छोड कर समाज सेवा मे लगे। सेवा भाव की लगन से प्रेरित होकर उन्होंने नौकरी छोडी। सभाओं मे भीड बहुत बडी हो जाया करती, जब वे बोलते थे।

स्वामी सागरलायजी–बहुत ही सरल स्वभाव, सदाचारी जन सेवक हैं। किसानो में बहुत माननीय हैं।

दुर्गाराम–कालू निवासी, पुराने नेता, छात्र जीवन से पार्टी के कार्यकर्त्ता रहे।

चौधरी तारावन्दजी पुलिस अधीक्षक–आटों मे पहले एम पी थे। इनको हमेशा जो कार्य सौपा जाता था, वह जान जोखम का होता था। अत मे ये डाकुओ के साथ मुठभेड मे ही मारे गए। मृत्यु सदिग्ध अवस्था मे हुई।

धर्मवीर चौधरी–ताराचन्दजी के सुपुत्र बहादुर आदमी का लडका बेटा। भारतीय सेवा के अफसर हैं कलेक्टर थे। पर अब जयपुर मे किसी कार्यालय के हैड हैं।

इब्राहीमजी–अवकाश प्राप्त तहसीलदार गगाशहर रोड बीकानेर

श्रीगाबिन्दलाल व्यास–आकर्षक व्यक्तित्व के धनी प्रगतिशील विचारक, लेखक शिक्षा विद्, मूक सेवक, विद्यालय निरीक्षक पद से राजकीय सेवा से अवकाश।



विश्व शाति का रक्षक अटम बम्ब कहा और कब जन्मा

जब से युद्ध होने लगे, तभी स शांति की बातें होने लगी। पर सफलता नहीं मिली। विरोधी को हरा कर जीतने की इच्छा इतनी प्रबल होती है कि उसे न्याया नहीं जा सकता। सेना और सनिक की मनोवृति युद्ध करन के लिए इतनी जोरो स तैयार करनी जाती है कि बस युद्ध हो तो ही जीवन सफल है। सिपाहियो का और अफसरों क प्रामोशन होते हैं।

परन्तु हथियारों के हथियार अटम बम्ब का जन्म अमरीका म यू एस ए म ही गया। 16 जुलाई 1945 की बात है। पांच बजे कर 29 मिनट और 45 सकेंड पर इस महा विभूति का जन्म हुआ 5 अगस्त 1945 म इसने अपना कर्तव्य दिखाया। जापान क नगरों हिरोशिमा और नागासाकी पर ये बम्ब डाल दिए गए। यहा कुछ भी नहीं बचा। जापान ने हाथ जोड दिए। वर्षों का काम एक

मिनट मे हो गया। जर्मनी, और इटली धुरी राष्ट्र कहलाते थे। जमीन धुरी पर घूमती है। विश्व समाज उस धुरी पर घूमने लगा जो धुरी राष्ट्रों ने निर्मित की। परन्तु अटम बम्ब ने धुरी तोड़ दिया।

अटम बम्ब को गिराने का समय और दिनांक सोच समझ कर रखा गया। उस दिन और उस समय अमरीका, ब्रिटेन, फ्रांस और सोवियत संघ की मीटिंग चल रही थी। मीटिंग में वे स्टलिन के चेहरे, व्यवहार, बर्ताव से वे जानना चाहते थे वह उदास हुआ कि नहीं। स्टेलिन के चेहरे पर कोई नया भाव नहीं देखा गया। स्टेलिन के साथी देख जान गए कि यथा नाम तथा गुण स्टेलिन वास्तव में स्टील था।

घर आकर स्टेलिन ने अपने वैज्ञानिकों को आदेश दिया कि एक महीने के भीतर अटम बम्ब बन जाना चाहिए। आदेश का पालन हुआ और लगभग एक महीने में सोवियत संघ का बम्ब तयार हो गया। आज यह विश्व पंचायत के पांचों सदस्यों के पास है। सुरक्षा परिषद के पांचों सदस्यों के पास है। दूसरे मतभेद होते हुए भी इस बात में पांचों पंच सहमत हैं कि बम्ब का भेद खोला न जाए।

1 अमरीका ने 16 जुलाई 1943 में बनाया।
2 सोवियत संघ ने 29 अगस्त 1945 में बनाया।
3 ब्रिटेन ने 2 अक्टूबर 1952 में बनाया।
4 फ्रांस ने 13 अक्टूबर 1960 में बनाया।
5 चीन ने 16 अक्टूबर 1964 में बनाया।

ये पांचों पंच सुरक्षा परिषद के सदस्य हैं।

सेक्यूलरवाद

सेक्यूलरवाद की विचार धारा एक मुस्लिम देश में चालू हुई।

टर्की के प्रशासक कमाल पाशा ने 1923 में इस विचार को अपने देश में चालू किया। इसके बाद मिस्र यानी इजीपट ने इस विचार को अपनाया। ये दोनों ही मुस्लिम देश हैं। मिस्र के प्रशासक नासिर ने इसे 1984 में अपने देश में प्रचलित किया।

असीम अंतरिक्ष में ऑक्सीजन नाम की गैस केवल धरती पर ही है। दूसरी जगह कहीं नहीं है। और समझने लायक बात यह है कि रामजी ने इस हवा को हुक्म दे रखा है कि यह हवा सात किलोमीटर से अधिक ऊंचाई पर नहीं जायेगी। इस आदेश का कारण यह है कि अधिक ऊंचाई पर जाने के बाद यह हवा फिर इस धरती पर नहीं आएगी।

तन ढकने का रिवाज शुरू हुआ 4500 ई. पूर्व में।

प्रकृति और समाज को समझने की विद्या चालू हुई 1859 में डारविन इस विद्या के खोज करता थे।

स्टेलिन को धोखा देकर हिटलर ने सोवियत संघ पर हमला कर दिया। विश्व विजय की अभिलाषा रखने वाले हिटलर ने अपनी प्रेमिका के साथ बर्लिन के रसोईघर में आत्महत्या की।



बुढापा

डाक्टर जे डी पाठक बुढापे के विषय मे लिखते हैं, "यह समय ऐसा है जब हमारी सारी कोशिकायें और टिस्सू बूढे हो जाते हैं।" दिमाग को ओक्सीजन भरा रक्त नही मिलता है। इसलिये हमारी स्मरण शक्ति, हमारा बर्ताव, व्यवहार और हमारी बुद्धि असफल हो जाती है। ओक्सीजन भरा रक्त न मिलने से ये तीन अ ग बेकार हो जाते हैं स्मरण शक्ति, व्यवहार और बुद्धि सब अ ग, प्रत्यग, शिथिल हो जाते हैं। पाचन शक्ति घट जाती है। शरीर का तापक्रम घट जाता है। सक्षेप मे कहना चाहिए कि मनुष्य का जीवन स्तर गिर जाता है।

तो क्या कोई ऐसी व्यवस्था, प्रक्रिया है जिससे इस उतरती प्रक्रिया को कुछ समय के लिए रोका जा सके ? हां, है। सब जानते हैं पर इस प्रक्रिया का सहारा कोई कोई ही लेते हैं। यह क्या प्रक्रिया है ? वह है कसरत, व्यायाम है, और साथ साथ है हवा AIR हवा मे आक्सीजन की मात्रा पूरी हो। यह पूरी प्रक्रिया तो

किसी गुरू से ही सीखी जा सकती है। पर मोटे रूप से सभी जानते हैं कि हवा साफ हो। साफ हवा आजकल कहाँ मिलती है यह भी गुरू से ही सीखो। पर यह याद रखो की बात है कि यह हवा उन्हें नहीं मिलती जो प्रात सांय पुरानी आदत से, प्रक्रिया के अनुसार घूमने निकल जाते हैं।

डोक्टर जे डी पाठक 1973 बोम्बे हास्पीटल के मेडिकल रिसर्च केन्द्र के डाइरेक्टर हैं। यह केन्द्र वृद्धावस्था के विषय में खोज कर रहा है। व्यायाम करने से ये सारी इन्द्रियां सक्रिय हो हो जाती हैं।

सोना

आदिम मनुष्य को भी सोना प्यारा था। ईसा पूर्व की पन्द्रहवीं सदी में मिश्र देश में सोने के बदले में अन्य चीजें लेते थे।

ससार के 166 राज्यों के 36 हजार टन सोना है। सरकारी खजानें में है। गहनें आदि आभूषण अलग है। अनुमान है कि गहने आदि में 21 हजार टन सोना लगा है।

स्वीजर लैंड

ससार में 166 देश हैं और एक स्वीजर लैण्ड है। यह निराला यों है कि वह राष्ट्र सघ का सदस्य नहीं है। वह न राव का है न रंक का है। उसने कभी युद्ध नहीं किया। बड़े नेता बड़े सरकारी अफसर, बड़े धनी सेठ-श्रेष्ठ अपना धन स्वीजर लैण्ड में रखते हैं। स्वीजर लैण्ड सोने से पीला है।

यौरप म एक दश है स्वीजर लैण्ड। पहाड़ो पर है। उस पर कभी विदेशी आक्रमण नही हुआ उस पर सब देश भरोसा करते हैं। सब कुछ गुप्त रखा जाता है। बादशाहो, नताओ का देश निकाला हो जाता है। ऐसे धनी लोग स्वीजर लैंड म जमा धन पर यानी सोने पर जीते हैं।

याद रखने की बात है कि सोवियत सघ का सोना स्वीजर लण्ड म जमा रहा है। अब सोवियत सघ खण्डित हो रहा है। विश्व जानने को इच्छुक है कि सोना किसके पास जमा है।

अन्य चीजो की तरह सोने की कीमत भी मांग और पूर्ति से निश्चित होती है।

भारतीय मुसलमान

सडक पर चलने मुसलमान को देखकर आप बता देंगे कि यह मुसलमान है। बहुत से मुसलमान ऐसे भी हैं जिन्हे देखकर आप नही बता सकते कि यह हिन्दु है या मुसलमान है। दोनों म क्या अन्तर है? यह अन्तर क्या मुसलमान पने में कभी दिखता है? क्या भारतीय पन मे कभी दिखाता? सडक चलते हिन्दुओं को आप बता सकते हो कि यह हिन्दु है। क्या पहचान है गले मे जनऊ माथे पर टीका धोती की एक लाग खुली, सिर पर लम्बी चोटी होगी। यह सब चीजें न होने पर आप किस तरह पहचानेंगे कि हिन्दु है या मुसलमान।



छठा महाद्वीप इंडोनेशिया

एशिया, अफ्रिका, दो अमरीका, आस्ट्रेलिया और इंडोनेशिया ये छ महाद्वीप हैं। इंडोनेशिया भी एक महाद्वीप यह बात बहुत कम लोग जानते हैं। दुनिया की पाच अरब की जनसख्या मे इंडोनेशिया की बीस करोड की जन सख्या है। पांचों महाद्वीपों से दूसरा हिन्द महासागर के दक्षिण मे यह छठा महाद्वीप स्थित है। जनसख्या के अनुसार यह पाचवां सबसे बड़ा भूखण्ड है भूभाग है। मुख्य निर्यात तेल और गैस रहे हैं, पर अब यह खुद ही औद्योगिक देश बन गया है। इस छठे महाद्वीप मे तेरह हजार द्वीप हैं। यह द्वीपों का महाद्वीप है।

कोलम्बस ने 1498 मे अमरीका ढूंढी
डारविन ने 1859 मे विद्याय ढूंढी
भारतीय उपमहाद्वीप की स्थापना और भारत मे
मान विज्ञान की स्थापना हुई 1757 मे

जिस युद्ध से यह निर्णय निकला वह था पलासी युद्ध
भारत की राजधानी कलकत्ता रही 1911 तक
दिल्ली भारत की राजधानी बनी 1911 मे
मार्क्स का समय था 1818 से 1883
अ गल्स का समय 1820 से 1895
मार्क्स का जन्म 5 मई 1818
अ गल्स जन्म 28 नवम्बर 1820, मृत्यु 5 अगस्त 1895
मार्क्स 5 मई 1818 से 14 मार्च 1883
अंतिम लड़ाई जपान से हुई 1 सितम्बर 1945 मे

जापानी सेना को सोवियत सेना ने मिस्सूरी नामक जहाज पर हस्ताक्षर हुए थे। सोवियत और जापान के बीच संधि हुई।

जाट स्कूल की स्थापना

जाट अ ग्रो संस्कृत मिडिल स्कूल की स्थापना 9 अगस्त 1917 म हुई। संस्थापक का नाम था चौधरी बहादुरसिंहजी भोमिया। वे कुछ दिन बीकानेर की पदन सना मे रहे थे। ठाकुर शाही से मेल मिलाप यथोचित न होने क कारण उन्होने जाटो को ऊचा उठाने का संकल्प किया जाट स्कूल की स्थापना की।

स्कूल टूटन की स्थिति मे हो गया तो सनातनों ने स्वामी केशवानन्द महाराज को 1932 मे आमन्त्रित किया। स्वामीजी ने इस काम को सफलता से संभाला।

स्वामीजी का अन्तकाल 12 सितम्बर 1973 म हुआ सर छाजूरामजी, सर छोटूरामजी आदि ने इसे सब तरह की सहायता दी। जाट शिक्षा के क्षेत्र मे यह स्कूल पहली संस्था थी।

नोट—चौधरी बहादुरसिंहजी का अ तकाल 1 जून 1924 को हुआ

1757 मे आधुनिकता की स्थापना

पराधीनता से सुख-समृद्धि और राष्ट्रीयता मिली।

1 भारत के इतिहास म पहलीबार भारत निर्माण की नींव पड़ी। भारत की राजधानी कलकत्ता बना। 1911 तक कलकत्ता ही भारत की राजधानी रहा। 1911 मे दिल्ली को भारत की राजधानी बनाया गया।

2 भारत के इतिहास म पहली बार एक भाषा की स्थापना हुई जिसने भारत को एक राष्ट्र के रूप मे बनने मे एक नींव का काम किया। इससे पहले भारत था ही नही। मुगल भी इतना बड़ा भारत नही बना पाए थे। इससे पहले अशोक का साम्राज्य भी आज के भारत के बराबर नहीं था)

3 आधुनिक विद्याओं का आरम्भ ही यही से हुआ था फिजिक्स, कैमीस्ट्री, बायोलोजी, इंजनियरिंग, मडिक्स इतिहास भूगोल आदि की पढ़ाई यहीं से शुरू हुई।

4 भारत को पहली एक राष्ट्र बनाने आधुनिक विधायें चालू करने में अंग्रेजी राज की देन है।

5 अंग्रेजी राज एक बहुत बड़ा वरदान रहा।

1 लोहे को पिघालने का कारखाना 1815 मे मद्रास मे खुला।

2 रुई को कातने का कारखाना 1818 में कलकत्ते मे खुला।

3 बिहार के रानीगंज में कोयले की खान 1820 में खोदी गई।

4 1823 में कोफी का पौधा उगाया गया।

5 1854 में जूट के कारखाने व सन के कारखाने बने।

6 1900 में रबड़ के पौधे उगाए जाने लगे।

7 सीमेंट का कारखाना मद्रास म 1904 में खोला गया।

जो आज भी चल रहे हैं।

1 बाम्बे स्पिनिंग और विविंग 1854

2 बंगाल आईरन वर्क्स 1854

3 रैली पेपर मिल्स 1870

4 टाटा आइरन एण्ड स्टील 1907

5 1951 से पंचवर्षीय योजनायें बनने लगी

जैसे बंगाल की खाडी से मानसून हवायें उठती हैं और सारे उत्तरी भारत को हरा भरा और सुखी समृद्ध बनाती हैं वसे बंगाल की खाडी से 1757 में आधुनिक विधायें और विश्व धारायें उठी जिन्होंने भारत को आधुनिक ज्ञान-विज्ञान का केन्द्र बनाया।

भारत में रेल 1853 में बम्बई से एक छोटे से कस्बे तक चली भारत में पांच करोड़ भेडें हैं। 1990 में पाच करोड़ किलोग्राम ऊन का उत्पादन हुआ। मांग साढे पांच करोड़ किलोग्राम की है।



इडिया अर्थात् भारत

INDIA that is BHARAT

इन शब्दों की उत्पत्ति बहुत ही कम लोग जानते हैं। हमारा संविधान इन्हीं शब्दों से प्रारम्भ होता है। तीन वर्ष के विवाद के बाद भारत शब्द ढूंढा गया और अपनाया गया। भारत कौन था, क्या था, कब था, यह तो मैं भी भूल गया। पर इतना याद है कि तीन वर्ष के विवाद के बाद ये शब्द अपनाये गये। 'भारत' शब्द गढा गया 1950 मे। 'इंडिया' शब्द गढा गया 1857 मे।

वर्तमान भारत भूमि, हमारी मातृ भूमि भारत का जन्म हुआ 1757 मे। जन्म स्थली है कलकत्ता। कलकत्ता एक छोटा सा गाव था। कहना चाहिए एक छोटी सी ढाणी थी, एक छोटी सी बस्ती थी। 1757 से 1911 तक यही बस्ती भारत की राजधानी रही। इससे पहले दिल्ली एक छोटा सा गाव था।

आप अचम्भा मत करना। 1757 मे अंग्रेजों की विजय से वर्तमान भारत भूमि का निर्माण शुरू हुआ। इससे पहले न भारत था न इंडिया था और न ही कोई दूसरा नाम था जिससे इस भूमि का बोध होता है। अंग्रेजी राज्य भारत के लिए एक बहुत बडा वरदान रहा।

1 पहली बार भूमि बनी।

2 पहली बार सैकडो भाषाओ की जगह देश की एक भाषा बनी।

3 पहली बार देश मे शांति कायम हुई।

4 पहली बार शेर–बकरी एक घाट पर पानी पीने लगे।

5 पहली बार आधुनिक विद्यायें चालू हुई। इतिहास, भूगोल, गणित, रसायन शास्त्र, भौतिक शास्त्र, जीव विज्ञान वनस्पति विज्ञान, इंजिनियरिंग, मेडिकल आदि सब विद्यायें 1757 से चालू हुई।

6 देश मे कल कारखाने लगे।

7 राजस्थान के सेठ मारवाड़, पूर्व मे बंगाल, बिहार आसाम मे जाकर व्यापार करने लगे। राजस्थान के सेठ लोग, श्रेष्ठ लोग खडे हुए उदय हुआ। कलकत्ते से यानी बंगाल की खाडी से, मानसून हवायें उठती हैं। सारे उत्तरी भारत को हरा–भरा बनाती हैं। कलकत्ते से आधुनिक विद्यायें उठी शांति और प्रशासन उठा, और हमारा देश एकता के सूत्र मे बंधकर समृद्धि शाली बना, धन धान्य से परिपूर्ण हुआ। अंग्रेजो ने जाटों अहीरों, गूजरो आदि पिछडी जातियो को सेना मे भरती किया जाट आदि पहली बार सैनिक जाति बने।

इस प्रकार अंग्रेज विजय ही भारत की विजय है। अंग्रेज विजय से ही वर्तमान इंडिया बना है। याद रखो सम्राट अशोक का

राज्य बिहार तक ही सीमित था। मुगल भी दक्षिण मे नही पहुचे थे।

1757 मे अ ग्रेजो की जीत हिन्दुओं की जीत थी। हमारे देश की जीत थी। टूटी, फूटी, बिखरी धरती को उदार अ ग्रेजों ने एकता के वातावरण में खडा किया।

मत भूलो 1757 म अ ग्रेजों न कलकत्ता लिया। 1857 में उन्होने दिल्ली ली। इतिहास में पहली बार 1857 में इंडिया बना भारत नाम रखा गया 1950 में। इ डिया नाम रखा 1857 में।

—

श्रेष्ठ व्यक्तियो का सक्षिप्त परिचय

श्री पी आर जतकर—पशु चिकित्सा एव पशु विज्ञान महाविद्यालय के डीन सज्जनता की प्रतिमूर्ति आकर्षक व्यक्तित्व कई वैज्ञानिक पुस्तको के लेखक। सफल प्रशासक एव आदर्श शिक्षक महा मानव।

श्री जुगल किशोर जोशी—अखिल भारतीय स्टूडेंट फेडरेशन के पूर्व जिला सचिव एव अखिल भारतीय प्राथमिक शिक्षक सघ के प्रान्तीय अध्यक्ष, शिक्षक समुदाय की सेवा मे तत्पर रहने वाले।

श्री सौभाग्यमल जैन (जैसलमेर)—गांधीवादी विचारो के सज्जन पुरुष। रा उ माध्यमिक विद्यालय के प्राचार्य पद से सेवा निवृत लेखक एव शिक्षाविद आजकल गाधी बाल विद्यालय का सचालन करते हुए राष्ट्र निर्माण मे लगे हैं, सरल स्वभाव आकर्षक व्यक्तित्व के धनी हैं।



उत्तरी भारत के लोग

उत्तरी भारत के हिंदु पश्चिम की तरफ से भारत मे आये। मूल निवासी नही है। पश्चिम की तरफ से आने वालो का मूंह पूव मे होगा, पीठ पश्चिम में होगी। दाहिना हाथ दक्षिण मे होगा। बाया हाथ उत्तर में होगा। उत्तर का अर्थ है ऊपर। उत्तर की भूमि ऊंची है यानी ऊपर है, हिमालय ऊपर है। हिंदु नाम इसलिए पडा कि ये सिंधु की तरफ से आये। सिंधु स हिंदु हुआ। यह हिंदु नाम मूल निवासियो ने रखा। अपने आपको वे लोग आर्य कहते थे क्योंकि वे मूल निवासियो से हर बात मे श्रेष्ठ थे–रंग मे, रूप में ऊंचाई मे, विद्या मे, जीवन प्रणाली मे सब प्रकार से श्रेष्ठ थे।

दक्षिण नाम आर्यों ने रखा क्योंकि यह उनके दाहिने हाथ की तरफ था। पश्चिम से आने वाले का दाहिना हाथ दक्षिण की तरफ होगा इसीलिए दक्षिणी भारत नाम पडा।

ये लोग कब आए, यह पता नही। कोरे अनुमान अन्दाजे हैं। उत्तरी पश्चिमी सीमा से आए, इरान से आए। यों भी कहते हैं मध्य एशिया से आये जहां अफगानिस्तान है। दोनो कथनो मे अन्तर भी नही है।

आर्यों ने जीवन के सभी विभागों के लिए मन्त्र बना लिए थे। वो मन्त्र ही हिंदुओं के सामाजिक जीवन के आज भी आधार हैं।

सेक्यूलरी, समाजवादी जीवन अभी दूर है।



जातिवाद ETHNICITY

1926 म मैंन अध्ययन और चिन्तन दोनों शुरू किये। मेरी धारणा थी कि जातीयता और जातिवाद ज दी ही मिट जायेंगे। मेरा चिंतन दो प्रचारो पर आधारित था-विद्या प्रचार और साम्य-वाद का प्रचार। विद्या प्रचार स जानकारी बढेगी, चिंतन बढेगा। सच्चाई और स्थायी क्या है, यह जानकारी हो जाएगी। प्रथाएँ और कुप्रथाए मिट जाएगी। पर ऐसा हुआ नहीं। सकीणताएं मनुष्य को सुख सुविधाए देती हैं। ममता देती है। एक सुनिश्चित सीमा प्रदान करती है। सीमाए अपनापन देती हैं सकीण जानकारी ही पूरी जानकारी ह सबकी सीमाये पहुच पैदा करती हैं मिलन की मात्रा बढाती हैं। इसीलिए जातिया रहगी राष्ट्रीयता रहेगी, प्रशासनिक सीमाय रहेगी, सम्मेलनों की सुगमता रहगी। साम्यवादी व्यवस्था इसीलिए रूक गई। मानव जाति के भेद सकीणता देते हैं और सकीणता से ममता बनती है।

याद रखो सकीणता से, सीमाबधी स ममता बनती है।



मम्मी पापा वाद-विवाद-संवाद

राजस्थान शिक्षा विभाग की पत्रिका "शिविरा" दिसम्बर 1991 के पृष्ठ 287 पर प्रकाशित लेख की सच्ची प्रतिलिपि

जब 'मम्मी' नाचेगी

मेरे पड़ौस मे एक मान्यता प्राप्त विद्यालय चलता है। गीत–मालो सिखाते हुए छोट बालकों को एक गीत प्राय सिखाते गवाते हैं (1) लाल टमाटर खाएगे। (2) स्कूल पढने जाएगे। (3) सबको मिठाई खिलाएगे। यहां तक तो कोई आपत्तिजनक बात नहीं है किन्तु अगली दो पंक्तियां–(4) मम्मी को नचाएगे। (5) पापा को हंसाएगे। –इन बच्चों को जिस 'संस्कृति' (विकृति) की ओर सिगनल दिखाते हैं वह चिंतनीय है। बच्चे 'मम्मी' को नचाकर 'पापा' को हंसाने के उद्देश्य से जिस फिल्म का निर्माण करेंगे उसे धाराशाला राष्ट्र देखकर धन्य हो सकेगा।

इसमे पहली विकृति तो यही है कि संसार की अनेक भाषाओं जननी संस्कृत और उसकी पुत्रि–भाषाओं का अस्तित्व और प्रयोग और उनमे लक्ष लक्ष शब्द संपदा में मम्मी और पापा के लिए कोई शब्द काम में नहीं लाए जाते मातृ माता, जननी, पितृ–पिता, जनक

आदि वरन काम मे लाए जाते हैं ऐसे विदेशी शब्द जो ध्वनि, अर्थ की दृष्टि से गर्हित हैं। बहुप्रचलित 'द एडवान्स्ड लर्नर्स डिक्शनरी आव इंगलिश' में 'मम्मी' शब्द का अर्थ अंकित है–'बॉडी आव ए ह्यूमन बीग और एनीमल एम्बाल्ड फार बरियल, ड्राइड अप बाडी प्रिजर्व्ड फ्राम डिके, एज इन ईजिप्ट।' रहा सवाल 'डडी' का जो कर्णमधुर नहीं साभिप्राय नहीं, कर्कश और संक्षिप्त होते रूप 'डड' में 'मृत' की ध्वनि आती है। 'पापा' को पापी कहने का साहस कौन करे ?

उस भारतीय जननी, माता, अम्बा का वह रूप जो अपने पुत्र को जन्म से ही अपनी लोरी से उसे स्वेच्छया प्रवृत्ति या निवृत्ति मार्ग की ओर उन्मुख कर देने की क्षमता रखती थी।

प्रवृत्ति–धन्योऽसि रे ! यो वसुधाम शत्रु रे र्कश्चिर पालयितासि पुत्र। तत्पालनादस्तु सुखोपभोगो धर्मात्फलं प्राप्स्यसि चामरत्वम्

निवृत्ति–शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि निरंजनोऽसि संसारमाया परिवर्जितोऽसि। संसार स्वप्नं त्यजमोहनिद्रा हे तात ! त्वं रोदिषि कस्य हेतो।

कितना अवमूल्यित हो गया आज कि वह 'नचायी जाएगी' और 'पापा' को उसके नाच से हंसाया जाएगा, धन्योऽसि रे !

महाकवि और भक्त सूरदास का इस बात का सख्त अफसोस था-अब हौं नाच्यौ बहुत गोपाल, किन्तु कहने वाले कहते हैं कि नृत्य एक ललित कला है किन्तु समय और परिस्थिति की भिन्नता देखी जानी चाहिए।

जब बच्चे पापा को हंसाने के लिए अपनी मम्मी को नचाए गे तो निश्चय ही एक विशेष युग होगा जिसकी झंकार स्कूलों से शुरू हो रही है। एक बार सोचें तो। भारत को भारत रहने दें।


—अमरसिंह पाण्डेय

बीकानेर के परिचित व्यक्ति

स्व० श्री रामरतन कोचर—बीकानेर राज्य प्रजा परिषद के उत्तरदाई शासन स्थापना आन्दोलन में योग दिया। बीकानेर मे कांग्रेस संगठन को उन्होंने पुनर्गठित किया और उसका काय गांव-गांव फैलाया। वे जिला कांग्रेस के अध्यक्ष बने, राजस्थान प्रदेश कांग्रेस व उसकी कार्यकारिणी तथा कांग्रेस महासमिति के सदस्य रहे। राजस्थान के राजनतिक फैसलों मे उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। मुख्यमन्त्रियों, अनेक मन्त्रियों, सांसदों व विधायकों के उत्थान मे उनका सहयोग रहा ह। पंचो सरपंचों से उनका सीधा सम्पर्क रहा। बीकानेर जिले का शायद ही कोई गांव ऐसा होगा जहां वे नहीं पहुंचे हो।

बीकानेर डिवीजन के राजनतिक निर्णयों मे उनका निर्णायक स्थान रहा। राजस्थान के महत्वपूर्ण चुनावों मे उनके सक्रिय सहयोग के कारण उनका राजस्थान के सभी भागों के नेताओं व कार्यकर्त्ताओं से व्यक्तिगत सम्पर्क बना। सन 1956 मे वे लूणकरणसर

क्षेत्र से विधान सभा के लिए चुने गए।

श्री हरिश्चन्द्र व्यास—इमानदार एवं चरित्रवान अनेकानेक पुस्तकों के लेखक। लेखन के कार्य पर सरकारी और गैर सरकारी पुरस्कार प्राप्त। अपनी मेहनत एवं लगन से बराबर आगे बढ़ते हुए समाज सेवा में लगे हैं। मित्रों में लोकप्रिय हैं। सही अर्थों में कार्यशील मानव स्वरूप हैं।

श्री कानसिंह पवार—प्रगतिशील विचारों के सरल इंसान। सुयोग्य प्रशासक एवं अध्यापक। राजकीय सीनियर हायर सैकण्डरी स्कूल नापासर के प्रिंसिपल। मित्रों में कालेज जीवन से ही लोकप्रिय। सादा जीवन, कर्मशील व्यक्तित्व के धनी।

आज्ञाराम सुथार— विकलांग समिति के अध्यक्ष विकलांगों की सेवा में हर वक्त तैयार। सेवाभावी स्वभाव, प्रगतिशील विचारों से ओत पोत।

श्री रूपचन्द रंगा—मिलनसार व्यक्तित्व के धनी कई समाज सेवी संस्थाओं के पदाधिकारी, राज नेताओं के सहयोगी सेवा भावी स्वभाव मित्रों में प्रिय। शब्दवाणी के गायक।

मोहम्मद हुसन—शान्त एवं गम्भीर स्वभाव के धनी। अच्छे मित्र पुस्तक मुद्रण में मददगार।

मोहम्मद तौसिक—प्रगतिशील विचार के अच्छे प्रिंटस।

सुरेश सेवग अच्छे कम्पोजिटर सरल स्वभाव आदर्श व्यक्तित्व

लेखक की अन्य रचनाएँ

(१) जगलपुरी का हैडमास्टर
(२) जगलपुरी का हैडमास्टर (शिक्षा प्रशासन)
(३) सक्यूलर वाद
(४) राज काज की बातें
(५) राजस्थान मे पचायत राज
(६) राजस्थान के पेड पौधे पशु पक्षी
(७) राजस्थान का पशु धन गावो की अथ व्यवस्था
(८) राज काज की बातें
(९) लादे वाला
(१०) जगलपुर का हैडमास्टर, हिन्दी भी पढ़ाता था।